

## अपना बैलेन्स सीट ऐसा क्लीयर करो जो धर्मराज भी सलाम करके वतन में भेजे (दादी जी का क्लास)

यह संगमयुग पुरुषोत्तम युग है इसे चढ़ती कला का, वरदानी युग भी कहते हैं। इस युग में आप सबको समर्पित होने का भाग्य मिला है। यह भाग्य भी कोटो में कोई, कोई में भी कोई को मिलता है। तो हमें आप समर्पित पाण्डवों को देख बहुत-बहुत खुशी हो रही है। हमारे दिल की आश है कि आप सब ऐसी भट्टी करो जो बाबा की आशाएँ पूरी हों। हम सबकी एक आश है कि हम बाबा को प्रत्यक्ष करें, यह आश अभी तक पूरी नहीं हो रही है, क्यों? हमारी आश है कि हमारे यज्ञ के जो सभी पाण्डव हैं, वह ऐसा करके दिखावें जो हरेक कहे कि मेरी स्थिति बाबा के ज्ञान और योग के अनुसार निर्विघ्न है अर्थात् हम बाबा आपके पक्के 'मायाजीत बच्चे' हैं। माया कमजोर करती है वह तो बहुत सुना है। लेकिन अभी हम मायाजीत हैं, ऐसा ठप्पा सभी का लगना चाहिए। ऐसी यहाँ भट्टी की प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष प्रमाण बाबा को मिलना चाहिए। पाण्डव माना ही जिन्होंने प्रीत बुद्धि का प्रत्यक्षफल दिखाया। भल उनके सामने कितनी भी परीक्षाएँ आई, जंगल में भी जाना पडा तो भी विजयी बनकर दिखाया। ऐसे आप पाण्डव इस पाँच दिन के अन्दर ऐसी एकता की नींव लगाकर जाओ जो आप यहाँ से जहाँ भी जाओ तो सब देखकर कहें कि यह जादू की नगरी से पूरा ही बदलकर आये हैं। जो कुछ भी छोटी-मोटी, तेरी-मेरी बातें हों ....सब खत्म करके हम बाबा के सच्चे बच्चे, सच्ची गोदी में बैठकर चलेंगे - ऐसी यहाँ भट्टी करके जाना। योग का अभ्यास तो करना ही हैं, साथ-साथ इस भट्टी में कुछ नवीनता करके जानी है।

जैसे बाबा कहते हैं कि सर्वश त्यागी बनो, वैरागी बनो। समर्पित का अर्थ ही है सर्वश त्यागी। समर्पित माना ही पुरानी दुनिया से वैरागी और पक्के सन्यासी, पक्के त्यागी, पक्के तपस्वी और सच्चे-सच्चे माला के मणके बनकर जायें। हम 'विजयी माला' के विजयी रत्न हैं, विजयी रत्न थे इसलिए अभी 'विजयी रत्न' बनके ही जाना है क्योंकि बार-बार दिल में यह जरूर आता कि अब घर जाना है या आप समझते हैं हम तो अभी युवा हैं, हमें तो अभी इस दुनिया में रहना है? युवा, बूढ़े सब समझते हैं हमें घर जाना है। कभी-कभी युवा समझते हैं हम तो अभी युवा हैं लेकिन बाबा कहते आप सब वानप्रस्थी हो, वानप्रस्थी माना युवा नहीं। वानप्रस्थियों की बुद्धि में रहता है कि कभी भी पंछी उड़ जाए, हम तैयार हैं।

तो हमारी आश है कि एक-एक पाण्डव ऐसा अपना बैलेन्स सीट क्लीयर करे -- जो धर्मराज भी फूलों से स्वागत करके, सलाम करके वतन में भेजे। सभी बाबा के ज्ञानी तू आत्मा बच्चे अपना बैलेन्स सीट ऐसा बनाओ जो धर्मराज दिल से खातिरी करे। यह नहीं कि देख तुमने यह गलती किया, यह तू भोग - तो यह सब यहाँ खत्म करके जाओ। क्या यह पॉसिबुल है? हमारा रिमार्क है कि अन्त में बाबा बाहें पसार कर कहे आओ बच्चे आओ, ऐसे गले लगाकर वतन में भेज दे, ऐसी स्थिति बनानी है। दिल कहे 100 प्रतिशत हमारा यह रिकार्ड हो। बाबा की श्रीमत अनुसार हमारा मन-वचन-कर्म हो। बाबा हमें सर्टीफिकेट दे कि यह संस्कारों से, संकल्पों से, दृष्टि, वृत्ति सभी से पास विद ऑनर है। ऐसी कमाल करो तब कहेंगे समर्पित। ऐसी कमाल नहीं किया तो समर्पित क्या हुआ!

\*\*\*\*\*

## संगमयुग पर एक-एक घड़ी सफल करके बुद्धि की स्वच्छ बनाओ दादी प्रकाशमणी जी

दिन और घड़ियां बीतती जा रही हैं और हमें पता है कि सारे कल्प में संगमयुग बहुत वैल्युबुल है। इस संगमयुग में भगवान ने कितनी अच्छी शिक्षायें दी हैं; सच नहीं बोलते हो तो झूठ तो नहीं बोलो, अच्छा नहीं कर सकते हो तो बुरा तो नहीं करो, देवता नहीं बन सकते तो इन्सान तो बनो। बाबा कहते हैं इन आंखों से जो देख रहे हो वो कुछ रहने वाला नहीं है, जो बुद्धि में, धारणा में होगा वो ही साथ चलेगा। भगवान ने इतनी अच्छी समझ दी है जो सारे कल्प में काम आने वाली है। इस समझ को यूज करके मायाजीत बनना है। क्या शूद्र लाइफ थी, अभी बाबा ने कितनी ऊंची लाइफ बना दी है। यह समझ दी है कि ये नहीं करना है और यह करना है। क्यों करना है क्योंकि यह श्रेष्ठ पूज्य बनने का अन्तिम जन्म है। अभी बोलने की घड़ियाँ पूरी हुई, दर्शनीय मूर्त बनना है जो सेकेण्ड में कोई भी प्रसन्न हो जाये। भावना अनुसार किसी को भी आपका साक्षात्कार हो जायेगा लेकिन कराता तो भगवान ही है।

जो आत्मा, परमात्मा का सारा ज्ञान इस जन्म में हप कर ले, हम कहेंगे उन जैसा तो कोई नहीं है। महावीर और हनुमान जैसा कोई नहीं, इतना हल्का जो कितनी भी पहाड़ जैसी सेवा आये तो सेकेण्ड में उठा ले। इतना करके भी निरहंकारी रहता है क्योंकि करके बाप के सामने आ जाता है। ऐसे सेवाधारी ही संगम पर यादगार छोड़ते हैं। भक्ति में दर्शन भी उनका करते हैं, जो याद की यात्रा में अच्छी तरह से बैठते हैं। संगमयुग की एक-एक घड़ी सफल करके बुद्धि को ऐसा स्वच्छ बनाना है, जो कुछ भी किचडा रह न जाये। ब्राह्मण हैं स्वच्छ पवित्र तभी गोल्डन एज में जायेंगे। स्वच्छ बनने में मेहनत है। जिसको स्वच्छता से प्यार है, वो सदा स्वच्छ रहने के आदती बन जाते हैं। जिसको मन साफ रखने का अक्ल है वो कभी चिड़चिडेपन में नहीं आयेगा। संगमयुग पर बुद्धि की स्वच्छता का बहुत आधार है। राजाई पानी है तो बुद्धि से और प्रजा पद पाना है तो भी बुद्धि से। अब बुद्धि में और कुछ नहीं है लेकिन रचता और रचना का ज्ञान है जो और कोई के पास नहीं है। बाबा ने हम सबको डिटेच रहना सिखाया है। जिसको ये अक्ल आ गया वो सेकेण्ड में पार हो जायेगा। यह बहुत अच्छी विधि है जो बात पूरी हुई वह और आगे न बढे। सुनने वा सोचने की कोई बात ही नहीं है क्योंकि समय कहाँ है। इसलिए बाबा कहते हैं यह सब जो कुछ देखते हो वो कुछ भी रहेगा नहीं। एक-एक दिन पास हो रहा है। कल क्या होने वाला है वो हम देखे लेंगे। जो हम सोचेंगे वो होगा ही नहीं क्योंकि होने वाला वही है जो फिट हुआ पडा है। जो कुछ होगा उसमें भी किसी का दोष नहीं है। किसका दोष सोच लिया तो मैंने फालतू सोच करके अपने पार्ट को खराब किया। ड्रामानुसार सब एक्यूरेट बना हुआ है।

हमें आर्डर मिला हुआ है, श्रीमत मिली हुई है। आर्डर, श्रीमत और डायरेक्शन। बाप का हमें आर्डर है कि टाइम थोडा है, तुम यहाँ से हिल नहीं सकते हो। बाप का हम बच्चों पर राइट हो कि बच्चे यह करना है, यह नहीं करना है। इसमें किसी का ज्यादा सोच नहीं चलता क्योंकि जिसको श्रीमत का पता है, उसमें ही कल्याण है। बहुत काल से अन्दर मन और बुद्धि ने मान लिया है कि इसमें ही कल्याण है तो और कोई बात सुनें ही नहीं। किसकी ताकत नहीं जो अपनी मत दे सके। सदा नशा रहे कि हमको सिखाने वाला कौन है। बाबा को इस मुख के लिए भी रिगार्ड है। शरीर में आत्मा है और तन बाबा को दिया है। कर्मन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाला वो है, जो उसके डायरेक्शन से कर रहा है। अगर अपनी इच्छा व ममता के वश कुछ किया तो अच्छा नहीं माना जायेगा। दूसरे के स्वभाव वश मेरा मूड खराब हो गया। स्वभाव उसका और मूड मेरी खराब हो गई माना बाप को भूल गये। इसलिए बाबा कहते हैं यह हमेशा ध्यान रखो कि यह अन्तिम जन्म की अन्तिम घड़िया है, मेरे से कराने वाला कौन है। मन भी सोचे कि मेरे मन को सिखाने वाला कौन है, बुद्धि को क्या सोचना है, वो सिखाने वाला कौन है। तो बुद्धि में जो समझ है और बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसी अनुसार सोचेंगे। जैसा देखा, सुना वैसा तो नहीं सोचेंगे, उसको अपनी शुभ भावना और शुभ कामना से ही रेस्पान्स करना है। बाबा का डायरेक्शन है कि जो देखो

वा सुनो उसको शुभ भावना और शुभ कामना से रसपान्स करो। ज्यादा नहीं सोचो क्योंकि सोच में अपना एड हो जाता है। शुभ भावना और शुभ कामना रखना - यह हमें डायरेक्शन है। तभी हम बुद्धि को उसी आर्डर पर चलाने से राज्य पद पायेंगे। उसके पहले बाबा कहते हैं तुम सम्पन्न रहो तो माया ऊपर नहीं आ सकेगी। माया मरने के बाद भी आक्सीजन पर है। कभी मोह वश उसको छुट्टी दे देते हैं। अन्दर से हो कि माया का मेरे पास कोई काम नहीं है। बाबा ने हमको इतना बिजी कर दिया है तो उसके लिए कोई बहाना नहीं है।

ज्ञान कहता है कि तुम बाप को याद करो, तुम मर्यादा पर चलो, तुम नियम अनुसार स्टडी करो, अपना समय बरबाद मत करो और अच्छे संग में रहकर समय सफला करो। स्वचिन्तन में रह बाप को याद करो तो मायाजीत बनेंगे। इससे माया सामने आ नहीं सकेगी, आयेगी तो वार नहीं कर सकेगी क्योंकि ईश्वर का संग हमको बचा देता है। इसमें अलबेलापन, सुस्ती और बहाना बहुत-बहुत खराब है। अनुभव करो जितनी याद है उतनी शक्ति है। जिस घडी और बातें अन्दर चली जाती है तो शक्ति तन, मन और धन से खत्म होती है। अपनी लाइफ में हम फालतू कर्म क्यों करें जो दूसरों के सामने आना पड़े। इसलिए बुद्धि को अच्छा प्यार से चलाने की सेवा करो तो समय सफल होगा। भगवान को यहाँ भोले भाले बच्चे चाहिए। बुद्धि में जो भरेंगे वो ही साथ जायेगा क्योंकि हम बुद्धि से पूज्य से पुजारी बन रहे हैं।

## निर्मल बनो, निर्माण बनो

बापदादा सभी बच्चों को विशेष श्रीमत दे रहे हैं - बच्चे बोल में निर्माण बनो। निर्माणता ही महानता है। झुकना नहीं है वास्तव में परमात्मा को भी अपने ऊपर झुकाना है। यही दुआयें प्राप्त करने का साधन है।

इस वर्ष को विशेष निर्माण, निर्मल वर्ष के रूप में मनाओ। मुख से ऐसे बोल बोलो जो सब कहें और भी हमको सुनाओ। मुख से हीरे मोती निकलें। अभिमान के बोल बोलकर किसी को भी दुःख नहीं दो।

अपने स्वभाव को निर्मल (शीतल शुद्ध) बना दो तो हर कार्य में सफलता मिलती रहेगी। अभी निर्मल स्वभाव के ऊपर विशेष अण्डरलाइन करो। कुछ भी हो जाए लेकिन अपना स्वभाव सदा निर्मल रहे। 'निर्मल स्वभाव' अर्थात् बिल्कुल शीतल, शुद्ध। शीतलता के कारण ही शीतला देवी का गायन है।

कोई भी बात जोश दिलाने वाली हो लेकिन आप निर्मल रहो। परिवर्तन शक्ति के आधार पर सेकण्ड में बिन्दी लगा दो, अन्दर हलचल न हो तब कहेंगे निर्मल और निर्माण। इसलिए बापदादा कहते हैं मोल्ड होने वाला ही रीयल गोल्ड है।

जिन बच्चों का स्वभाव निर्मल हैं। वह विचार देने लेने में सहज होंगे, किसी भी सेवा में विघ्न रूप नहीं बनेंगे। उन्हें यह संकल्प भी नहीं आयेगा कि मेरा विचार, मेरा प्लैन, मेरी सेवा इतनी अच्छी होते हुए भी मेरा क्यों नहीं माना गया... यह मेरापन आना भी अलाय मिक्स होना है।

यदि निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है तो सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि वाले होंगे। चलन और चेहरे से हर समय सरलता की झलक अनुभव होती रहेगी।

जो बच्चे सदा निर्मल और निर्माण स्वभाव वाले हैं उनके मन-बुद्धि में व्यर्थ की गति फास्ट नहीं होगी। वे निर्मल और निर्माण होने के कारण सभी को प्रसन्नचित्त की छाया में शीतलता देंगे। कैसा भी आग समान जलता हुआ, बहुत गरम दिमाग का हो लेकिन प्रसन्नचित्त के वायब्रेशन की छाया उसे शीतल बना देगी।

आप पूर्वज और पूज्य आत्माओं के यादगार में भी नयन सदा निर्मल दिखाते हैं। कभी भी अभिमान या अपमान के नयन नहीं दिखाते। कोई भी देवी वा देवता के नयन निर्मल वा रुहानी होंगे। तो जब कभी किसी के प्रति कोई ऐसा निगेटिव संकल्प आये तो याद रखो कि मैं कौन हूँ! मेरे जड़-चित्र भी रुहानी नैनधारी हैं तो मैं तो चैतन्य हूँ?

जो नम्रचित्त, निर्मल स्वभाव वाले हैं, उन्हें कभी भी स्व की सफलता का अभिमान नहीं होगा। वर्णन नहीं करेंगे, अपने गीत नहीं गायेंगे। दूसरे उनके गीत गायेंगे लेकिन वह स्वयं सदा बाप के गुण गायेंगे। इसलिए कोई कैसा भी हो आप दिल से स्नेह दो, शुभ भावना दो, रहम करो।

निर्माणचित्त आत्मायें कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनायेंगी। उनके चेहरे पर कभी कमजोरी का, कोमलता का चिन्ह नहीं होगा। इसलिए निर्माण बनो, कोमल नहीं। कोमल उसे कहते हैं जो पानी का फल हो। ऐसे नहीं पानी डालो और बह जाये वा मुरझा जाए।

निर्माण बनना ही स्वमान है और यही सर्व द्वारा मान प्राप्त करने का सहज साधन है। निर्माण बनना झुकना नहीं है लेकिन सर्व को अपनी विशेषता और प्यार में झुकाना है।

महानता की निशानी है निर्माणता। जितना निर्माण उतना सबके दिल में महान् स्वतः ही बनेंगे। बिना निर्माणता के सर्व के मास्टर सुखदाता बन नहीं सकते। निर्माणता निरहंकारी सहज बनाती है। निर्माणता का बीज महानता का फल स्वतः प्राप्त कराता है।

जैसे वृक्ष के लिये कहते हैं जितना भरपूर होगा उतना झुका हुआ होगा तो जैसे वृक्ष का झुकना सेवा करता है। ऐसे ही निर्माण आत्मायें सबको सुख देने की सेवा करेंगी। जहाँ भी जायेंगी, जो भी करेंगी वह सुखदायी होगा। जितना स्वमान उतना निर्माण। ऐसे नहीं -- हम तो ऊंच बन गये, दूसरे छोटे हैं या उनके प्रति घृणा भाव हो, यह नहीं होना चाहिए।

शुभ-भावना, शुभ-कामना का बीज ही है - निमित्त-भाव और निर्माण-भाव। हद का मान नहीं, लेकिन निर्माण। कभी भी सभ्यता को छोड़ करके सत्यता को सिद्ध नहीं करना। सभ्यता की निशानी है निर्माणता। यह निर्माणता निर्माण का कार्य सहज करती है। जब तक निर्माण नहीं बने तब तक निर्माण नहीं कर सकते।

हर आत्मा के प्रति कल्याण वा रहम की भावना का स्वभाव, हर एक को ऊंचा उठाने का स्वभाव, मधुरता का स्वभाव, निर्माणता का स्वभाव धारण करो। यह स्वभाव आपको सदा हल्का रखेगा। कोई भी बोझ अनुभव नहीं होगा।

जो निर्माण होते हैं उनमें रोब नहीं होता है, रूहानियत की झलक होती है। जैसे बाप कितना नम्रचित बनकर आते हैं, स्वयं को वल्ड सर्वेन्ट कहकर बच्चों को अपने से भी आगे रखते हैं, ऐसे फालो फादर। अगर जरा भी सेवा में रोब आता है तो वह सेवा समाप्त हो जाती है।

-----  
-----

## "सेवा में सफलता का आधार - निश्चय और अनुभव" दादी जी का क्लास

अनुभवों के आधार पर हर बात में सफलता समाई हुई है। पहली बात हम खुद से पूछें कि मेरा बाबा पर और सारी नॉलेज पर पूरा-पूरा पक्का निश्चय है? निश्चय बुद्धि विजयन्ति। अगर बाबा में पूरा निश्चय है तो बाप हमें जो नई-नई नॉलेज दे रहा है, जिसे कभी कहाँ सुना नहीं। जो आत्मा के 84 जन्मों की नॉलेज है, या परमात्मा ज्योति बिन्दु है, सर्वव्यापी नहीं है, यह नॉलेज है। चाहे ड्रामा 5000 वर्ष का है, यह कल्प-कल्प फिरता है, चाहे हमारी धारणायें जो हैं वह बिल्कुल नई हैं। तो खुद से पूछना है कि हर प्वाइन्ट में हर प्रकार से बाप और नॉलेज में मेरा फेथ है? या उसी निश्चय में कभी-कभी कोई-न-कोई संकल्प, जिसको संशय कहो, वह उठता है? या मुझे बाबा पर 100 परसेन्ट निश्चय है और उसी निश्चय से हर कदम में विजयी हैं क्योंकि सबसे पहले निश्चय है कि बाबा सत्य है, सत्य बाबा जो सुनाता है, वह सब सत्य है। तो अगर बाप में हमारा निश्चय है, तो हर सेकेण्ड, हर कदम में जो श्रीमत है, उसी श्रीमत पर चलते हैं? फल स्वरूप हर कदम के पीछे सफलता का अनुभव होता है? कदम-कदम में कमाई है। तो श्रीमत पर बरोबर ऐसा अनुभव रहता कि हर कदम आगे बढ़ते सहज ही विजयी बनते जा रहे हैं। तो यह भी हुई सफलता। तो सफलता का आधार, हमारा हर कदम श्रीमत पर हो। श्रीमत अनुभव कराती है कि हमारे हर कदम के पीछे पदम समाया हुआ है। इसलिए बाबा के इशारे अनुसार कदम-कदम पर सौभाग्यशाली अथवा पदमापदम भाग्यशाली हैं। हम श्रीमत में अपनी हद की मनमत न मिलावें, सदा श्रीमत को बुद्धि में धारण करें, तो सामने बाबा रहेगा।

तीसरा - सफलता का आधार है -- त्याग क्योंकि त्याग जिसके बुद्धि में रहता है, उसे त्याग के रिटर्न में 100 गुणा भाग्य मिलता है। त्याग के लिये बाबा का पहला-पहला डायरेक्शन है -- कि देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को त्याग अर्थात् भूल मामेकम् याद करो। तो त्याग में देह-अभिमान भी आता, सम्बन्ध भी आते, इच्छायें भी आती। तो जहाँ सब इच्छायें त्याग हो जाती वहाँ सफलता जरूर होती है। त्याग माना इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा का अर्थ ही है अज्ञान। इच्छायें 100 प्रकार की हैं, उन सब इच्छाओं का त्याग चाहिए। यह भी इच्छा है कि मेरे सेन्टर की सेवा बहुत अच्छी हो तो हम सबको बतायें वाह मेरा सेन्टर... यह भी इच्छा है। अपनी सेवाओं के लिए बहुत इच्छा करते और वही इच्छा रखकर सेवा करते। आप कहेंगे यह इच्छा थोड़ेही है, यह तो उमंग होता। लेकिन उमंग अलग चीज़ है, इच्छा अलग चीज़ है। यह बहुत सूक्ष्म है इसलिए मिक्स हो जाता है। इच्छा में अहम् पैदा होता। इच्छा में देह-अभिमान आता, मैं और मेरा आता। तो यह जो बाबा कहते यह सेवायें तुम्हारी नहीं हैं, यह तो बाबा करन-करावनहार कराता, वह भूल जाता। मैंने आज बहुत अच्छा भाषण किया, सबको बहुत अच्छा लगा, यह भी इच्छा है। यह भी जो सूक्ष्म आता कि हम इनसे भी आगे जाके दिखाऊं, इसमें भी आगे जाऊंगी, यह करूंगी, यह करूंगी, यह है गी, गी, गी... देह-अभिमान। जैसे बाबा कहते तुम भाषण करने बैठे तो बाबा को याद करो, बाबा आपेही बुलवायेगा। परन्तु मैं आज यह करूंगी, ऐसा ऐसा बोलूंगी... यह जो "मैं" "मैं" आती, वह है इच्छा। परन्तु बाबा याद किया, बाबा मेरे साथ है, मैं निमित्त हूँ...। निमित्त समझकर चलना यही सफलता का आधार है।

अगर इच्छा नहीं होगी तो सदैव अनुभव होगा कि बाबा की मेरे सिर पर बहुत ब्लैसिंग हैं। तो कोई इसमें बाबा की ब्लैसिंग समझकर चलते, कोई बाबा की ब्लैसिंग को नहीं मानते। परन्तु अगर लाइन क्लीयर है तो बाबा की एक के बदले 100 गुणा ब्लैसिंग मिलती। बाबा को हम मानते हैं, वह हमारा वरदाता है, वरदानों से हमें आगे उडाता है। तो हम वरदानी हैं, ऐसा खुद में निश्चय हो जाये। इच्छा वाले को रहता कि मेरा शो हो, इसने बहुत अच्छा किया, यह किया, वह किया... यह है इच्छा। परन्तु कहा जाता तुम निमित्त हो, इसलिए निष्कामी

बन सेवा करो। तो बाबा तुम्हें विशेष सफलता देगा। इच्छा वाला कभी ना उम्मीद हो जायेगा और कभी कोई सफलता मिली तो उम्मीद में आयेगा। तो उसका बैलेंस नहीं रहता। परन्तु बाबा का वरदान है "हे उम्मीदों के सितारे!" हे पदमापदम भाग्यशाली! सौभाग्यशाली बच्चे!.. यह सब हमारे लिए वरदान हैं।

तो सफलता के लिए पहले हम त्यागी बनें। फिर दूसरा हमारी पढाई है तपस्वी बनो। तो त्यागी फिर हो तपस्वी। तपस्या ही हमारे इस ज्ञान का आधार है क्योंकि हम योगी हैं, तपस्वी हैं। हम योगी और तपस्वियों के बीच जरा अंश-मात्र भी माया नहीं होनी चाहिए। कहते हैं कि तपस्वी जब तपस्या करते हैं तो असुर आ करके विघ्न डालते हैं। यहाँ फिर व्यर्थ संकल्प विकल्प तपस्या में बहुत सामना करते हैं। परन्तु अगर हम एक बाबा की याद में ऐसा लवलीन रहें जो व्यर्थ संकल्प बिल्कुल स्टॉप हो जाएं। व्यर्थ संकल्प जीत बनना ही हमारी तपस्या है, इससे हमारी संकल्प शक्ति बहुत-बहुत पॉवरफुल बनती है, फिर अशरीरी बनना सहज हो जाता है।

तो पहले है त्याग, फिर तपस्या और फिर आती है सेवा। लेकिन सेवा मेरी है या सेवा बेहद बाबा की है? मैं सेवा करती या बाबा जो श्रीमत देता, आज्ञा करता मैं उस अनुसार सेवा करती? "मैं पन" आता तो यह हुई हद की सेवा, परन्तु यह बाबा की सेवा है, हम निमित्त हैं तो वह है बेहद की सेवा। इसको कहा जाता है त्यागी, तपस्वी और सेवाधारी। दूसरा - बाबा कहते नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। तो चेक करें कि हम हर प्रकार से सूक्ष्म नष्टोमोहा हैं? नष्टोमोहा बनने का आधार है - बाबा को सामने देखो। हमें ऐसा बाप समान बनना है। तो हरेक खुद से पूछे कि हम कहाँ तक बाप समान बने हैं? हमारा पुरुषार्थ ही है, बाप समान सम्पन्न बनना। तो कहा जाता जो बाप समान बनते और बाबा को ही सामने रख चलते, उनकी सब इच्छायें स्वतः पूरी हो जाती हैं। उनकी प्रकृति हर तरह दासी होती। तो सरेण्डर माना नो इच्छा। न कोई बुद्धि में इच्छा है, न कोई व्यवहार कार्य की इच्छा है। सरेण्डर माना जो बाबा खिलावे, जो बाबा पहनावे, जहाँ बाबा रखे, उसमें ही मेरी सफलता है।

तीसरा - बाबा हमेशा कहते हैं, बच्चे मालिक बन तुम राय दो और बालक बन स्वीकार करो। तो हम बालक, मालिक हैं - इसका भी पूरा बैलेंस चाहिए। इसलिए मालिक बन राय दिया फिर बालक बन गये। नहीं तो आता कि मेरी तो राय मंजूर नहीं हुई, यह क्या हुआ, आगे तो मैं राय ही नहीं दूँगी, यह है इच्छा अथवा सूक्ष्म-अभिमान।

तो यह सब प्रैक्टिकल अनुभव होने चाहिए। आप सबको बाबा ने चोटी से खींचकर अपना बनाया है, अब सिर्फ देही-अभिमानि होकर रहना है, यही पद का आधार है। जिन्हों को भी थोडा देह-अभिमान आया, मैं ऐसा हूँ वैसा हूँ...ऐसे देह-अभिमान वाले ठहर नहीं सकेंगे। इसलिए सदा ही थैंक्स बाबा! शुक्रिया बाबा! वाह बाबा! वाह बाबा! का गीत गाओ। चाहे जो भी कुछ सफलता होती, बाबा के पास में हमारा रिकॉर्ड है। अगर आप कहते मैंने इनको ज्ञान दिया, यह देखो कितना अच्छा है। तो बाबा कहते नहीं, तुमने क्या ज्ञान दिया, मैंने उसकी बुद्धि को टच करके तेरे पास भेजा है। सुखदाता, सबके प्यार का दाता बाबा है।

तो सफलता का आधार है - एक बाबा से सर्व सम्बन्धों का प्यार। बाबा के प्यार में लीन रहो तो बाकी सब समस्या समाप्त। कहा जाता मेरे रग-रग, नस-नस में हर मिनट-घडी में, बाबा-बाबा, मीठा बाबा...बसता। इसी में रहो तो कभी उदास नहीं होंगे। हाँ, कभी-कभी बाबा पेपर लेता, आप 10 गुणा मेहनत करेंगे, टाइम भी देंगे रिजल्ट एक गुणा मिलेगी, यह पेपर होता है। तो इसको बाबा कहते तुमने सूक्ष्म इच्छा रखके यह सब काम किया। कहा जाता तुम एक कदम आगे आओ तो बाबा 100 कदम आगे आयेगा। नहीं तो बाबा भी क्यों आये। तो इसमें बाबा पेपर भी लेता कि देखें कितना नाउम्मीद हुआ। इसलिए यह सब हमारी अवस्था को बढ़ाने के लिये कई प्रकार के पेपर्स आते लेकिन हमें फुल पास होना है। अगर आज एक गुणा सफलता नहीं मिली लेकिन तुम राइट हो तो कल दस गुणा सफलता अवश्य मिलेगी। तो सफलता का आधार है - आप पूरा ही सरेण्डर रहो। बाबा कहता है जितना-जितना तुम मुझे याद करेंगे उतना-उतना तुम्हें सफलता मिलेगी। तो

सफलता में भी निश्चय चाहिए। सफलता में त्याग, तपस्या भी चाहिए और इतना ही सूक्ष्म अपनी धारणा चाहिए क्योंकि अब बाबा चाहते हैं कि मेरे बच्चे सभी सम्पन्न बनें। अच्छा - ओम् शान्ति।

-----



## सब बुराईयों को निकाल फरिश्ते समान सूक्ष्म, शुद्ध और हल्के बनो दादी प्रकाशमणी जी

जब हम भक्ति करते थे तब माया का पता नहीं था। माया क्या होती है, उसका पता बाबा का बनने से होता है। इच्छा और ममता भी शत्रु हैं। इच्छा पूरी नहीं होगी तो क्रोध आता रहेगा, असन्तुष्टी होगी। दूसरा - मनुष्य भगवान में या देवताओं में आशायें रखते हैं और जब वो पूरी होती हैं तो भावना रखते हैं। उसमें कोई गुस्सा नहीं होता है परन्तु पूरी नहीं होने पर भावनायें कम हो सकती हैं। तो हमारे अन्दर अन्दर से इच्छाओं की अविद्या हो। सच की पढाई है, सच्चे बाप ने पढाया है और सच्चा बनना है। अब बाबा कहते हैं कि बालक वो जो सपूत बने, सपूत माना सच्चे। उस पर बाप राजी रहता है। वो अपने वर्से का हक ले लेते हैं, मांगते नहीं हैं, बाप दे देता है। सच्चा बना तो बाप का प्यारा बना, ईमानदार बना तो सबका प्यारा बना। जैसे हमारी सरस्वती माँ, सच्चा होकर श्रीमत को पालन करने में नम्बरवन बनी। जो बाबा ने इशारा दिया वो हुआ ही पडा है, बाबा को कभी दुवारा नहीं कहना पडा होगा कि मम्मा यह होना चाहिए। जो यज्ञ की सिस्टम बाबा ने मम्मा द्वारा बनाई है वही अभी तक चल रही है। पढाई से राजधानी स्थापन हो रही है। पढाई पर ध्यान है तो धारणा अच्छी होगी। जो धारणा में एक वारी भूल हुई वो दुवारा हो नहीं सकती। अन्दर रियलाइजेशन ऐसा होती है कि जो राईट है वो ही करना है, जो ठीक नहीं है उसको एवाइड करना है। और जो आवश्यक है उसको मिस नहीं करना है। बाबा ने कहा है कि यह भी एक वरदान हो जाता है जो तुम्हारे से मिस न हो। भल कितनी भी डम्प्यूटी हो लेकिन योग और पढाई मिस न हो। अगर सच्ची लगन है तो कभी मिस भी नहीं होगा। ऐसे कई बाबा के बच्चे हैं जो कितनी भी बडी बात हो जाए, क्लास में जरूर आयेंगे क्योंकि नियम के पक्के हैं, उनको बाबा का वर्सा याद रहता है। पढाई के समय उनको सुस्ती और अलबेलापन नहीं आयेगा। इससे अन्त मति बडी मदद मिलती है क्योंकि उन्हें अन्त और भविष्य का ख्याल है।

कोई भी कमी है, देवताओं की भेंट में अच्छी बात नहीं है। बाबा कहते सतयुगी देवताओं के गुणों को इमर्ज करो। अशुद्धि और व्यर्थ से इनोसेन्ट हैं। आजकल के बच्चे इनोसेन्ट नहीं हैं, नहीं तो कहा जाता है बच्चा ब्रह्मा ज्ञानी समान है। हम तो ईश्वरीय सन्तान हैं, भविष्य देवता बनने वाली आत्मा हैं। अभी सब बुराई निकल गई और हम शुद्ध आत्मा बन गई तो फरिश्ते समान सूक्ष्म, शुद्ध और महीन बुद्धि बन जायें। इसके लिए पहले ज्ञान का सिमरण चले माना वो ज्ञान की बातें रिवाइज़ करो। फिर उसी का चिन्तन चले, गहराई में जाओ तो चिन्ता चली जाये। किसी भी प्रकार की चिन्ता न रहे। चिन्ता चिन्तन को खत्म करेगा, सिमरण व्यर्थ को खत्म करेगा। ज्ञान का सिमरण इतना अच्छा है जो व्यर्थ आता नहीं है। इतना सच्चा पुरुषार्थ हो जो कोई व्यर्थ की जरूरत न हो। किसको समझाने के लिए कोई व्यर्थ की जरूरत नहीं है, वो ईश्वरीय स्नेह से ही समझ जायेगा। हमको तो कभी नाउम्मीद नहीं होना है। व्यर्थ, उम्मीद रखने में विघ्न डालता है। जहाँ उम्मीद है वहाँ धीरज, प्रेम, शान्ति और सफलता है। सभी बाबा के बच्चे पुरुषार्थी हैं तो सदा बडे प्यार से उम्मीदें रखनी हैं। हम कुछ करेंगे तो करने की शक्ति भी बाबा देता है। बाबा उम्मीदें रखते हैं फिर हम हिम्मत रखते हैं तो बाबा मदद देते हैं फिर हम सच्ची दिल से करते हैं तो वो राजी रहता है और सब कुछ करता है। तो कोई भी कमी कमजोरियों को निकाल बलवान बनना है। कोई भी मायावी बातें सुनो ही मत क्योंकि माया की बातें कान में आने से हम औरों को सुनाते हैं, इसलिए वो बातें नहीं बोलो जो पश्चाताप करना पडे। जो बातें काम की नहीं हैं वो आँखों से देखो ही नहीं तो यह हमारी आँखे दर्शनीय मूर्त बन जायेंगी। अभी हमें बाबा की उम्मीदों का सितारा बनना है।

## "वृत्ति से वायब्रेशन शुद्ध और शक्तिशाली बनाना है तो परदर्शन बन्द करो"

दादी जी का क्लास

ओम् शान्ति। जिसको सवरे खुशी की खुराक खानी हो तो ओम् शान्ति बोले। ओम् शान्ति के महान मंत्र ने बहुत मदद की है। बाबा के चरित्र और बोल दोनों शक्तिशाली बनाने वाले हैं। मम्मा में सबके विकारों की बलि लेने की शक्ति है। जैसे काली माँ के आगे जायें और विकार खत्म हो जायें, मम्मा में इतनी शक्ति है। याद से विकर्म विनाश हो जायें इसके लिए इतनी पावरफुल याद चाहिए। कोई भी बात सामने आये तो सुनी अनसुनी हो जाये। सुनना पाप है तो सुनाना भी पाप है। देखना भी पाप, बोलना भी पाप -- इतना अटेन्शन दें तब विकर्म विनाश हों। अभी तो कोई पाप न चढे, इसमें खबरदार रहने वाले अपने मात-पिता को फालो करेंगे। हमारी माँ एक तरफ काली फिर शीतला भी है। जो सारे विकारों की बलि लेने वाली फिर शान्त शीतल बनाने वाली है, जिससे हम पक्के वैष्णव कुल में आने वाले बन जायें। वैष्णव माना कोई भी बात में, मान-अपमान का कोई छींटा न पडे। वैष्णव, अगर शराब का छींटा भी पडा तो स्नान कर लेंगे। मांस तो देखेंगे भी नहीं। उस गली से भी पास नहीं करेंगे। भक्ति में भी मानते हैं कि मांस खाने वाले, बेचने वाले, खरीदने वाले, पकाने वाले सब पर पाप चढ़ता है।

महान पुण्य आत्मार्ये अच्छी तरह से ध्यान देते हैं कि विकर्मों का विनाश करना है। भविष्य के लिए श्रेष्ठ पुण्य कर्म करना है। अभी पूरा अटेन्शन देना है, कोई बहाना नहीं। कोई अच्छा कर्म करने के लिए अगर बहाना भी बनाया तो अपनी तकदीर गंवाई। ईर्ष्या, द्वेष के कारण भी बहाना होता है। कुछ न कुछ मन में होगा तो अच्छा कर्म करने नहीं देगा। अच्छा माना ऊंच श्रेष्ठ, सच्चाई-सफाई से कर्म करने से संस्कार बनते हैं। संस्कार से कर्म होते हैं, कर्म से संस्कार बनते हैं। तो कोई भी पुराने संस्कार हमारे में न हों, अंश मात्र भी न हो क्योंकि बहुत अच्छा तरीका हमको पता है। कर्म करें तो बाप को फालों करें, याद करें तो शिवबाबा को करें। शिवबाबा को याद करने से पुराने विकर्म विनाश होंगे। नये अच्छे कर्म होंगे ब्रह्मा बाबा को याद करने से। तो और कोई कर्म हम क्यों करें, दूसरे के कर्म क्यों देखें! हरेक के कर्म की जिम्मेवारी उसके ऊपर है। उसको मदद भी नहीं कर सकते हैं। किसको समझा भी नहीं सकते हैं। समझ में ही नहीं आयेगा क्योंकि उसको रियलाइजेशन ही नहीं है। वो राइट समझकर कर रहे हैं। श्रेष्ठ कर्म करने वाले की रियलाइजेशन पावर बहुत अच्छी होती है।

इस पर मीठी मम्मा की एक बात, मम्मा के सामने दो आत्मार्ये थी। एक गुणवान थी और दूसरी सबकी नज़रों में इतनी गुणवान नहीं थी। पर मम्मा ने उसकी महिमा ज्यादा की। तो मम्मा ने कहा ये अपने को अच्छा समझकर बैठी है, लेकिन ये अच्छा बनने का पुरुषार्थ कर रही है। तो ज्यादा अच्छी कौन? उसमें महसूसता शक्ति है, इसमें महसूसता शक्ति नहीं है। अच्छा गुणवान बनना है तो महसूस करने की, अपने आप को समझने की, जानने की जिसके पास बुद्धि है उसके ऊपर मात-पिता टीचर सतगुरु की कृपा दृष्टि है, परिवार की भी है। उनको कोई इशारा मिलेगा तो प्यार से स्वीकार कर लेंगे। सत्यता वाला कभी जिद नहीं करेगा, सदा सभ्यता से, मुस्करा के रियलाइजेशन से बात करेगा। कभी उसके मुख पर नहीं आयेगा कि मेरी गलती नहीं है। अपनी गलती को छिपाना, दूसरे की बताना मेरे ख्याल में पाप माना जाता है। अपनी गलती बताने पर भी कहेगा कि वो गलत है। सयाना सच्चा कहेगा कुछ भी हो मेरी गलती ये है। आइने में अपने आपको देख लिया ना।

आइना ही है जिसमें हम अपने को देख सकते हैं। किसी को देखकर अपने को नहीं देख सकते हैं। इसलिए अपने को देखने के लिए अन्तर्मुखता जरूरी है। बाह्यमुखता के द्वारा औरों को देख समझ लेते हैं कि मैं ये ही हूँ। अगर मैं दूसरों को बाह्यमुखता से देखेंगी तो उनको भी बाह्यमुखता ही दिखाई पड़ेगी। अपनी रियलाइजेशन ही अपने को स्वच्छ बनाती है। फिर सत्य ज्ञान की शक्ति काम करती है। सच्चे बाबा के साथ सम्बन्ध, बाबा मेरा कैसा है, ऐसा बनने में आसान हो जाता है। दिन रात अपने को देखना, कौन देखेगा, जिसको पुण्य आत्मा बनना होगा, छोटे-छोटे पापों से भी मुक्त होना होगा।

वृत्ति और वायुमण्डल, हरेक अपने दिल में स्पष्ट करे। अन्दर मेरे दिल में जैसी बात है वैसी दृष्टि है और वैसी ही ख्याल होंगे। जैसा ख्याल है वैसी बात दिल में बैठती है फिर वो भावना बन जाती है। दिल की है भावना, मन की है वृत्ति। भावना और संकल्प दोनों मिल गये। दिल में भावना शुद्ध है, चाहे अशुद्ध है। कामेशु क्रोधेशु, काम है तो क्रोध भी है। काम कामना को भी कहा जाता है। कामना पूरी नहीं होगी तो क्रोध होगा। इसलिए बाबा ने कहा है निष्काम सेवा। कामना रखकर सेवा नहीं करो, उसका फल आपेही निकलेगा। किसी ने महिमा नहीं की तो गुस्सा आयेगा। फिर ओम् शान्ति कहना भी मुश्किल हो जाता है। वो अगर अपने आप को आइने में देखे तो बस बेडा पार हो जाय। बाबा कहता उस टाइम उसको आइना देना चाहिए। रुहानियत, स्नेह, सच्चाई से, अच्छी तरह से साक्षी होकर देखें। परमात्मा स्मृति दिलाता है कि तुम आत्मा मेरी सन्तान हो, अगर ये बात समझ में आती है तो रुहानियत आयेगी क्योंकि आत्मा ने 84 जन्म लिये हैं, सतयुग से कलियुग तक कितने जन्म लेते हुए कहाँ गिरे हैं। पहले पुजारी हैं फिर हैं विकारी। अभी क्या बन रहे हैं वो तो देखें ना! बाबा कहता हे आत्मा ये तो देखो न कि मैं बन क्या रहा हूँ! आत्मा तो पावन बने, पर शरीर की कर्मन्द्रियां भी कर्म करके पावन बन जायें। आत्मा ज्ञान योग से पावन बनेगी, शरीर कर्म करने से पावन बनेगा।

भक्ति मार्ग में, मन्दिरों में देवतायें अभी भी दृष्टि द्वारा सेवा कर रहे हैं। विश्व भर की आत्माओं की सेवा है। इसमें रुहानियत, स्नेह और सच्चाई चाहिए। हरेक अपने आप से पूछे कि मुझ आत्मा में जो भगवान भर रहा है, वो है? दिल से पूछो। मन दिल के द्वारा बतायेगा कैसे तुम्हारे विचार चलते हैं। दिल है दर्पण। दिल में पता चलता है और कोई इच्छा नहीं है। इच्छा है एक, बाबा सम्पन्न बनाने के लिए सामने बिठा करके शिक्षा दे रहा है, ये शिक्षा का स्वरूप बन जाऊँ। शिक्षा बाबा की हमारे स्वरूप में हो। आज अगर ऐसा बन जायेंगे तो नये आने वाले बच्चों को बाबा कहेगा कि ये जैसे हैं वैसे तुम भी बन जाओ।

सयाने, सच्चे, समझदार देखेंगे भी तो किसको! जिनका पुरुषार्थ ऊंचा होगा, उसको देखकर खुद भी दौड़ी पहनेंगे। जिसका पुरुषार्थ खुद ही ढीला है, उसको देखकर खुद भी ढीला हो जायेगा, विचारधारा ही बदल जाती है। जैसे किसी बीमार को, दुःखी को देखूँ तो उसका इन्फेक्शन मुझे भी हो जायेगा। फट से उसको हॉस्पिटल में ले गई तो अपने को भी सम्भाला और उसे डाक्टर को दे दिया। किसी को दुःखी देखकर दुःखी थोड़ेही होना है, उसे डाक्टर के पास पहुँचाओ। आज बाबा ने ध्यान खिंचवाया है - बच्चे आपकी वृत्ति से वायुमण्डल शुद्ध बन जाये, बाबा की याद से, स्नेह से, शुद्ध भावना से वायुमण्डल अच्छा बन जाये।

लोग मृत्यु पर बहुत रोते हैं, भले कितना ज्ञानी हो, शक्ल भी ऐसी होगी तो क्या सर्विस करेगा। इतना बहादुर हो जो सब शान्त हो जायें। यह सर्वोत्तम सेवा है, कोई भी वायुमण्डल का मेरे पर असर न हो। बाबा हमको क्या से क्या बनाता है। दूर बैठे भी हमको बाबा के वायुब्रेशन बहुत आये हैं, जिसका फल अब देख रहे हैं। फिर आता है मुझ आत्मा को क्या करने का है? क्या सोचना है? क्या दिल में रखना है? ये सदा ही अपने दिल से पूछो। सच्ची दिल पर साहेब राजी है। फिर बाबा खुद ही हमको कहेगा कि ये बच्ची अन्दर बाहर साफ है। कभी कोई कहे नहीं कि ये अन्दर में एक बाहर में दूसरी है। दिखाना कुछ और करना कुछ और, इसमें बाबा को कुछ नहीं फर्क पड़ेगा, अपनी तकदीर में फर्क पड़ेगा। किसी को न देख, खुद को अलौकिक दिव्य दर्शनीय

मूर्त बनना है। मेरे में कोई साधारणता न हो, दिव्यता हो, अलौकिकता हो। हमारा जन्म ही अलौकिक है। ब्राह्मण हैं, देवता बनने वाले हैं, वहाँ जाकर पुरुषार्थ नहीं करेंगे। ब्राह्मण लाइफ है, अभी देवता बनने के संस्कार भरने हैं। अभी सच्चे वैष्णव बनना है। साक्षी होकर देखो तो अपनी दिल और मन बताता है कि संकल्प किस प्रकार का है। दिल भी बता सकती है क्योंकि दर्पण है। अपने को देख पर-दर्शन बन्द कर। इसलिए बाबा कहता स्वदर्शन चक्रधारी बनो। जिसको वृत्ति से वायुमण्डल शुद्ध बनाना है वो पहले पर-दर्शन बन्द करे।

अगर मेरे मन में कोई बात होगी तो मेरी वृत्ति कैसी होगी! उस वृत्ति से मैं अपने को कौन सी पालना दे रही हूँ। जिस तरह से मेरे मात-पिता मेरी पालना कर रहे हैं, उस पालना में नहीं रही हूँ, पढाई में भी नहीं हूँ। अगर पढाई मेरे दिमाग में अच्छी तरह से नहीं बैठ रही है तो पद मेरा कम हो रहा है, ये बात दिमाग से दिल में बैठे तो रुहानियत आये, खुशी आये। नहीं तो छोटी-छोटी बातों का असर होता रहेगा। ताकत नहीं है तभी असर हुआ, धारणा की शक्ति नहीं है तो असर हुआ। असर हुआ फिर मिटाने में मेहनत है। एवर हैपी नहीं होंगे। एवर हैपी और हेल्दी बनने पर ध्यान नहीं रखा है तो वायुमण्डल का असर हो जायेगा। मुझे तो अच्छे वायुब्रेशन बाबा से बहुत मिल रहे हैं, वो कैच नहीं कर सकते हो क्या! दिलवाला बाबा के पास बैठी हूँ, तो दिल में फिर क्या है! ये याद नहीं है कि दिलवाला मेरा बाप बैठा है। एक सेकण्ड में दिल की बात जान जाता है। जो मेरे कल्याण की बात होगी वो अपने आप हो जायेगी। हम कहेंगे ये होना चाहिए तो कभी नहीं होगा। अच्छी स्थिति बनाने का है तो बाबा मदद करता है। फालतू कामना रखेंगे तो मदद नहीं करता है। अपनी घोट तो नशा चढे। स्वदर्शन चक्रधारी बन, तू सच्ची दिल वाली बन, जो भी बात है सुना दे बस। रांग है राईट है, ये बाबा को थोडेही चाहिए। बाबा से बहुत बातें करने की जरूरत ही नहीं है, सुनता भी नहीं है। शान्ति से बाबा व्यर्थ बन्द कर देता है। व्यर्थ सोचने वाले बाबा के पास भी व्यर्थ बातें करते हैं। कोई भी बात है बाबा के सामने रख दो बस। बाबा के सामने नहीं रखते हो तो बढ़ती जाती हैं, तब औरों से बात करते हैं। औरों से नहीं करते हैं तो मन में दबा के रख देते हैं। आगे बाबा हमको शिक्षा देता था कि कोई बात सुनाये तो कभी नहीं सुनना क्योंकि उसको पता नहीं है कि उल्टी भी कहाँ की जाती है। अगर अन्दर में रखेंगे तो ज्ञान अन्दर जायेगा ही नहीं। बढिया भोजन हो और अन्दर कुछ अटका हुआ हो, तो अन्दर जायेगा ही नहीं। उल्टी करें भी तो कहाँ करें जो हल्का हो जाये। सच्चा सयाना न दिमाग भारी करता है, न दिल भारी करता है।

ये कोई लाइफ नहीं है, कारण कुछ भी बतायें। सब कारण वास्तव में कुछ हैं ही नहीं। कारण सब बनाये हैं, हैं नहीं। कोई समझू सयाना होगा तो कारण नहीं बतायेगा। कुछ भी है हमारी टेस्ट के लिए है। क्या गर्मी को कहेंगे कि क्यों आई हो? आई है तो अपने को सम्भाल। उसका टाइम है, वो तो आयेगी। उसको गुस्सा करेंगे तो वो और ही हैरान करेगी। कोई बात आती है तुम्हारा टेस्ट करने के लिए। कोई विरली आत्मा है जिसने किसी को दोषी नहीं बनाया होगा, मम्मा बाबा को फालो कर पास किया है। पढाई है ही पेपर। एक दिन पढाई शुरु करो, दूसरे दिन पेपर शुरु हो जाता है। फिर पुरानी बातें याद आती है, मुरली याद करनी पड़ती है, बाकी बातें याद आती हैं। अभी हमको वृत्ति से वायुमण्डल अच्छा बनाना है, तो अपने आपको सारा दिन सम्भालना है क्योंकि वैल्युबुल शरीर है, वैल्युबुल टाइम है, वैल्युबुल नॉलेज है और संग, संगठन भी वैल्युबुल है। कोई भी बात बुद्धि में टच न करे, स्पर्श भी न करे इतना सेफ रहना है तब तो पूज्यनीय मूर्ति बनेंगे। पूजा करानी नहीं है, पर पूज्य बनने की भावना तो अपने लिए रखूँ। पूज्यनीय बनाने वाले को सामने रखूँ। वो तो बना ही रहा है, कल्प पहले भी बनाया था, अभी भी बना देगा। अपनी मनोवृत्ति से, बाप से मिली हुई दृष्टि से वायुमण्डल बहुत पावरफुल बन जायेगा। फिर वायुब्रेशन विश्व में पहुँचेंगे। एक ही समय पर वृत्ति-दृष्टि शुद्ध-शान्त, वायुमण्डल ऊंचा तो वायुब्रेशन हजारों माइल तक जा सकते हैं। फिर उनको आयेगा कि मधुबन के वायुब्रेशन पहुँच रहे हैं। यह रिहर्सल हम सबको अभी ही करनी है। अच्छा - ओम् शान्ति।

# मुझे मुरलीधर की मीरा बनना ही था

ब्रह्माकुमारी दादी प्रकाशमणि जी साकार बाबा के संग के अपने अनुभव सुनाती हैं कि बचपन से ही मैं रोज श्रीकृष्ण की पूजा करती थी। छोटेपन से ही मन में यह रहता था कि मैं मीरा बनूँ। मैं मीरा की कहानी जानती थी। हमारे घर के पास ही राधे-कृष्ण का मंदिर था। सुबह और शाम को मंदिर में जाकर पूजा जरूर करती थी। शाम के समय मंदिर में जाकर श्रीकृष्ण को झुलाना, सुलाना मेरा नित्य का नियम था। मुझे श्रीकृष्ण से बहुत प्यार था और पूजा भी बहुत प्रेम से करती थी। मुझे लगता था कि श्रीकृष्ण और श्रीराधे भी मुझे बहुत प्यार करते हैं। मैं रोज भागवत पढ़ती थी। आप लोग जानते होंगे कि सिन्धी लोग सुखमणी और ग्रन्थ साहिब को मानते हैं। उस समय स्कूल में रिलीजियस (धार्मिक) पिरियड होता था। उसमें सुखमणी, गुरु ग्रन्थ साहिब, रामायण, महाभारत आदि पढ़ाते थे। स्कूल में उनको सुनने और पढ़ने में मुझे बहुत आनन्द आता था। मुझे याद है कि रिलीजियस पिरियड में मैं हमेशा नम्बर वन आती थी और 65% से 70% तक मार्क्स लेती थी। मुझे पढ़ाई से भी बहुत प्यार रहता था। मैं स्कूल में सदा पहला, दूसरा या तीसरा नम्बर लेती थी। इससे कम नम्बर कभी नहीं लिया। इसलिए स्कूल में टीचर्स भी मुझे बहुत प्यार करते थे। खेलकूद में बहुत कम समय देती थी। उसमें मुझे रुचि कम थी। बड़ी बहनों की शादी हो चुकी थी। घर में मैं, मेरी मम्मी और पापा ही थे। मुझे बाहर घूमना, सहेलियों के साथ गपशप मारना, बाज़ार की चीज़ें आदि खाने का शौक पहले से ही नहीं था। सहेलियाँ थीं लेकिन पढ़ाई के नाते, बाक़ी व्यर्थ समय गँवाने की दोस्ती किसी से भी नहीं थी।

लौकिक माँ-बाप भी अच्छे संस्कार वाले थे। सत्संग, धार्मिक कार्यों आदि में रुचि लेने वाले थे। इसलिए मेरे संस्कार भी बचपन से अच्छे ही थे। मुझे याद नहीं है कि मैंने कभी चंचलता की हो और माँ-बाप ने मुझे थपड़ लगाया हो, गुस्सा किया हो। मैंने स्कूल में कभी किसी से न झगड़ा किया, न लड़ाई की। जब मैं 14 वर्ष की हो गयी तब ज्ञान में आयी थी। उस समय मैट्रिक में पढ़ती थी। मैंने ज़िन्दगी में अन्दर जाकर सिनेमा हॉल देखा तक नहीं है। लौकिक पिता जी स्वामी गंगेश्वरानन्द जी के शिष्य थे। जब पिता जी उनके पास जाते थे तो मुझे भी साथ में ले चलते थे। गंगेश्वरानन्द जी ज्योतिष भी जानते थे और मेरे पिता जी से कहा करते थे कि तुम्हारी बेटा शादी नहीं करेगी और मीरा बनेगी। मुझे बचपन से ही खाने-पीने का, देखने-पहनने का शौक नहीं था। मुझे याद नहीं है कि मैंने मम्मी से कभी कहा हो कि मुझे ऐसा-ऐसा फ़ॉक चाहिए, कपड़े आदि चाहिए अथवा आज यह खाने का दिल हो रहा है, यह बनाओ। कभी नहीं। छोटेपन से ही मेरे फेवरेट (मनपसन्द) स्लोगन थे कि 'माँगने से मरना भला', 'इच्छा रखना अज्ञान है।' मैं सोचती थी कि गोपियाँ थोड़े ही इच्छा रखती थीं? मीरा थोड़े ही इच्छा रखती थी? वे नहीं रखती थी तो मैं क्यों रखूँ?

हाँ, मुझे एक इच्छा जरूर थी कि मैं श्रीकृष्ण का दीदार करूँ या विष्णु का दीदार करूँ। मुझे यही मन में लगन रहती थी कि कब भगवान विष्णु के दर्शन होंगे, कब भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन होंगे। उस समय तो इनको ही भगवान मानते थे ना!

## श्रीकृष्ण जी और श्रीसत्यनारायण जी सपने में आने लगे

सन् 1937 में जब मैं मैट्रिक में पढ़ रही थी तो सब विषयह्व इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान आदि अंग्रेजी भाषा में ही पढ़ाते थे। उसी स्कूल में मम्मा भी पढ़ती थी। मैं और मम्मा एक ही बेंच पर बैठते थे। मम्मा के साथ क्लास-फेलो (सहपाठी) के नाते मित्रता थी, बाक़ी उनके बारे में कुछ नहीं जानती थी। मम्मा बहुत स्वीट थी, लम्बे-लम्बे बाल, सुन्दर रूप था। मुझे तो मम्मा बहुत अच्छी लगती थी। उस समय भी दशहरा और दीपावली के

दिनों में तीन सप्ताह की छुट्टियाँ मिलती थीं। हम उन छुट्टियों में मन्दिरों और सत्संगों में जाया करते थे। सवेरे-सवेरे दीवाली के समय हैदराबाद में ठण्डी पड़ती थी। एक बार मैं सोयी हुई थी। सपने में मुझे सामने एक सुन्दर बगीचा दिखायी पड़ा। उस बगीचे में चारों तरफ़ लाइट ही लाइट थी। लाइट भी बहुत सुन्दर थी। दूर-दूर तक बड़े-बड़े फूल-फल लगे हुए थे। उस बगीचे में पहले लाइट आयी। उसी लाइट के बीच से, छोटा-सा श्रीकृष्ण, बहुत दूर से बंसी लेकर नाचता-नाचता मेरे पास आया। जब वह मेरे समीप आया तो मुझे बहुत खुशी हुई। वह और नज़दीक आया। यह देखकर और खुशी हुई। मैं उसको देखती रही और बहुत खुश होती रही। देखते-देखते ही श्रीकृष्ण के पीछे एक सफ़ेद वस्त्रधारी फ़रिश्ता आया। छोटेपन में सत्यनारायण की कथा में सुनते थे कि भगवान बूढ़े के वेष में आता है। जब श्रीकृष्ण के पीछे यह फ़रिश्ता देखा तो मुझे लगा कि मैं भगवान सत्यनारायण को देख रही हूँ। मैं कभी श्रीकृष्ण को देखूँ, कभी उस बूढ़े तनधारी फ़रिश्ते को देखूँ। दोनों मुझे बहुत प्यारे लगते थे। इतने में मैं जाग गयी। मुझे बहुत खुशी हुई। सुना था कि अगर भगवान का दीदार होता है तो किसी को नहीं सुनाना चाहिए। जैसे गूंगा मिठाई खाता है तो उसको बता नहीं सकता, अन्दर ही अन्दर उसका आनन्द लेता रहता है। उसी प्रकार, भगवान का दीदार करने वाले को भी किसी को बताना नहीं चाहिए, बताया तो फिर भगवान उसके पास नहीं आयेगा। इसलिए मैंने भी किसी को नहीं बताया, मम्मी को भी नहीं बताया। लेकिन दोबारा भगवान आया नहीं। फिर मैंने कोठी में जाकर श्रीकृष्ण की माला फेरी, मन्दिर गयी और कहा, हे श्रीकृष्ण! आओ। वो आये नहीं। ऐसे करके दो-तीन दिन बीत गये। मेरी एक क्लास फेलो ॐ-मंडली में जाती थी। एक दिन उसने मुझे कहा कि तुम भी मेरे साथ वहाँ आओ। मैंने कहा, ठीक है। एक दिन उसके घर पर गयी। जब मैं वहाँ गयी तो वह (मेरी सहेली) ध्यान में गयी हुई थी और आँसू बह रहे थे। उसका नाम लीला था। मैं आवाज़ देती रही, लीला, लीला। वह कुछ सुने नहीं, अपनी ही धुन में अपने आप मुस्कराती थी, हाथ ऊपर करती रहती थी। मुझे कोई जवाब नहीं देती थी। मैंने उसकी मम्मी से कहा, मुझे लीला ने बुलाया था लेकिन न बोलती है, न आँखें खोलती है, जवाब भी नहीं देती है। मैं जाती हूँ। उसकी मम्मी ने कहा, बेटी, मुझे पता नहीं इसको क्या हुआ है, जब भी देखो ध्यान में बैठी रहती है। दो-तीन दिन से इसकी यह अवस्था है। उसकी यह अवस्था मुझे बहुत अच्छी लगी। मैं जा रही थी तो उतने में ही वह ध्यान से जागी और मुझे देखकर कहने लगी, रामा चलो, मैं तुमको श्रीकृष्ण का दीदार करा दूँगी। मैंने कहा, श्रीकृष्ण का दीदार कराना क्या मौसी का घर है? मैं इतनी पूजा, भक्ति करती हूँ, मुझे ही नहीं होता तो तुम क्या मुझे दीदार कराओगी? फिर लीला ने कहा, अभी शाम हो गयी है, कल सुबह 10 बजे चलेंगे। सत्संग में ज़्यादातर मातायें ही आती थीं इसलिए बाबा सुबह 10 बजे सत्संग आरम्भ करते थे। फिर मैं घर गयी।

### पिता जी ने ही कहाहूँ बेटी, तुम भी दादा के सत्संग में जाओ

बाबा ने शुरू-शुरू में भाऊ के घर में सत्संग आरम्भ किया था। वह घर मेरी सहेली के घर के पास ही था। भाऊ विश्व किशोर बाबा का भतीजा था। बाबा ने पहले-पहले सत्संग अपने भाई के घर में किया, न कि अपने घर में। हम लोग घर से बाहर कहीं भी जाते थे तो माँ-बाप की छुट्टी लेकर ही जाते थे। उसी रात को मेरे लौकिक पिता जी ने कहा, बेटी, अभी तो तुम्हारी छुट्टियाँ हैं, दादा सत्संग कराता है, वहाँ ॐ की ध्वनि लगाते हैं और गीता सुनाते हैं, जाओ तुम भी सत्संग करो। तब मैंने भी कहा, पापा, मेरी सहेली भी कह रही थी कि वहाँ श्रीकृष्ण का दीदार होता है, तुम भी चलो। पिता जी ने कहा, ठीक है बच्ची, तुम ज़रूर जाओ। अगले दिन मैं अपनी सहेली लीला के पास गयी और वहाँ से उसके साथ सत्संग में गयी।

### जिनको स्वप्न में देखा था, उन्हें फिर ध्यान में भी देखा

जब हम बाबा के पास पहुँची, उस समय बाबा ॐ की ध्वनि लगा रहा था। वो ध्वनि बहुत अच्छी थी। जाते ही मेरी दृष्टि बाबा के मस्तक पर पड़ी। ऐसा लग रहा था कि मस्तक से कोई लाइट निकल रही है। उस समय मुझे

पता नहीं था कि शिव बाबा कौन है, ब्रह्मा बाबा कौन है। मुझे याद आया कि 3-4 दिन पहले स्वप्न में श्रीकृष्ण के साथ सफ़ेद वस्त्र वाले सत्यनारायण भगवान को देखा था, यह दादा भी वैसे ही हैं। ये मेरे स्वप्न में क्यों आये थे। यह कौन हैं? यह बाबा सत्यनारायण भगवान है क्या? ऐसे सोचते-सोचते बाबा को देखती रही। ऐसे देखते-देखते ॐ की ध्वनि हुई तो मैं ध्यान में चली गयी। वही श्रीकृष्ण, वही शाही बगीचा, वही सत्यनारायण भगवान जिनको स्वप्न में देखा था, उन्हें फिर ध्यान में भी देखा। मैं कितने समय ध्यान में गयी, मुझे पता नहीं क्योंकि जब मैं ध्यान से उतरी तब सत्संग पूरा हो चुका था, सब उठकर चले गये थे। किसी ने मुझे उठाया। देखा तो अकेली थी, लज्जा भी आ गयी। उस समय अभी ध्यान के नशे में ही थी। बाबा कमरे में बैठे थे, उन्होंने मुझे बुलायाह आओ बच्ची, आओ। जब बाबा को देख रही थी तो कभी श्रीकृष्ण, कभी सत्यनारायण भगवान दिखायी पड़े। घर आने के बाद भी वही सत्यनारायण भगवान और श्रीकृष्ण दिखायी पड़ते थे। रात-रात नींद नहीं आती थी, उसी ध्यान के नशे में रहती थी। न खाती थी, न पीती थी। माँ घबरा गयी कि बेटा को क्या हो गया। मुझे ध्यान में अच्छा लगता था, छत पर जाकर बैठ जाती थी। ध्यान में जाकर श्रीकृष्ण को देखती थी, स्वर्ग को देखती थी, सत्यनारायण भगवान को देखती थी, गोप-गापियों का नृत्य देखती थी। लगन बढ़ती गयी। पापा भी सोचने लगे कि बच्ची को क्या हो गया। मैं कहती रहीह कुछ नहीं, कुछ नहीं, सब ठीक है। उतने में दीवाली आयी। दीवाली की छुट्टियाँ पूरी हुईं। स्कूल में जाना पड़ा। स्कूल में तो जाती थी लेकिन पढ़ाई में मन नहीं लगता था। फिर भी जाना पड़ा। जब मैं स्कूल गयी तो वहाँ मम्मा से मुलाकात हुई। मैंने मम्मा से कहा, राधे, आप भी सत्संग में चलो, वहाँ दादा बहुत अच्छा गीता-पाठ करते हैं। मम्मा उससे पहले एक बार गयी थी। फिर दोनों ने पक्का किया कि रोज़ सत्संग में जाना है। मैंने पापा से कहा, मैं स्कूल नहीं जाऊँगी। पापा आँख दिखाते लगे कि क्यों नहीं जायेगी। मैंने कहा, मुझे यह पढ़ाई नहीं पढ़नी है, मुझे ज्ञानामृत पीना है और पिलाना है, मुझे श्रीकृष्ण और राधा के साथ गोपी बनके रास खेलना है। मुझे तो योगिन बनना है। फिर पापा ने कहा कि ठीक है बच्ची, तुम्हें जो पसन्द है हमें भी वही पसन्द है।

बड़ी दीदी मनमोहिनी जी सत्संग में हमसे पहले से ही जाती थी। दीदी लौकिक में मेरी चाची थी। आनन्द किशोर दादा लौकिक में चचेरा भाई लगता था। ये सब सत्संग में जाते थे। मैं दीदी के साथ आती थी तो मेरे पापा और मम्मी भी कुछ नहीं कहते थे। बाद में बाबा ने मुझे भाषण करना, गीत गाना, कोर्स कराना, श्लोक बोलना आदि सिखाया। दुनिया की कोई बात याद नहीं रही।

### **बाबा, मैं तो श्रीकृष्ण की बन चुकी हूँ**

इससे पहले की एक घटना मुझे याद आती है। एक दिन हम तीन सखियाँ सत्संग में जा रही थीं। उस समय हमने रंगीन कपड़े पहने थे और चैन आदि कुछ जेवर भी पहने थे। बाबा का घर बाज़ार के बीचों बीच था। घर नीचे से बहुत बड़ा था। ऊपर एक ही कोठी थी जहाँ बाबा अकेले रहते थे। जब हम बाज़ार से होकर सत्संग के लिए बाबा के मकान में जा रहे थे तो बाबा ने ऊपर से हमें देखा और सन्देश भेजा कि बच्चों को ऊपर आने के लिए कहो। हम घबरा गये कि बाबा हमें ऊपर क्यों बुला रहे हैं! हम गये तो बाबा ने पूछा, बच्ची तुमको कोट-पैण्ट वाले से शादी करनी है या पिताम्बरधारी से शादी करनी है? हमें तो यह प्रश्न समझ में नहीं आया। क्योंकि कोट-पैण्ट क्या होता है और पिताम्बर क्या होता हैह यह भी पता नहीं था। यह भी हमें आश्चर्य लगा कि बाबा शादी की बात क्यों कर रहा है। फिर बाबा ने पूछा, बोलो बच्ची, तुमको श्रीकृष्ण से शादी करनी है या कोई लड़के से शादी करनी है? मैंने कहा, बाबा मैं तो श्रीकृष्ण से शादी कर चुकी हूँ और किसी से शादी करने की बात ही नहीं। फिर बाबा ने कहा, अगर श्रीकृष्ण से शादी की है तो ये रंगीन कपड़े और जेवर क्यों पहने हुए हो? उस दिन के बाद आज तक मैंने न जेवर पहने, न रंगीन कपड़े पहने।

## कहाँ गये मोरे गिरिधर-गोपाल ?

उस समय हमें ज्ञान की बहुत मस्ती चढ़ी थी। फिर अप्रैल-मई मास में मम्मा को ॐ-मंडली की जिम्मेवारी देकर बाबा अपने लौकिक परिवार के साथ काश्मीर चले गये। वहाँ से बाबा ने मम्मा को पत्र लिखा कि ॐ राधे, हैदराबाद में स्कूल बन रहा है और सत्संग में आने वाली माताओं के बच्चे और बच्चियों के लिए जब तक तुम भी बोर्डिंग नहीं बनवाओगी तब तक मैं हैदराबाद नहीं आऊँगा। बाबा ने जाते समय कहा था कि मैं एक मास के लिए काश्मीर जा रहा हूँ लेकिन तीन मास तक बाबा वहाँ रुक गये। हम सब बच्चे दिन-रात रोते रहे कि कहाँ गये मोरे गिरिधर-गोपाल। हम तो पागल-से बन गये थे, सब बाबा-बाबा कहकर तड़प रहे थे। कई मास तक हम जब भी बाबा को देखते थे तो बाबा श्रीकृष्ण ही दिखायी पड़ते थे। कई मास तक मुझे भी श्रीकृष्ण ही दिखायी पड़े। मेरी आँखों में कृष्ण ही रहता था।

## 15 साल उम्र में ही मैं 10 साल वालों को पढ़ाती थी

मम्मा ने बहुत मेहनत करके स्कूल बनवाया। उसके लिए एक मीटिंग और कमेटी बनायी गयी। मीटिंग में तय हुआ कि दादी अर्थात् मैं उसको निमित्त बन संभालूँ। यह सब होने के बाद मम्मा ने बाबा को पत्र लिखा, तो बाबा हैदराबाद आये। सन् 1937 में बाबा ने बाकायदा स्कूल का उद्घाटन किया। उस समय सत्संग में हरेक के नाम से पहले ॐ शब्द लगाते थे। जैसे ॐ बाबा, ॐ राधे, ॐ रामा, ॐ गोपी इत्यादि। पचास के करीब बच्चे-बच्चियाँ थीं। उस समय मेरी उम्र थी 15 साल, पढ़ाती थी 10 साल वालों को। बाबा हमें सब कुछ पहले सिखाते थे कि कैसे लेशन (पाठ) तैयार करना है, खुद बाबा कविता और गीत लिखकर देते थे और कैसे पढ़ाना है वह भी सिखाते थे। बच्चों को कैसे उठाना, नहाना, खिलाना, पढ़ाना और सुलाना बाबा ने सब हमें सिखाया।

## बाबा मुझे बहुत प्यार भी करते थे और इज्जत भी देते थे

उसके बाद बाबा ने चार माताओं और चार कन्याओं सहित आठ की एक कमेटी बनायी। उसमें बाबा ने अपने किसी भी लौकिक सम्बन्धी का नाम नहीं डाला। दीदी मनमोहिनी, रुक्मिणी दादी, रूप (मम्मा की लौकिक मामी), मोहिन्द्र और चार कन्याओं में मम्मा, मैं, शान्तामणि और सुन्दरी बहन। बाबा ने अपनी सारी प्रापर्टी इन माताओं और कन्याओं की कमेटी को विल कर दी। मेरे में बचपन से ही रूसना, रोना, लड़ना, झगड़ना, चोरी करना, माँ-बाप की बातों का उल्लंघन करना, बड़ों को जवाब देना, अहंकार दिखाना कुछ भी नहीं था, इसलिए बाबा मुझे बहुत प्यार करते थे। कभी भी बाबा ने मुझे न आँख दिखायी, न डाँटा, न पूछा कि बच्ची तुमने ऐसे क्यों किया। कभी नहीं। बाबा मुझे बहुत प्यार भी करते थे और इज्जत भी देते थे।

बाबा जब हैदराबाद में हमारे साथ रहते थे तो बीच-बीच में चतुराई करते थे। हैदराबाद से कराची रेल में तीन घंटे का सफ़र था। रात दो बजे ट्रेन जाती थी। बाबा उस ट्रेन में कराची चले जाते थे। हम सुबह उठकर देखते तो बाबा गायब। सब तड़पने लगते थे कि कहाँ गयो मोरा गिरिधर, कहाँ गयो मेरा घनश्याम, ओ गंगा, ओ जमुना, कहाँ गयो मेरा श्याम। बाबा वहाँ जाकर पत्र लिखते थे कि मैं दो दिन रहकर आऊँगा। फिर भारत का विभाजन हुआ तो बाद में हम आबू आ गये।



# दादी जी साकार बाबा का प्रतिरूप थीं

—दादी हृदयमोहिनी जी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका



दादी हृदयमोहिनी जी, दादी जानकी जी एवं दादी जी।

साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूँद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूँदें पड़ रही हैं, एक-एक बूँद ज्ञान-मोती का रूप धारण करती जा रही है। अतः हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएँ सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षायें

भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई गलती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर गलती नहीं सुनाते थे। मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे-ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। गलती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चैम्बर नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट-से जाते थे और हम सभी बच्चे पास-पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चैम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह ना दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि, वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक गलती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, गलती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना अहसास हो जाता था कि भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

## दादी जी दिल में किसी की, कोई बात नहीं रखती थीं

ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर खुशी न जाए।



# दादी जी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया

– ब्रह्माकुमारी जानकी

मुख्य प्रशासिका, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

दादी प्रकाशमणि को मैं बचपन से जानती हूँ। सन् 1936 में, सिंध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता संपन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आई। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुँज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभाते देखा। बारी-बारी से सबकी भोजन बनाने की सेवा आती थी तो अपनी बारी में वे भोजन भी बहुत अच्छा बनाती थी। जीवन के हर कर्म में चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, उनको सदा कुशल ही देखा। बाबा द्वारा बताए गए नियमों के पालन में तो हमारे सामने सैम्पल बनकर रही। वे सरलता और स्नेह की मूर्त बन मम्मा-बाबा तथा सर्व भाई-बहनों पर अपनापन उड़ेलती रही।



जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के विभिन्न निर्देश देते थे जैसे कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश भेजो, महात्मा गांधी जी को ईश्वरीय संदेश भेजो आदि-आदि। दादी जी बड़ी तत्परता से इन सभी को अमल में लाती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारे को तुरंत पकड़ती थीं और पूरा करके दिखाने में हमारे लिए मार्गदर्शिका की भूमिका निभाती थी।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प-बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी, उनका जहाँ-जहाँ कदम पड़ा, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी जी ने कानपुर, लखनऊ, पटना, मुम्बई आदि अनेक स्थानों पर अनेकानेक आत्माओं को प्यारे बाबा के वरसे का अधिकारी बनाया।

प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद, संगठन के किले को मजबूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ-परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएँ भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनायेगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली सुनाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। लंदन तो सेवा का प्रमुख केन्द्र था ही। उन दिनों पूरे चार साल मैं मधुबन नहीं आई। हाँ, दादियाँ हमारे पास आती रहीं। सन् 1977 में दादी हमारे पास आईं। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नेचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक

में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था।

यह मेरा महान भाग्य है कि ऐसी महान् दादी ने सदा ही मुझे पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परंतु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा। मधुबन मुख्यालय की जिम्मेवारियाँ निभाते हुए दादी स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहाँ-जहाँ उनके कदम पड़े, वहाँ-वहाँ ईश्वरीय सेवा के नये बीज अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गईं।

जब दादी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था तब भी उनका मुस्कराता हुआ चेहरा देख, कर्मातीत स्थिति की प्रेरणा मिलती रही। चेहरे पर जरा भी दुःख-चिन्ता की लहर नहीं दिखाई। जैसा बाबा हमें बनाना चाहता है, वो सबूत देखा। वे याद में भी लवलीन रहती थीं, बेहद सेवा को भी सामने रखती थीं और सर्व का सहयोग लेने की भी बड़ी सुन्दर युक्ति उनके कर्मों से देखने को मिलती थी। संक्षेप में यही कहूँगी कि बाबा की हर आज्ञा का पालन करते-करते दादी, बाप समान सबकी प्रेरणास्रोत बन गईं।

# दादी जी साकार बाबा का प्रतिरूप थीं

—दादी हृदयमोहिनी जी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका



साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे कि इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूँद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूँदें पड़ रही हैं, एक-एक बूँद ज्ञान-मोती का रूप धारण करती जा रही है। अतः हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएँ सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते

थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था तो शिक्षायें भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई ग़लती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर ग़लती नहीं सुनाते थे। मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे-ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। ग़लती करने वाला तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चैम्बर नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट-से जाते थे और हम सभी बच्चे पास-पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चैम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खरा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह ना दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। जो कहना होता था, मुरली में ही कह देते थे। यदि, वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक ग़लती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, ग़लती करने वाला बेधड़क होकर बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना अहसास हो जाता था कि भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

## दादी जी दिल में किसी की, कोई बात नहीं रखती थीं

ऐसा ही दादी जी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी भी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर खुशी न जाए।



# दादी जी ने बाबा के सर्व गुण और कलाओं को अपने में समा लिया

—दादी रतनमोहिनी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका



हम तो दादी जी को शुरू से देखती आई हैं। जब से यज्ञ शुरू हुआ है तब से हम भी हैं और दादी जी भी हैं। थोड़ा-सा ही फरक रहा। यह हैदराबाद की बात है। दादी ओम् निवास में शुरू से ही आई हुई थीं।

## शुरू से ही दादी जी का लीडर का पार्ट रहा

ओम् निवास में जो भी छोटी-छोटी कुमारियाँ थीं, जैसे लच्छू बहन, ईशू बहन तथा गुलज़ार दादी भी थीं उनकी संभाल करने की ज़िम्मेदारी बाबा ने दादी जी को ही दी थी। गुलज़ार दादी उस समय 9 साल की थी, बाकी सब बहुत छोटी-छोटी थीं। दादी जी का पार्ट शुरू से ही बाबा के साथ-साथ यज्ञसेवा में सहयोगी बनने का रहा है। बाबा अपनी ज़िम्मेदारियाँ दादी जी को दिया करता था, साथ-साथ उनको सिखाता जाता था। आप समझ सकते हैं कि जब बाबा के साथ-साथ पार्ट बजाया है तो स्वाभाविक ही उनके अन्दर बाप जैसा ही कार्य करने की शक्ति आ गई। कारोबार कैसे

चलाना है, किस प्रकार बातचीत करनी है, किस प्रकार संभालना है वो सब कला दादी में आ गई। जैसे बाबा के अन्दर फीलिंग थी कि यह मेरा ही परिवार है, ये मेरे ही बच्चे हैं, ऐसे दादी के अन्दर भी, देखा जाये तो वही भावना रही। जब भी किसी से मिलती तो उनकी यही भावना होती थी कि यह मेरा ही परिवार है। बाबा का परिवार अर्थात् मेरा परिवार। दादी जी में सबके प्रति अपनापन होने के कारण सभी को भी दादी के प्रति अपनापन आता था, सब समझते थे कि दादी हमारी है।

## दादी जी ने बाप समान सबकी पालना की

शुरू से ही कोई भी सेवा हो, बाबा दादी को ही भेजते थे। कहीं से भी निमंत्रण आये, दादी को ही भेजा जाता था। आप सबको पता है कि पहले-पहले जापान से निमंत्रण आया। उसमें भी पहला पार्ट दादी जी का रहा। बाबा समान सबको पालना देना, सबकी बातें समाना, सबके ऊपर ध्यान देना, ये सब दादी जी करती थीं। मधुबन आने वालों के लिए ठीक प्रबन्ध करना, प्रबन्ध को देखना, यह सब दादी खुद करती थीं जैसेकि साकार बाबा स्वयं करते थे। रात को जब सब पार्टी वाले विश्राम करते थे तब बाबा दादी जी को और हमको भेजते थे कि जाओ बच्चे, जाकर देखो, सब ठीक-ठाक आराम से सोये हैं, उनके लिए सब सुविधाएँ हैं? फिर बाबा हमसे पूछता था, क्या समाचार है? उसी प्रकार, दादी जी ने भी बाबा जैसी पालना सबको दी और बाप के गुणों को भी अपने में धारण किया।

## दादी जी बाबा समान बड़ी दिल वाली थीं

जैसे बाबा की दिल बड़ी थी, सबको खुलकर देना, खिलाना, पिलाना, खुश करना आदि करते थे ऐसे ही दादी जी की भी सबके प्रति बड़ी दिल थी। किसी को कुछ चाहिए होता तो वो माँगने से पहले ही दे देती थीं। समझती थीं कि यह बाबा का बच्चा है, बाबा के घर सो अपने घर में आया है, उसको हर सुविधा मिलनी चाहिए। समझो, आज

की दुनिया के हिसाब से कोई साहूकार बाबा के घर में आया, वो अपने घर में कैसे रहता होगा, वो सोचकर ज़्यादा से ज़्यादा सुविधा देने का प्रयत्न करती थीं। बाबा कहा करते थे कि अगर आये हुए बच्चों को हम ठीक प्रबन्ध नहीं देंगे तो उनको यहाँ आकर अपना लौकिक घर याद आएगा। इसलिए बच्चों को ऐसा प्रबन्ध देना चाहिए कि उनको लौकिक घर, माँ-बाप, मित्र-संबंधी आदि याद न आयें। जो जैसा होता था, उसके अनुसार प्रबन्ध खुद बाबा जाकर करवाता था। उसी प्रकार, दादी जी भी ऐसे किसी मेहमान के आने से पहले ही सारे प्रबन्ध देखती थीं और कराती थीं।

शुरू से ही बाबा के साथ रहने का, बाबा के साथ यज्ञसेवा करने का पार्ट दादी का रहा है। दादी को देखने का, उनके साथ रहने का, उनके साथ सेवा में सहयोगी बनने का पार्ट हमारा भी रहा। बाबा के साथ मम्मा भी रहती थीं लेकिन बाबा के साथ सेवा में कम जाती थीं। मम्मा का यज्ञ में अपना रोल था, वे यज्ञमाता थीं, पूरे यज्ञ को संभालने की ज़िम्मेदारी मम्मा की थी लेकिन बाबा के साथ सेवा में बाहर जाना ज़्यादा दादी जी का ही होता था।

### दादी जी की प्युरिटी महान् थी

शुरू से ही हम देखते आये हैं कि दादी जी की प्युरिटी महान् थीं। हर प्रकार की प्युरिटी दादी जी में देखने में आती थी। किसी वस्तु, व्यक्ति, वैभव में दादी जी की आँख कभी डूबी नहीं। जहाँ प्युरिटी होती है, वहाँ हर प्रकार की सिद्धि आटोमेटिक होती है। प्युरिटी हर गुण का बीज है। जहाँ प्युरिटी होती है वहाँ सर्व गुण अपने आप आते हैं। उस हिसाब से दादी जी में हर गुण और शक्तियाँ अपने आप समाये हुए थे। साथ-साथ बाबा में जो कार्य करने की विधि और कलायें थीं वो भी आ गई थीं। हम उन क्वालिटीज को देखते भी रहते थे और सीखते भी रहते थे।



## दादी जी धरती पर फ़रिश्ता थीं

– ब्रह्माकुमारी पुष्पा बहन, पाण्डव भवन, दिल्ली

प्यारी दादी जी को मैं बाल्यकाल से ही देखती आ रही थी। यूँ तो मैं 9-10 वर्ष की आयु में प्यारे साकार बाबा और प्यारी मम्मा से भी मिली, गोद भी ली लेकिन आयु छोटी होने के कारण ख़ास बातें याद नहीं रहीं। दादी जी मुझे हमेशा बड़े प्यार से पुष्प कहके बुलाती थीं जो मुझे बहुत अच्छा लगता था और अपनेपन की, समीपता की बहुत भासना आती थी, यह पुष्प सम्बोधन मेरे दिल को अन्दर तक छू लेता था।



**उस समय मुझे दादी का चेहरा नहीं साकार**

**बाबा का ही चेहरा दिखायी दे रहा था**

जब मैं एम.ए. की पढ़ाई का लास्ट ईयर कर रही थी, मैं आलराउन्डर दादी जी के साथ मधुबन आई थी। दादी मनमोहिनी जी की हमारे सारे परिवार को राजौरी गार्डन सेन्टर में पालना मिली थी। दादी मनमोहिनी ने, आलराउन्डर दादी के साथ मुझे पाण्डव भवन दिल्ली में सेवार्थ जाने का निर्णय दिया। तब आलराउन्डर दादी जी और मैं बड़ी दादी जी से मिली और सुनाया कि ऐसे पाण्डव भवन में सेवा पर जा रही हूँ। तब दादी जी ने बड़े प्यार से छुट्टी दी और बहुत देर दृष्टि देने के बाद बातचीत करते हुए कहा कि यह समझदार है, बहुत गम्भीर है, लायक है। उस समय मुझे दादी का चेहरा नहीं दिखायी दे रहा था, साकार बाबा का ही चेहरा दिखायी दे रहा था। मेरे मुख से भी निकला, “जी बाबा”। बाल्यकाल में, साकार बाबा ने हमारा हाथ पकड़कर, बड़े प्यार से दृष्टि दी थी। ऐसा अहसास मुझे बाद में भी कई बार दादी जी के द्वारा हुआ। दादी जी के ये शब्द उस समय जैसे वरदान लग रहे थे क्योंकि मैं अपने को इतनी योग्य नहीं समझती थी। सचमुच, तब से इस आत्मा में एक हिम्मत और बल भर गया।

**दादी जी छोटे-बड़े सभी को अपनापन और बहुत मान देती थीं**

दादी जी के अंग-संग के अनेक अनुभव हैं, जिनसे हमने बहुत सीखा और जीवन में आगे बढ़ते रहे। प्यारी दादी जी के बोल, चाल, व्यवहार से कभी लगता ही नहीं था कि दादी स्वयं को चीफ़ समझ रही हैं या वो भान है। दादी जी एक बार विदेश से दिल्ली आयी, तब बड़े ही प्यार से आलराउन्डर दादी जी को गिफ़्ट दिया और कहा, यह आप अपनी सन्दल पर बिछाओ। वह बहुत सुन्दर झालर वाला बैड कवर था। दादी आलराउन्डर ने मुस्कराते हुए मना किया। दादी जी ने उसी क्षण स्वयं उसे खोलकर, अपने हाथों से दादी जी के पलंग पर बिछा दिया, फिर आलराउन्डर दादी को भी अपने हाथ से पकड़कर पलंग पर बिठा दिया और कहा, देखो, अब अच्छा लग रहा है ना! सचमुच दादी जी सबको इतना अपनापन और मान देती थीं जो सब-कुछ एक ही है, एक ही परिवार है, ऐसा दिखाई देता था।

टीचर्स बहनों की मधुबन में भट्टी थी और दादी जी पाण्डव भवन के मेडीटेशन हाल में हम सब बहनों को रास करवा रही थीं। थोड़ी ही बहिनें थीं, दो-तीन सर्कल बनाए थे। दादी जी जब हमारे सर्कल में आयीं तो मैं दादी जी के साथ रास करने लगी और दादी जी ने मुझे गले लगा लिया। वह इतनी सुखद अनुभूति और लवलीन अवस्था थी, सब-कुछ जैसे कि भूला हुआ था। अब तक इतने वर्षों बाद भी मैं उसी अनुभूति में खो जाती हूँ। दादी जी के नेत्रों से जैसे प्रेम की गंगा बह रही थी।

### **दादी जी की साधारण से साधारण बात में भी बड़ी ऊँची भावनाएँ समाई होती थीं**

दादी जी अक्सर सेवा-अर्थ देहली में आती ही थीं और पाण्डव भवन में रुकती थीं। एक बार जैसे ही हाल में कार्यक्रम पूरा हुआ दादी जी बरामदे में आकर बैठीं, सभी वापिस जा रहे थे। तभी एक परिवार की 5 वर्ष की बच्ची और 3 वर्ष का उसका भाई, बरामदे में आने की कोशिश कर रहे थे। वहाँ दो स्टैप थे चढ़ने के, छोटा बच्चा चढ़ नहीं पा रहा था। बच्ची ने अपने भाई को उठा लिया, पर ठीक से उठा नहीं पा रही थी। जैसे-तैसे उसे छाती से लगाकर स्टैप चढ़कर बरामदे में आ गयी कि कहीं मेरा भाई गिर न जाये। दादी यह सब बड़े ही ध्यान से देख रही थीं। मैं दादी जी के पास ही खड़ी थी। दादी जी ने कहा, पुष्पा, देखा तुमने, कितना प्यार है इसको अपने भाई से। यह है प्यार। जैसे दादी जी के उस कहने में भी गहरी भावनाएँ थीं और बड़े ही राज से दादी जी यह सब कह रही थीं। हमने अनुभव किया कि दादी जी की साधारण से साधारण बात में भी बड़ी ऊँची भावनाएँ, बेहद दृष्टिकोण, विशाल हृदय और शुभ कामनाएँ समाई हुई होती थीं।

दादी जी को, मुरली सुनाते हुए मैंने कई बार सफ़ेद-सफ़ेद चमकते फ़रिश्ते के स्वरूप में देखा है। मैं कइयों को सुनाती भी थी कि आज दादी धरती पर फ़रिश्ता रूप थीं।



## दादी जी दैवी फुलवाड़ी की महामल्लिका थीं

—ब्रह्माकुमारी मीरा बहन, सान्ताक्रुज, मुंबई

हमारे जीवन में दादी जी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही। हमारा जीवन दादी जी के कारण असीम लाभान्वित हुआ। पन्द्रह साल की उम्र में मैं ज्ञान में आयी और उसके थोड़े समय बाद ही दादी जी के सान्निध्य में आ गयी। मुझे 48 वर्षों से उनके मार्गदर्शन में अविस्मरणीय अनुभव हुए। जब भी मैं दादी जी से मिलती थी तो महसूस होता था कि दादी सचमुच दादी माँ हैं। हमेशा उनसे अपनापन महसूस हुआ। दादी जी जब भी मुंबई में आती थीं तो हर बार मैं उन्हें मिलती थी।

### दादी जी का हर बोल वरदान ही था

सन् 1975 में शिवरात्रि के आस-पास सान्ताक्रुज (पूर्व) के नये सेन्टर का उद्घाटन कार्यक्रम था। कार्यक्रम में मुंबई के सभी बी.के. भाई-बहनें आये थे। दादी जी ने उस समय मेरे सिर पर हाथ रखकर वरदान दिया कि खूब सेवा करो, यहाँ पर खूब सेवा होगी। उनके वो वचन कितने सार्थक रहे, वो आज नज़र आ रहा है। उस दिन उन्होंने मुझे हार भी पहनाया, उस समय इतनी खुशी हुई जिसका बयान शब्दों में करना मुश्किल है। उसके बाद बहुत ज़्यादा संख्या में भाई-बहनें आने लगे। उन्हें देखकर दादी जी कहती थीं कि मीरा, यह सान्ताक्रुज सेन्टर, तीन सेन्टर के बराबर है।

### दादी जी को देख आनन्द के स्रोत का अनुभव होता था

दादी जी बहुत प्यार से हमारी परवरिश करती थीं। दादी जी की हर्षितमुखता तो बेमिसाल थी। हमने हमेशा उनको प्रसन्नचित्त ही पाया है। दादी जी नम्रता का एक दिव्य आदर्श थीं। सर्वगुणों की खान दादी जी में प्रेम और नियम का समन्वय हमने हमेशा देखा। उन्हें देखकर आनन्द के स्रोत का अनुभव होता था। जब भी मैं दादी जी से मिलने जाती थी तो उनके दिल का दरवाज़ा सदैव खुला पाया। उनके व्यक्तित्व की यही सबसे बड़ी बात थी। दादी जी का नूरानी खुशनुमा चेहरा हम ब्राह्मणों के लिए सर्वोच्च आकर्षण था। उनका जीवन हम ब्रह्मावत्सों के लिए आदर्श उदाहरण है और रहेगा।

### उनकी दृष्टि में अदम्य शक्तियाँ छिपी रहती थीं

कांदीवली सेन्टर खुला, तो दादी जी जब ट्रेन से आया करती थीं तो मैं उन्हें लेने-छोड़ने स्टेशन पर जाती थी। तब उनके बहुत प्यार का अनुभव किया करती थी। मेरे चेहरे पर प्यार से हाथ फेरती थीं तो ऐसा अनुभव होता था कि दादी जी कितनी साफ़ दिल की हैं ! उनकी दृष्टि में छिपी हुई अदम्य शक्तियों का अहसास होता था। बड़ों के साथ बड़ी, छोटों के साथ छोटी – ऐसी ममता की मूर्ति थीं दादी जी। दादी जी अपनी दिव्य आभा, विशाल बुद्धि, मुग्ध मुखमंडल, शक्तिशाली दृष्टि से सबको निहाल कर देती थीं

जब भी हम मधुबन जाते तो जब तक दादी जी से नहीं मिलते तब तक चैन नहीं आता था। एक बार मुझे मधुबन से मुंबई जाने के लिए जल्दी में निकलना पड़ा, तो दादी जी ने बहनों से पूछा, मीरा चली गई? इतना ध्यान रखती थीं। उनकी इतनी समीपता के कारण यह अहसास होता था कि ये मेरी दादी जी हैं। इतने लोगों में दादी ने मुझे याद किया।

दादी जी का मुरली क्लास इतना मधुर और रमणीक होता था कि लगता था, चात्रक की तरह सुनते ही रहें। सुबह की क्लास जब वे कराती थीं तब सब खुशी में झूम उठते थे। मुरली के बाद दादी दोनों हाथ हिलाकर ऐसी दृष्टि देती थीं कि अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता था।

### दादी जी सबकी प्रेरणास्रोत थीं

दादी जी की मधुर हँसी अभी तक कानों में गूँजती है। सारा दिन उन में ज्ञान का चिन्तन चलता था। ज्ञान-रंगों से चित्रांकित उनकी वो भोली मुस्कराहट, योग-तपस्या की प्रकाश-रश्मियाँ बिखेरते उनके निर्मल नयनों की हमारे दिल पर गहरी छाप लगी है। एक बार जो भी दादी जी से मिला, उसके हृदय में दादी जी की अमिट छाप लग जाती थी। उनके प्यार और मार्गदर्शन ने मुझे आध्यात्मिक मार्ग की ओर अग्रसर किया।

दादी जी मेरे अलौकिक जीवन की सिर्फ दाता ही नहीं लेकिन पुरुषार्थ के लिए मार्गदर्शिका और भाग्य-विधाता भी थीं। रूहानी खुशी और मौलाई मस्ती की प्रतीक दादी जी मेरे लिए सदैव आदर्श हैं। दादी जी न केवल प्रकाश का पुंज थीं बल्कि उन्होंने विश्व के विभिन्न भागों से हीरे चुनकर उन्हें सुनहरे युग की स्थापना में सहयोगी बनाया।

### दादी जी को देखकर अलौकिक अनुभूतियाँ होती थीं

दादी जी का चेहरा उनके मन का दर्पण था। पग-पग पर सद्भावना, श्रेष्ठ विचार उनसे हमें मिलते थे। सेवा के लिए दादी जी हमारे में बहुत उमंग, उत्साह और शक्ति भरती थीं। वी.आई.पी. और नये भाई-बहनों को लेकर जब हम शिविर में जाते थे तो बहुत प्यार से उनको शिक्षा देती थीं। उन भाई-बहनों को भी दादी जी को देखकर अलौकिक अनुभूतियाँ होती थीं।

### दादी जी की दृष्टि में भगवान के प्यार का अनुभव होता था

दादी जी ने हर एक ब्रह्मावत्स की बहुत दिल से एवं प्यार से पालना की। एक बार अव्यक्त बापदादा से मिलने हम पाण्डव भवन गये थे। उन्हीं दिनों मेरा जन्मदिन बीच में आया। मैंने तो किसी से कुछ कहा नहीं था लेकिन पता नहीं, दादी जी को कैसे खबर पड़ी कि मेरा जन्मदिन है, तो उन्होंने मेरे लिए बहुत बड़ा केक बनवाया और सभी भाई-बहनों के साथ केक काटकर उमंग-उत्साह से मेरा जन्मदिन मनाया। मैं तो आश्चर्य चकित हो गयी। मेरी ज़िन्दगी का यह अविस्मरणीय जन्मदिन था। इसे मैं कभी भूल नहीं पाऊँगी।

मैंने उनकी दृष्टि से भगवान के प्यार का अनुभव किया है। दादी जी कहा करती थीं, मेरे नयन में बाबा है, मेरे मुख पर बाबा है, मुझे बाबा ही चला रहा है, वही मुझे शक्ति दे रहा है। उनका दिव्यता सम्पन्न व्यक्तित्व हमें चुम्बक के जैसे आकर्षित करता था। उनके मुखमण्डल पर विलक्षण जादू था।

### वे खुदादोस्त थीं

दादी जी का आदर्श जीवन देखकर लगता था कि जीवन हो तो ऐसा हो। प्रेरणा आती थी कि हमें भी ऐसी ही गॉडली स्टुडेण्ड लाइफ रखनी है। उन्हें देखकर मुझमें अलौकिक ऊर्जा का प्रवाह बहता था। दादी जी “दैवी फुलवाड़ी की महामल्लिका” थीं, उनके संग में हम झूम उठते थे। हम तो मन में शिव बाबा से बातें (वार्तालाप) करते हैं लेकिन दादी जी को बाबा के कमरे में शिव बाबा से ऐसे वार्तालाप करते हुए हमने देखा है जैसे कि वे आपस में व्यक्त में बातें कर रहे हैं। ऐसी दिव्य विभूति दादी जी के बारे में जितना भी कहें, वो बहुत कम है।

## दादी जी का प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व था

—ब्रह्मकुमारी चंद्रिका बहन, महादेव नगर, अहमदाबाद

बात सन् 1966 की है। आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी कुछ सदस्यों के साथ मुम्बई से माऊंट आबू जा रही थीं। अहमदाबाद स्टेशन पर ट्रेन बदलनी थी जिस कारण मैं दादी जी के लिए चाय-नाश्ता आदि लेकर गई थी। ट्रेन रुकने पर मैं कम्पार्टमेंट के अंदर गई तो पाया कि दादी जी एक राशन से भरी बोरी पर बैठी थीं और साथी पार्टों को सीट पर बिठाया हुआ था। यह दृश्य देखते ही मुझे दादी जी की त्यागवृत्ति के प्रति बहुत ही सम्मान पैदा हुआ और उनके प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व को देखते हुए यह भाव पैदा हुआ कि मुझे इन दादी जी जैसा ही बनना है। हालांकि दादी जी से मेरा पूर्व परिचय नहीं हुआ था, पहली बार ही मिल रही थी परन्तु उनके प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व की झलक मेरे लिए अमिट बन गई।

### दादी जी मेरी प्रेरणा स्रोत थीं

दादी जी मुझ पर बहुत ही अपनेपन का अधिकार रखती थी। एक बार अव्यक्त बापदादा की पधरामनी होने वाली थी। हम सभी हिस्ट्री हॉल में बैठ गए थे। दादी जी ने मुझे अचानक बुलाया और कहा, चंद्रिका, तुम म्यूजियम की सर्विस पर जाओ, अभी वहाँ पर बहुत आवश्यकता है। दादी जी ने कहा और मैं चल पड़ी। मुझे लगता है, दादी जी की त्यागवृत्ति ने ही मेरे में त्याग का सदगुण भरा। उस दिन जब मैं म्यूजियम से वापस आई तो दादी जी ने मुझे बापदादा से मिलाया। तब बाबा ने मुझे वरदान दिया, “बच्ची बहुत चतुर है, त्याग का पद्मगुणा भाग्य जमा कर लिया।”

ऐसे ही एक अन्य प्रसंग है। मधुबन में कुमारियों की एक मास की ट्रेनिंग होने जा रही थी। मैं भी उस ट्रेनिंग के लिए आई थी। अव्यक्त बापदादा ने मुझ से पूछा, कौन-सा नम्बर लेंगी? मैंने जवाब दिया, फर्स्ट नम्बर। आश्चर्य की बात थी कि दूसरे दिन सुबह दादी कुमारका जी ने मुझे बुलाकर कहा, ‘तुम्हें ट्रेनिंग में नहीं रहना है, आज से तुम म्यूजियम सेवा पर जाओगी।’ एक सेकण्ड के लिए मेरे मन में आया, मेरी ट्रेनिंग का क्या होगा लेकिन फिर तुरन्त ही दादी जी की बात स्वीकार कर ली और लगातार म्यूजियम सर्विस पर जाती रही। यह थी दादी की त्याग करवाने की शक्ति।

जैसे मुझे दादी में परम विश्वास था, दादी जी का भी मेरे में पूर्ण निश्चय था कि चंद्रिका मेरे कहने पर चलेगी। एक बार दादी जी का मेरे पास पर्सनल लेटर आया – देखो चंद्रिका, बाबा का भावनगर का सेन्टर थोड़ा ढीला हो गया है। चन्दु बहन की माँ ने खोला है और चन्दु बहन अमेरिका गई हुई है। तो इस सेवाकेन्द्र को अच्छी तरह से, नारणपुरा के भाई-बहनों के सहयोग से उठाना है। दादी की यह आश तुम्हें पूरी करनी है। दादी जी के कहने पर इस सेवा को मैंने स्वीकार किया और लगातार डेढ़ साल तक पुरुषार्थ किया। फिर वहाँ 150 भाई-बहनों की नियमित क्लास होने लगी। मुझे लगता है कि दादी जी को आत्माओं की शक्ति की जबरदस्त परख थी और व्यक्तियों से काम कराने का गजब का तरीका भी था।

### दादी जी एक कुशल प्रशासिका रहीं

दादी जी किस तरह एक कुशल प्रशासिका रहीं उसका मुझे एक अद्भुत अनुभव हुआ। सन् 1974 में, अहमदाबाद में सेवा का एक नवीन प्रयोग बाबा ने करवाया जिसके लिए प्रथम तीन दिन पूर्णतया मौन में रही और प्रोजेक्ट का प्लानिंग किया। प्रोजेक्ट था राजयोग शिविर। एक ही साथ पाँच राजयोग शिविरों की तीन-तीन दिनों की शृंखला बनाई थी। इस राजयोग शिविर में जिन्होंने भाग लिया, उन्होंने बहुत ही अद्भुत अनुभव किये। किसी को ब्रह्मा

बाबा का साक्षात्कार हुआ, किसी ने ज्योति देखी। परम शांति का अनुभव तो सभी ने किया और जीवन में बदलाव लाने का बहुतों ने संकल्प किया। व्यसनों का त्याग, अशुद्ध भोजन का त्याग करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हुए। कइयों ने ब्रह्मचर्य व्रत और नियमित राजयोग का अभ्यास करने का संकल्प किया। मैंने यह सारा समाचार आदरणीया दादी जी को लिखकर के भेजा। समाचार पढ़ते ही दादी जी ने मुझे अपने पास मधुबन में बुलाया। उस समय यज्ञ की कुछ बड़ी निमित्त बहनों की मीटिंग थी। दादी जी ने मुझे कहा, तुम इन सभी को राजयोग शिविर कराओ। मैं संकोच कर रही थी क्योंकि उस समय मैं नई भी थी और उम्र भी बहुत छोटी थी। मात्र 23 साल की उम्र थी। दादी जी ने मनोहर दादी जी को मेरी बाजू में बिठाया और कहा, शिविर कराओ। मैंने दादी जी की आज्ञा का पालन किया। जब इन बड़ी बहनों ने शिविर के अनुभव दादी जी को सुनाए तो दादी जी ने मुझे कहा, अब तुम यहीं बैठ जाओ। इन सारे लेक्चर्स की पुस्तक लिखो और उसकी मार्गदर्शिका भी लिखो। मैंने करीब तीन दिन में दादी जी को यह सब तैयार करके दिया। दादी जी ने केवल दो दिन में उस पुस्तक की प्रिंटिंग करवा ली और उस समय जितनी भी टीचर्स थी, सभी को फ्री में सौगात दी। आवश्यक कार्य को समय देकर कितना जल्दी करना चाहिए, यह दादी जी से सीखने को मिला।

फिर दादी जी ने कहा, देखो चंद्रिका, यह नया भवन बन रहा है ना, इस राजयोग भवन में राजयोग शिविर ही चलेगी और राजयोग भवन तैयार होते ही मुझे आदेश दिया, अहमदाबाद से शिविर का ग्रुप लेकर आओ और यहाँ ही शिविर कराओ। तभी से दादी जी ने राजयोग शिविर प्रारंभ कराये।

### दादी नम्बरवन कैसे बनीं?

मेरे सौभाग्य की मैं जितनी महिमा करूँ, कम ही है। साकार बाबा ने मुझे और वेदान्ती बहन को आदरणीया दादी जी के साथ, उस समय के भारत के सभी सेवाकेन्द्रों के टूर पर भेजा था। आगरा, जयपुर, कानपुर, पटना, लखनऊ, उदयपुर, दिल्ली और मुम्बई आदि स्थानों का टूर दादी जी के साथ पूरा करने के बाद मैंने दादी जी से एक प्रश्न पूछा था, दादी जी, आप दादी जी कैसे बनीं? दादी जी ने कहा, यह भी कोई सवाल होता है? मैंने कहा, यही मेरा सवाल है और आपको जवाब देना होगा। तब दादी जी ने कहा, देखो चंद्रिका, बाबा को कोई भी नया कार्य कराना होता तो सभी में सभी से पूछता, यह काम कौन करेगा? सबसे पहले मैं हाथ खड़ा कर देती थी, चाहे वो काम मुझे नहीं भी आता हो। फिर उस कार्य के बारे में मम्मा से या बाबा से पूछ लेती थी। कार्य के प्रति तत्परता और बाबा के आदेश को तुरंत स्वीकार करने के सेवाभाव के आधार से दादी जी ने नंबरवन प्राप्त किया।

### दादी जी श्रेष्ठ तपस्विनी थीं

दादी जी श्रेष्ठ तपस्विनी थीं। लोगों के दिलों के भावों को जानकर, औरों को खुश करके स्वयं को मोल्ड करने वाली थीं। एक बार, अहमदाबाद में नवरंगपुरा विस्तार में भव्य मेले का आयोजन किया गया था। उद्घाटन के लिए गवर्नर आने वाले थे और दादी जी का भी आने का प्रोग्राम था लेकिन किसी कारण से दादी जी के आने का प्रोग्राम केन्सल हुआ और मेरे पास समाचार आया कि दादी जी नहीं आयेगी। मुझे थोड़ा धक्का-सा लगा। मैंने दादी जी को फोन किया, तब भी दादी जी ने कहा, सॉरी चंद्रिका, दादी नहीं आ सकेगी। दादी जी के ये शब्द सुनकर मैं कर भी क्या सकती थी लेकिन फिर मैंने प्यारे बाबा से बात की और बाबा को कहा, किसी भी हालत में आपको दादी को अहमदाबाद में लाना होगा। बाबा के साथ यह मेरी हठीली याद थी। दो दिन के बाद दादी जी का फोन आया, ठीक है चंद्रिका, दादी तुम्हारे पास आ जाएगी। हमें खुश करने के लिए दादी जी ने अपना प्रोग्राम बना ही लिया। ऐसी थीं हमारी दादी जी।

## साकार बाबा की कमी को कभी खलने नहीं दिया उस प्यार की देवी ने...

—ब्रह्माकुमारी सरोज बहन, कासगंज

दादी जी से मेरी पहली मुलाकात दिनांक 31 दिसम्बर, 1960 को हुई, जब मेरी आयु मात्र 7 वर्ष की थी। इस अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान-यज्ञ की प्रथम संचालिका, ज्ञानवीणा वादिनी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती जी और बड़ी दादी जी सहित 35 भाई-बहनों का एक ग्रुप मेरे लौकिक गाँव सीमद (करीमाबाद, उत्तर प्रदेश) में आया था। वहाँ प्रथम मिलन हुआ था इस करुणा की देवी के साथ। उस समय सोचा भी नहीं होगा कि मैं भी इन धवल वस्त्रधारियों के समान, परमात्मा शिव द्वारा इस ज्ञान-यज्ञ के लिए चुनी जाऊँगी। सन् 1962 में साकार बाबा से प्रथम स्नेहभरी मुलाकात का अवसर मिला।



### दादी जी को श्वेत वस्त्रों में ही रहना और सबको रखना पसन्द था

सन् 1969 में, मैं बाबा से मिलने के लिए अपने माता-पिता से छुट्टी लेकर मधुबन में आई। इसी अवसर पर दादी जी ने मुझे अपने साथ रख लिया। बहुत स्नेह से बाबा, दादी और दीदी मनमोहिनी के लिए भोग बनाने की सेवा का सुअवसर मुझ आत्मा को प्राप्त हुआ। आदरणीया दादी जी को श्वेत वस्त्रों में ही रहना और सबको रखना पसन्द था। रसोई घर में श्वेत वस्त्र सब्जी आदि से गंदे होते थे अतः एक बार सन्तरी दादी ने दादी जी से पूछा कि इसके कपड़े रसोई में जल्दी गन्दे हो जाते हैं, इसे रंगीन गाउन दे दूँ? इस पर दादी जी ने कहा कि भले ही दिन में तीन बार ड्रेस बदलनी पड़े लेकिन रंगीन गाउन नहीं। ईश्वरीय क्लास में भी रंगीन ड्रेस पहना हुआ कोई भी उन्हें अच्छा नहीं लगता था। कहती थीं, यह फ़रिश्तों की सभा है और फ़रिश्ते धवल हुआ करते हैं, रंगीन नहीं। उनसे जब किसी ने पूछा कि आप कौन-सी देवी हो तो उन्होंने कहा था कि मैं वैष्णो देवी हूँ। सचमुच आप सम्पूर्ण वैष्णव थीं।

### प्रशासन के समस्त गुण दादी जी में थे

प्रशासन के समस्त गुण दादी जी को शिव बाबा ने प्रदान कर दिये थे। वे हर विभाग में चक्कर लगाकर ज़रूर देखना पसन्द करती थीं। यहाँ तक कि रात में पहरे पर तैनात भाइयों के पास भी जाकर उनके हाल-चाल लेती थीं। जहाँ सेवा की आवश्यकता है वहाँ स्वयं हाज़िर हो जाती थीं। एक बार मैं किचन में अकेली ही गोलगप्पे बना रही थी तो दादी जी रोज़ की तरह ही आईं और मेरे साथ गोलगप्पे बेलने लगीं।

## दादी जी को क्रोध की अविद्या थी

दादी जी, स्नेह की प्रतिमूर्ति थीं। मैं इतना नज़दीक रही परन्तु याद नहीं कि मुझे कभी भी डाँटा हो। मुझे ही नहीं, मैंने तो उन्हें किसी पर भी क्रोध करते हुए नहीं देखा। चूँकि भोजन की ज़िम्मेदारी थी, एक बार उन्होंने मुझे गौर से देखा और मज़ाक में कहा, तू खुद तो पतली होती जा रही है और मुझे मोटा करना चाह रही है। मैं दूध-चाय पीना पसन्द नहीं करती थी इसलिए दादी जी ने, दीदी जी को मेरे लिए विशेष रूप से दूध आदि का ध्यान रखने को कहा।

## दादी जी ने ही मुझे सिन्धी पढ़ना, लिखना सिखाया

दादी जी ने ही मुझे सिन्धी पढ़ना, लिखना सिखाया। सिन्धी मुरली (साकार ईश्वरीय महावाक्य) लिखने की ज़िम्मेदारी भी दी। पहले आज की तरह छपाई के आधुनिक साधन तो नहीं थे। पहले मुरली साइक्लोस्टाइल होती थी, इससे पूर्व उसे स्टेंसिल काटकर तैयार करना होता था, यह भी मुझे सिखाया।

## दादी जी ने मुझे भारत के विभिन्न स्थानों पर सेवा करने का चान्स दिया

सन् 1971 में मेरी लगन को देखते हुए अभिभावकों ने मेरा हाथ दादी जी के हाथ में दे दिया, यही था मेरा यज्ञ-सेवा में समर्पण। प्रथम बार गुजरात में राजकोट सेवाकेन्द्र पर सेवार्थ मुझे दादी जी ने ही भेजा। एक वर्ष सेवा करने के बाद मैं आबू आई, फिर मद्रास सेवा के लिए भेजा गया। पुनः लौटने के बाद राजकोट गई। सन् 1977 में फर्रुखाबाद (उ.प्र.) सेवा के लिए भेजा। सन् 1980 से अभी तक कासगंज सेवाकेन्द्र पर बाबा ने सेवा की जिम्मेदारी सौंपी है।

## दादी जी हरेक का ध्यान रखती थी

हाँलाकि दादी जी सभी का ध्यान रखती थीं लेकिन समर्पित बहनों की आवश्यकताओं और सुविधाओं का खास ध्यान रखती थीं। पहली बार मैं अपने लौकिक घर गई, वहाँ से लौट रही थी तो ख़ूब बरसात हो रही थी, मारवाड़ के पास पुल बह गया था। यह संयोग ही था कि जैसे ही हमारा वाहन उस पुल से गुजरा, थोड़ी ही देर बाद वह पुल ढह गया। दादी जी ने मेरे मधुबन में लौटने के बाद यह गीत गाया – “वो दिन भी कितने प्यारे थे, ये दिन भी कितने प्यारे हैं।”

उन दिनों सेवाकेन्द्र पर कोई फोन आदि की सुविधा नहीं थी, मेरी आँख में हेब्रेज होने का पता जैसे ही दादी जी को लगा, उन्होंने तुरन्त लखनऊ, इलाहाबाद, कासगंज आदि स्थानों पर फोन करके, क्लास के भाई का फोन नंबर पता लगाकर मुझसे मेरा हाल-चाल पूछा और तुरन्त ही मधुबन पहुँचने के लिए कहा और अहमदाबाद में मेरी आँख का ऑपरेशन कराया।

## वो आखिरी राखी थी

जुलाई, 2007 में ही योग-भट्टी में मधुबन आना हुआ। तब क्या पता था कि इस बार की राखी उनके द्वारा आखिरी राखी होगी। उनके साथ के अनेकों नज़दीकी अनुभव स्मृति पटल पर आते ही नैन उस उदारमना की स्मृति में गीले हो जाते हैं। साकार बाबा की कमी को कभी खलने नहीं दिया उस प्यार की देवी ने।

# वाह, भाग्य विधाता की अनुपम रचना, दादी प्रकाशमणि जी!

—ब्रह्माकुमारी शोभा बहन, पणजी, गोवा

इस दुनिया में ऐसी भी महान् विभूतियाँ जन्म लेती हैं जो अपने पीछे बहुत सारी स्मृतियाँ, प्रेरणाएँ सबके लिए छोड़कर जाती हैं। ऐसे ही हैं हमारी अति प्यारी, अति मीठी आदरणीया डॉ. प्रकाशमणि दादी जी। दादी जी के बारे में क्या कहें, जितना भी कहना चाहें, लिखना चाहें, शब्द अधूरे हैं। दादी जी का जीवन संपूर्ण है, सार्थक है एवं प्रेरक है।

## उस हर्षितमुख को देख रास्ते की सारी थकावट मिट गई

मैंने दादी जी को सबसे पहले तब देखा जब मैं पहली बार बाबा से मिलने 1979 में, मधुबन गई थी। उस समय पाण्डव भवन के आँगन में कुर्सी पर बैठे हुए, रूहानी हर्षितमुख द्वारा दादी जी, आने वालों का स्वागत नयन मुलाक्रात से और कांध हिलाते हुए कर रही थीं। उनको देखते ही रास्ते की सारी थकावट मिट गई, मन खुशियों में झूम उठा – वाह! आते ही हमारे विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी के दर्शन और हर्षित चेहरे द्वारा ही स्वागत हुआ। वाह रे मेरा भाग्य, वाह भाग्यविधाता की अनुपम रचना! बहुत ही खुशी हुई।

उन दिनों दादी जी आते-जाते आँगन में मिलतीं, क्लास करातीं तो उस अपनेपन की भासना और खोये हुए परिवार से मिलने का आनंद कुछ और ही था। दादी जी के एक-एक शब्द में ऐसी ताकत थी जो पुराना भूलना और इस जीवन को अपना कभी कठिन नहीं लगा, और ही आश्चर्य लगता था कि दादी जी कैसे इन सबकी पालना करती हैं, कैसे हरेक से प्रेम से चलती हैं। दादी जी में कमाल का बेलेन्स था, लव और लॉ का, गंभीरता और रमणीकता का। यह एक-एक बात हमने बहुत नज़दीक से देखी।

## दादी-दीदी की जोड़ी...

जब शुरू-शुरू में हम बाबा से मिलने जाते थे तो विदाई के समय दादी जी और दीदी जी (मनमोहिनी जी) दोनों सबको बहुत ज्ञान रत्नों से सजाते, हँसाते, बहलाते और जब विदाई की टोली (बादाम, किसमिस, मिश्री) देने का समय आता था, तो दीदी जी बहुत स्नेह में डूबी हुई दृष्टि देतीं। दादी जी बहुत गंभीर तथा शक्ति रूप हो जाती थीं जो पूरे साल भर के लिए उन दोनों के स्नेह और शक्ति से भरी विदाई, बधाई महसूस होती। रोते भी रहते थे और खुशी में उड़ते भी रहते थे। भगवान तेरे घर का शृंगार जा रहा है... यह गीत सुनकर रोमांच होता था। अभी भी वह दृश्य याद करते हैं तो मन गद्गद होता है, दादी जी का शक्तिरूप सामने खड़ा हो जाता है, बहुत बड़े सहारे और शक्ति का अहसास होता है।

## दादी जी की भावना कितनी ऊँची थी...

कुछ साल पहले की बात मुझे याद आती है। मैं मधुबन में थी, वार्षिक मीटिंग चल रही थी। टीचर्स बहनें अपने अनुभव और सेवाओं के समाचार सुना रही थीं। दादी जी अध्यक्षीय स्थान पर थीं। बीच में ब्रेक के समय हम (मैं और कोल्हापुर की सुनंदा बहन जी) उस हॉल से उठकर बाहर जा रहे थे। अचानक सामने से दादी जी आ गईं। दादी जी ने हमें देखते ही, अपने दोनों हाथ हमारे हाथों से मिला दिए। स्नेह भरी दृष्टि देते, मुस्कराते

हुए कहा, “दादी को मालूम है, आप बहुत सेवा करते हो लेकिन सभा में सुनाते नहीं हो।” दादी जी के ये बोल सुनकर जैसे अंदर ही अंदर गद्गद हो गई। सचमुच, हम कभी सुनाते नहीं थे लेकिन दादी जी का एक-एक की तरफ़ कितना ध्यान और कितनी ऊँची भावना थी जो हरेक का उमंग-उत्साह बढ़ाकर आगे बढ़ाती रहती थीं।

### दादी जी तो बाप समान ऊँची हस्ती थीं

ऐसे ही वर्ष 2001 में दादी जी गोवा आयी थीं। दो बार दादी जी का गोवा आना केन्सल हुआ था। जब भी हम मधुवन में दादी जी से मिलते, भले ही हम गोवा दौरे के बारे में कुछ नहीं बोलते लेकिन दादी जी ही हमें याद दिलातीं, “दादी गोवा ज़रूर आयेगी।” ड्रामा अनुसार वह भी दिन आया जब दादी जी का गोवा में आगमन हुआ। सन् 2001 में, मार्च 27 से 31 तक गोवा में प्रोग्राम बना। चार दिन पूरे राज्य में उमंग-उत्साह और खुशियों का वातावरण रहा। एक-एक की तरफ़ दादी जी का ध्यान था। सेंटर की चीज़ों को भी बहुत ध्यान से देखतीं और अपनी अमूल्य राय भी देतीं। रात के भोजन के बाद मैं दादी जी के संग ऑगन में चक्कर लगा रही थी। कई बातें दादी जी मुझसे शेयर कर रही थीं। मेरा हाथ दादी जी के हाथ में था। अचानक ही मेरा हाथ थोड़ा-सा दबाते हुए और बड़े प्रेम से मेरी तरफ़ देखते हुए उन्होंने कहा, “शोभा, तुमने दादी को बहुत सुख दिया!” वह मुलायम हाथ का स्पर्श और वो शब्द अब भी कानों में गूँजते हैं तो खुशी से रोम खड़े हो जाते हैं ! उन सुखद यादों में मन खो जाता है, आँखों से प्यार के आँसू निकल आते हैं। समझ में नहीं आता, दादी जी को कौन-सी उपमा दूँ। ऐसा कोई नाम ही नहीं...। बहुत ऊँची बाप समान हस्ती थीं दादी जी!

### दादी जी, साकार के संग के अनुभव सुनाकर हमें भी साकार के साथ मिला देती थीं

एक शाम, गोवा में पब्लिक प्रोग्राम पूरा होने के बाद हम कलंगुट नामक एक सुंदर समुंद्र किनारे पर गये थे। वहीं कुर्सियाँ लगाकर बैठ गये। दादी जी ने साकार बाबा की बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनायीं। कराची के दिनों का सारा समाचार हमारी आँखों के सामने खड़ा किया। उस समय ऐसे महसूस हो रहा था कि जैसे साकार बाबा की ही पालना मिल रही है। उस शाम के बाद यह ख्याल कभी नहीं आया कि हमने साकार बाबा को नहीं देखा या साकार पालना नहीं ली!

### मुझे क्या पता था कि दादी जी का यह अंतिम दर्शन है

जब दादी जी की तबीयत ठीक नहीं रहती थी, वे अपने कोटेज में ही रहती थीं। तीन साल पहले, रक्षाबंधन के त्योहार के निमित्त हम दादी कोटेज में, दादी जी को राखी बाँधने के लक्ष्य से गयी थी। सवेरे 8.30 बजे थे। दादी जी कुर्सी पर बैठी थीं, साथ में मुन्नी बहन जी और मोहिनी दीदी जी भी थीं। दादी जी की आँखें बंद थीं। मुन्नी बहन जी ने दादी जी को बताया कि गोवा से बहुत सुंदर राखी आयी है। सुनते ही सेकण्ड में दादी जी ने अपनी आँखें खोलीं, राखी को निहारा, मेरी तरफ़ भी देखा, बहुत मीठी मुस्कान दी...। फिर अपनी पलकें बंद कर दीं, अपनी अव्यक्त, कर्मातीत अवस्था में, मौन की गुफ़ा में चली गईं। वह मीठी मुस्कान, शक्तिशाली दृष्टि अब भी खींचती है। मालूम नहीं था कि वह साकार में दादी जी की अंतिम दृष्टि होगी। अभी भी ऐसे ही अनुभव होता है कि दादी जी हर पल हमारे अंग-संग सूक्ष्म रूप में हैं और सारा कारोबार संभाल रही हैं।





## विश्व की आदर्श – दादी माँ

—ब्रह्माकुमारी सोमप्रभा बहन, सोलापुर

सन् 1974 में मैं सोलापुर में आयी और सेवा शुरू की। तब हर दिन का सेवा-समाचार मासिक-हिसाब सब दादी जी को मधुबन में भेजती थी। दादी जी के पत्र आते रहते थे। वे उमंग-उत्साह भरे पत्र पढ़कर हमारे पुरुषार्थ में चार चाँद लग जाते थे। उस समय नई-नई सेवाएँ विशेष रूप से चलती रहती थीं। जब भी हम मधुबन में जाते थे, दादी जी बड़े प्यार से हमसे मिलती थीं, रूहानी दृष्टि देती हुई कभी हाथ में हाथ मिलाती थीं, तो कभी गले लगाकर मिलती थीं। इस मुलाकात से हमारे सारे सफर की थकावट दूर हो जाती थी। दादी जी स्नेहपूर्वक कहती थी, 'कैसी हो, ठीक-ठाक हो, तबियत ठीक है, सफर में कुछ तकलीफ़ तो नहीं हुई?' दादी जी के ये स्नेह में भीगे हुए मधुर शब्द सुनते ही हमारा मन मोर की तरह खुशी से नाच उठता था, चेहरा फूल की तरह खिल जाता था। ऐसी थी हमारी ममतामयी दादी माँ !

### स्नेहमयी दादी माँ

साकार बाबा को मैंने नहीं देखा था। एक बार अचानक 18 जनवरी के दिन मैं मधुबन पहुँची थी। अव्यक्त दिन होने से वहाँ के वातावरण में रहने से बाबा की याद बहुत आती रही, इतनी आई कि आँखों से आँसू बहने लगे। मेरी अवस्था देखकर दादी जी ने मुझे अपने पास बुलाया, अपनी गोद में बिठाया, उन्होंने स्वयं रुमाल से मेरे आँसू पोंछे। उस समय मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि मैं साकार बाबा की गोद में बैठी हूँ और स्वयं बाबा मेरे आँसू पोंछ रहे हैं। ऐसी थी हमारी स्नेहमयी दादी माँ !

### शक्ति स्वरूपिणी दादी माँ

दादी जी की यह विशेषता थी कि मधुबन में रात को 9 से 10 बजे के दरम्यान सभी टीचर्स बहनों को अपने कमरे में बुलाकर स्वयं बाबा की मुरली पढ़कर सुनाती थी। इससे हमारा विचार सागर मंथन चलता था, ज्ञान का विकास हो जाता था। हर दिन सुबह दादी जी के कमरे में उन्हें गुड मॉर्निंग करने और रात को गुड नाईट करने जाते थे। दादी जी से मिलते ही खुशी होती थी, एक विशेष शक्ति का संचार होता था, आत्मा तेजःपुंज बन जाती थी दादी द्वारा, साकार पिताश्री ब्रह्मा बाबा से ही मिलन मनाया, ऐसी अनुभूति होती थी। साकार में स्वयं पिताश्री ब्रह्मा बाबा ही उतरकर आए हैं, ऐसा प्रतीत होता था। ऐसी थी हमारी शक्ति स्वरूपिणी दादी माँ !

### महादानी दादी माँ

वास्तव में सोलापुर एवं आस-पास के क्षेत्रों में सेवा की अभिवृद्धि हेतु दादी जी ही निमित्त बनीं। सोलापुर में सेवा शुरू होते ही वे हमें पत्रों द्वारा बीच-बीच में सेवा समाचार पूछती रहती थीं। हृदयपुष्पा दादी जी बीच-बीच में सोलापुर आकर यहाँ का सेवा समाचार दादी जी को सुनाती थीं। इन कारणों से सोलापुर के भाई-बहनों का दादी जी के साथ स्नेह जुड़ता गया और उनमें उमंग-उत्साह आ गया कि कोई न कोई सेवा द्वारा दादी को निमंत्रण देकर सोलापुर में बुलाना ही है। उस अनुसार दादी जी को निमंत्रण भी भेजा गया। बहुत बिज़ी होने के कारण कभी हाँ और कभी ना करते हुए दादी जी ने अंततः 24 अक्टूबर, 1976 में सोलापुर पधारने की स्वीकृति दे दी। हमने दादी जी के शुभ हस्तों से 'नव विश्व निर्माण' आध्यात्मिक मेला एवं राजयोग शिविर' का उद्घाटन कराने का कार्यक्रम निश्चित किया। हालाँकि दादी जी की स्वीकृति हमें 18 अक्टूबर, 1976 को अर्थात् 6 दिन पूर्व ही मिली थी। इन 6 दिनों के अंदर मेले की एवं अन्य सभी तैयारियाँ अतिशीघ्रता से पूर्ण की। इसके लिए महाराष्ट्र ज़ोन की इंचार्ज बृजइन्द्रा दादी जी ने मुंबई से

मेले के अनुभवी सेवाधारी भाई-बहनों को तुरंत सोलापुर भेजकर एवं हुबली से मृत्युंजय भाई ने पधारकर, मेले की सारी व्यवस्था कराकर अनमोल सहयोग दिया। फिर दादी जी ने 24 अक्टूबर, 1976 में सोलापुर पहुँचकर बड़े ही धूमधाम एवं उमंग-उत्साह से मेले का उद्घाटन किया। दूसरे दिन महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश एवं आस-पास के सेवाकेंद्रों से पधारे सभी भाई-बहनों को दादी जी ने ज्ञान-अमृत का पान कराकर, टोली खिलाकर, स्वयं रास कर और करवाकर बहुत ही उमंग-उत्साह भरा। दादी जी के साथ मोहिनी बहन जी, दिव्या बहन जी, चंद्रहास दादा आदि भी आए थे। दादी जी को सेवाकेंद्र देखकर बहुत अच्छा लगा। दादी जी ने तुरंत भोग का सेट, भोग के लिए सुंदर रूमाल तथा अन्य चीजें सौगात में दी। फिर भी दादी जी मुझे घड़ी-घड़ी पूछती रही, 'सोमप्रभा, बाबा के घर के लिए और कुछ चाहिए, तो बताओ?' मैंने कहा, दादी जी, आप आए, इसमें ही हमें सब-कुछ मिला और कुछ नहीं चाहिए। इस पर भी दादी जी ने अपने-आप देखकर, चंद्रहास दादा को बाज़ार में भेजकर टेबल फेन, दीवार की घड़ी मँगवाकर सौगात के रूप में दिए (अभी तक भी मैंने इन चीजों को संभालकर रखा है)।

### उदारमयी दादी माँ

मुझे विदेश में यानि कि मॉरीशस में सेवा के लिए भेजने की प्रेरणामूर्त दादी जी ही रहीं। उन्होंने मुझे पत्र लिखकर मॉरीशस जाने के लिए ऑफर किया। इतना ही नहीं, मुझे तुरंत मधुबन में बुलाकर, अहमदाबाद भेजकर मेरा पासपोर्ट तैयार करवाया। वर्ष 1978 में मैं मॉरीशस सेवा के लिए गई। उसके पूर्व मैंने कभी भी प्लेन से सफ़र नहीं किया था, इसलिए मॉरीशस जाने के पूर्व दादी जी ने, बृजइन्द्रा दादी को कहकर रमेश भाई जी के साथ, मुंबई से दिल्ली तक का मेरा सफ़र प्लेन से करवाया। ऐसी थी हमारी उदारमूर्त दादी माँ !

### प्रेममयी दादी माँ

मॉरीशस तथा अन्य स्थानों पर 3 वर्षों तक सेवा करके भारत लौटने के पश्चात् अचानक उन्होंने मुझे फिर से सोलापुर की एरिया में सेवा करने हेतु भेजा। इसी बीच में, मधुबन में अंगूर की वाटिका जल जाने का समाचार मिला। उस समय सोलापुर के हिरेमठ भाई अंगूर की खेती करते थे, उनके साथ अंगूर के पौधे लेकर मैं सोलापुर की पार्टी के साथ मधुबन पहुँची। अंगूर के पौधे लेकर आई हुई सोलापुर की पार्टी को देखकर दादी जी को बेहद खुशी हुई। बड़े प्यार से दादी जी ने, मोहिनी बहन जी ने, निर्वैर भाई जी ने, रमेश भाई जी ने और मैंने आज के सुखधाम के पास की वाटिका में उन पौधों का रोपण किया। ऐसी थीं हमारी प्रेममयी दादी माँ !

### प्रकाशमयी दादी माँ

सन् 1986 में सोलापुर में दादी जी का दोबारा पधारना हुआ। उस समय सोलापुर के सम्राट चौक में नियोजित सेन्टर 'शिव प्रकाश भवन' का शिलान्यास दादी जी के कर कमलों द्वारा ही सम्पन्न हुआ। दादी जी अव्यक्त स्थिति को प्राप्त करने तक भी, स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी हम सभी टीचर बहनों को बहुत ही अच्छी बेहद की पालना देती रहीं। दादी जी चाहे मुंबई में, चाहे मधुबन में, या शांतिवन में हों, जहाँ-जहाँ भी हम दादी जी से मिलने जाते, वे बड़े प्यार से हाथ में हाथ मिलाकर रूहानी दृष्टि देतीं। उनके द्वारा हम रूहानियत की, पवित्रता के किरणों की प्राप्ति का अनुभव करते, जिससे हमारी आत्मा में शक्ति एवं खुशी भर जाती। दादी जी अपने अंतिम समय तक और अभी भी प्रकाश-स्तम्भ बनकर मार्गदर्शन कर रही हैं। सचमुच, अपने नाम के अनुसार अपने कर्तव्यों एवं सुकर्मों से सारे विश्व में ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाली विश्व की आदर्श 'प्रकाशमणि' थी हमारी प्रकाशमयी दादी माँ !



## गुणों की खान, प्यारी दादी जी

—ब्रह्माकुमारी प्रेमलता बहन, देहरादून



सादगी, सरलता और सात्विकता की साक्षात् मूरत प्यारी दादी जी को, अंतर्राष्ट्रीय संस्थान की अध्यक्षता होते हुए भी अहंभाव छू भी नहीं पाया। उनका हर कर्म सर्व ब्राह्मणों के लिए अनुकरणीय था। दादी जी का पूरे जीवनकाल का हर क्षण सेवा में समर्पित था। छोटा-बड़ा चाहे कोई भी हो, सबकी सेवा में दिल व जान से तत्पर रहती थी। बाबा के बच्चे संसार के आगे उदाहरण स्वरूप बनें, यह उनका संकल्प रहता था। यज्ञ के लाखों ब्राह्मण होते हुए भी उनको हरेक बच्चे का पूरा-पूरा ध्यान रहता था।

### हरेक के प्रति दादी जी का ख्याल चलता था

एक बार मधुवन में मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं रहा, आवश्यक कार्य से मुझे वापिस भी आना पड़ा। दादी जी को इतना ओना था, देहरादून पहुँचते ही दादी जी का फोन आया कि ठीक से पहुँच गई हो? मैंने तो अभी फोन किया नहीं था, सोचा था कि करूँगी लेकिन दादी जी को एक-एक बच्चे का कितना ख्याल रहता था! ऐसी ममतामयी हमारी माँ थी प्यारी दादी जी।

### संतों के प्रति दादी जी को अगाध प्यार था

दादी जी को पूरे विश्व की हर वर्ग की आत्माओं की सेवा करने का उमंग-उत्साह रहता था। बच्चों में भी उमंग-उत्साह भरती रहती थीं। हरिद्वार सेवाकेंद्र की स्थापना का संकल्प दादी जी का था। मैंने दादी से कहा, 'तीर्थ स्थानों पर कोई विशेष सेवा तो होती नहीं है, समय प्रति समय हम देहरादून से जाकर हरिद्वार की सेवा तो करते ही रहते हैं।' लेकिन, दादी जी का इतना पॉवरफुल संकल्प था कि चाहे कोई सेवा हो या ना हो परन्तु यह सेंटर धर्मसत्ता के लिए दर्पण का काम करेगा। अब प्रत्यक्ष हम अनुभव करते हैं कि दादी जी का वो संकल्प प्रैक्टिकल में धर्मसत्ता की सेवा करने के निमित्त बना हुआ है। संतों के प्रति दादी जी को अगाध प्यार था। सभी संत, बाबा के घर में आये, इसी चाहना से हर साल दादी जी संत-सम्मेलन आयोजित करती थी और स्वयं उनके हर प्रोग्राम व व्यवस्था का ध्यान रखती थीं कि किसी भी तरह से उन्हें कोई असुविधा न हो। इतना आदर-सम्मान उनको देती थीं कि आज भी संत बड़े प्यार से दादी माँ को याद करते हैं।

### दादी जी के लिए सब समान थे

एक तरफ़ उनके हृदय में प्यार का सागर हिलोरे लेता था, तो दूसरी तरफ संयम, नियम और मर्यादा का उन्हें पूर्ण ध्यान रहता था। स्वयं हर मर्यादा का सख्ती से पालन करती थीं और चाहती थीं कि सब भी बाबा की बताई

मर्यादाओं पर पूर्णतः चलकर महान् बनें। दादी जी का शिक्षा देने का तरीका इतना सुंदर था कि बिना किसी की कमी को बताये उसको उसकी कमी का एहसास करा देती थीं। सहनशीलता की प्रतिमूर्ति थीं। कोई कैसा भी व्यवहार करे, बात करे- दादी जी कभी उत्तेजित नहीं होती थीं। उसी रूहानी स्नेह से बात करती थीं, जैसे उसने कुछ कहा ही नहीं है। उनकी वाणी व व्यवहार में रिंचक मात्र भी अंतर नहीं आता था। इतनी महान् पदवी पर होते हुए भी यज्ञ के छोटे से छोटे व्यक्ति से भी ऐसे मिलती थीं जैसे माँ अपने बच्चों से मिलती है। जिस प्रकार माँ के लिए कोई छोटा-बड़ा नहीं होता, वैसे उनके लिए भी सब बच्चे समान थे।

### दादी जी के संकल्प में सदैव सफलता रही

बद्रीनाथ से दिल्ली तक की पदयात्रा के अवसर पर सर्वे करने वालों ने दादी जी को बताया कि यह रास्ता खतरनाक है। हिमालय की ऊँची चोटियों और गहरी घाटियों के बीच से पदयात्रा निकालना सुरक्षित नहीं है। दादी जी ने मेरे से पूछा कि आपका क्या विचार है? मैंने कहा, दादी जी, आपका शुभ संकल्प है तो सब ठीक ही रहेगा और हम पदयात्रा ज़रूर करेंगे। आपका शुभ संकल्प सब पदयात्रियों को शक्ति प्रदान करता रहेगा। दादी जी ने अपने शुभ आशीर्वादों सहित पदयात्रा की स्वीकृति दी और पूरी यात्रा के बीच-बीच में फोन करके पूछती रहीं कि सब यात्री ठीक है? पदयात्रा के मोदी नगर पहुँचने पर दादी जी सब पदयात्रियों से मिलने विशेष मोदी नगर आयीं और पदयात्रियों के स्वास्थ्य को देख दादी जी बहुत प्रसन्न हुईं और सबको वरदानी दृष्टि देते हुए कहा, आप लोग तो और ही डट्टे-मुट्टे (हैल्दी) हो गए हो। ऐसी थी हमारी ममता की मूर्ति दादी जी, उनके जितने गुण गायें उतने ही कम हैं।



## प्रेरणा-प्रोत्साहन की प्रतिमूर्ति – दादी जी

–ब्रह्माकुमारी दिव्या बहन, बोरीवली, मुंबई

बोरीवली स्थित सेवाकेंद्र पर हमारे साथ कला दादी रहती थी। उनका स्वास्थ्य नाजुक रहता था। शारीरिक कमजोरी के कारण कर्मेन्द्रियों पर उनका कंट्रोल नहीं रह पाता था। ऐसी परिस्थिति के बावजूद भी कला दादी की एक बार मधुबन जाने की तीव्र इच्छा थी। ड्रामा अनुसार इस तीव्र इच्छा की पूर्ति के लिए मैं निमित्त बनीं।

चुनौती स्वीकार करते हुए, विकट शारीरिक अवस्था में, कला दादी को अपने साथ मधुबन लेकर आयी और मधुबन में दादी जी के प्रोत्साहन भरे बोल मेरे जीवन के अविस्मरणीय पल बन गए। दादी जी ने कहा, 'दिव्या, सचमुच तुम श्रवण हो।' आज मैं कहती हूँ, "दादी, अपने दिव्यगुणों और कर्तव्य से आप अमर हैं!"

### विश्व की महान् विभूति

एक और प्रसंग याद आ रहा है, मुझे पहली बार पार्टी लेकर मधुबन जाना था। यह कार्य मुझे बहुत ही मुश्किल लग रहा था। मैं यह ज़िम्मेवारी निभा पाऊंगी, ऐसा मुझे आत्मविश्वास नहीं था। मुंबई से कला दादी ने हिम्मत भरते हुए मुझे आबू भेज दिया। मधुबन में दादी जी जानती थीं कि मैं पहली बार पार्टी लेकर आई हूँ। जब दादी जी से मेरी मुलाकात हुई, एक माँ के समान मेरा ख्याल करते हुए उन्होंने मुझसे पूछा, 'दिव्या, सब ठीक है? कुछ मदद चाहिए, कुछ तकलीफ हो तो निःसंकोच बताना।'

विश्व की महान् विभूतियों में अपना स्थान प्राप्त करने वाली हस्ती होते हुए भी मुझ छोटी कुमारी का इतना ख्याल करना, ऐसी निर्मानता ही दादी जी की महानता का बयान करती है।

### शक्ति-स्वरूपा दादी जी को सलाम !

दादी जी के शक्ति स्वरूप का प्रत्यक्ष प्रमाण बोरीवली स्थित प्रभु उपवन, राजयोग रिट्रीट सेंटर है। बोरीवली में सेवाओं की वृद्धि को देखते हुए, हम सभी के साथ-साथ दादी जी का भी यह शुभ संकल्प रहा कि इस स्थान पर ब्राह्मण परिवार की सुव्यवस्थित पालना हेतु एक बड़ा सेवा स्थान होना चाहिए। लेकिन, मुंबई जैसे शहर में एक भवन का निर्माण करना, यह कार्य किसी चुनौती से कम नहीं था। यह एक ऐसा शुभ कार्य था, जिसकी सम्पन्नता के पूर्व कई परीक्षाओं को पार करना पड़ा। ज्ञान-योग की शक्ति से कई विघ्न तो पार हो गए, पर कुछेक ऐसी अड़चनें भी थीं, जिन्हें बड़ों के सहयोग के बिना पार करना असम्भव प्रतीत होता था।

ऐसी विकट परिस्थिति में दादी जी की छत्रछाया ने मुझे शीतलता प्रदान की। एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की मुख्य प्रशासिका होते हुए भी मैंने दादी जी के चरित्र में सदैव निर्मानता देखी। पर यह वो क्षण थे जब मैंने शक्ति स्वरूपा दादी जी को अपनी ऑथोरिटी यूज करते देखा। मुझमें असीम विश्वास रखते हुए दादी जी ने मुझे अपने दृढ़ निर्णय का सहारा दिया और उस निर्णयात्मक मोड़ पर दादी जी के समर्थ निर्णय ने एक जादुई चिराग की भाँति सभी बंद दरवाज़े खोल दिए।



# दादी जी तीनों स्वरूपों की स्वरूपा थीं

—ब्रह्माकुमारी आरती बहन, इंदौर



दादी प्रकाशमणि जी जैसा नाम वैसा काम करने वाली थीं। सबके जीवन में प्रकाश फैलाने वाली थीं। जो भी उनसे मिलता उस आत्मा का जीवन ज्ञान प्रकाश से आलोकित हो जाता। उनका यही प्रयास रहता था कि जो भी परमपिता परमात्मा शिव के द्वारा स्थापित इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आया है, वह संतुष्ट होकर जाए। वे हर आत्मा की पालना बहुत प्यार से करती थीं।

## उनसे मिलते ही कुछ नया करने की प्रेरणा मिलती थी

मैंने दादी जी को बहुत नजदीक से देखा है, उनकी ममतामयी पालना का अनुभव किया है। जब मैंने प्रथम टीचर ट्रेनिंग माउण्ट आबू में पूरी की, तब स्वयं दादी जी एवं दीदी मनमोहिनी जी ने मुझे कहा कि आरती, तुम्हें ईश्वरीय सेवा के लिए इंदौर जाना है। मैंने तुरंत कहा, दादी जी, जैसी आपकी आज्ञा। मैं इंदौर आ गई। दादी जी के वरदानी आदेशों का यह परिणाम है कि आज इंदौर ज़ोन में विशाल पैमाने में ईश्वरीय सेवा का कार्य चल रहा है। वास्तव में दादी जी की परख शक्ति बहुत ही तेज थी, वो हर व्यक्ति को देखकर जान जाती थीं कि इसमें क्या विशेषता है और उसका किस प्रकार से मानव कल्याण के लिए उपयोग किया जाए। मैं जब भी दादी जी को मिलने जाती, उनमें एक सम्पूर्ण मातृत्व का अनुभव करती। बहुत प्यार से दादी जी एक माँ की तरह पूछतीं, अच्छे से आए, रास्ते में कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई। वे छोटी से छोटी बात का भी ध्यान रखती थीं। उनसे मिलते ही नया उमंग-उत्साह आ जाता था। कुछ नया करने की प्रेरणा मिल जाती थी। दादी जी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे कोई भी ग़लती को अपने चित्त पर नहीं रखती थीं। हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहीं। उनके चेहरे से एक अलौकिक दिव्य प्रकाश झलकता रहता, जो साकार बाबा का अनुभव कराता था।

## उनको अपने पद का रिचक मात्र भी अभिमान नहीं था

सन् 1983 की बात है। वाराणसी से एक महामंडलेश्वर जी मधुबन पधारे थे। उस समय प्रातः क्लास में उनका आगमन हुआ। दादी जी क्लास करा रही थीं। महामंडलेश्वर जी का परिचय देने के लिए शीलू बहन मंच पर आईं। उस समय एक संदल पर महामंडलेश्वर जी विराजमान थे और एक संदल पर स्वयं दादी जी। दादी जी ने उसी समय शीलू बहन को कहा कि आप मेरे पास आकर बैठो। शीलू बहन ने दादी जी के पास बैठकर महामंडलेश्वर जी का परिचय दिया। इसके बाद महामंडलेश्वर जी ने अपना अनुभव सुनाया और अंत में कहा कि

दादी जी वास्तव में बहुत ही निर्मानचित्त हैं। उन्होंने कहा कि मेरे आश्रम में कोई भी शिष्य मेरे पास बैठ नहीं सकता और ना ही पास से निकल सकता है परंतु दादी जी तो इतनी महान् हैं कि बहन जी को अपने पास ही बैठा लिया। साथ ही महामंडलेश्वर जी ने कहा कि दादी जी बहुत ही साधारण श्वेत वस्त्र पहनती हैं और मैं कीमती रेशम के वस्त्र पहनता हूँ।

### वे जितनी अच्छी ममतामयी माँ थीं, उतनी ही अच्छी सखी थीं

मधुबन में जब हम बहनों की भट्टी होती तो दादी जी हम सब बहनों को ऐसे मिलतीं जैसे कि एक सखी, दूसरी सखी से मिलती है और अपनी हर बात हमसे ऐसे शेयर करतीं जैसे वे हमारी हमउम्र हों। उनमें यह बहुत अच्छी विशेषता थी कि वे सबके साथ घुलमिल जाती थीं। हमारे लिए तो वे बहुत सुंदर ममतामयी माँ और मीठी सखी ही थीं। साथ में बड़ी बहन बनकर हर बात इशारे से समझा देती थीं, कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।

### उनके अंदर बाबा को प्रत्यक्ष करने की लगन बड़ी तीव्र थी

उनको बाबा की मुरली से अति प्यार था और मुरली को वे उसी ढंग से सुनातीं जैसे कोयल की कूक अर्थात् उनकी वाणी बहुत ही मीठी थी। उनके अंदर बाबा को प्रत्यक्ष करने की लगन बड़ी तीव्र थी। दादी जी को देखकर हमें भी बड़े-बड़े कार्य करने की प्रेरणा मिलती रही। दादी जी को हम जब भी कोई प्रोग्राम सुनाते तो बड़े प्यार से और बड़े ध्यान से सुनतीं, जैसे एक माँ अपने छोटे बच्चे की हर बात बड़े ध्यान से सुनती और बड़ी सरलता से, प्यार से उसका निर्णय सुनातीं। उनके अंदर जजमेंट पॉवर बहुत अच्छी थी और जज करके तुरंत निर्णय देना, यह उनकी बहुत अच्छी विशेषता थी।

### उनके तीन स्वरूप

दादी जी के अंदर निर्माणता, निर्मल वाणी और निमित्त भाव स्पष्ट अनुभव होते थे। वे हमेशा निमित्त समझकर हर कार्य करती थीं। हमेशा कहा करती थीं: कराने वाला करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है, हम तो सिर्फ निमित्त हैं। बाबा ने जो तीन शब्द अंत में उच्चारें थे – निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी, तीनों स्वरूपों को दादी जी ने प्रैक्टिकल करके दिखाया।

आज भी जब मैं प्रकाश-स्तम्भ के सामने जाकर बैठती हूँ तो एक नया अनुभव, नई प्रेरणा प्राप्त करती हूँ। ऐसी महान् ममतामयी, करुणामयी, विश्व को प्रकाशित करने वाली दादी प्रकाशमणि जी को मेरा कोटि-कोटि नमन!



## दादी जी, अजब आत्म-विश्वास की स्वामिनी

-ब्रह्माकुमारी डॉ. निरंजना बहन, अलकापुरी, बड़ौदा

एक बार पांडव भवन में स्नातक (ग्रेजुएट) कुमारियों की भट्टी चल रही थी। हरिद्वार से कुछ संन्यासी आश्रम की मुलाकात के लिए आये थे। उन्होंने हमारी क्लास को देखा, फिर आकर के दादी जी से बातचीत करते हुए कहा, 'आपने इन भोली-भाली बच्चियों को भरमाकर रख लिया है। इन्होंने कहाँ संसार देखा है?' दादी जी ने कहा, 'देखो, मैं आपके सामने बैठी हूँ। आप वहाँ से किसी भी कुमारी को बुलाओ, आपको जो पूछना है, पूछ सकते हैं।' दो-तीन बहनों को बुलाया गया, उसमें मैं भी थी। दादी जी के सामने ही एक संन्यासी इंटरव्यू ले रहा था। अनेक प्रश्न पूछ रहा था। दादी जी केवल मधुर स्मृति के साथ देख रही थी। सभी प्रश्नों के संतोषजनक जवाब सुनकर वे संन्यासी खुश हो गए। दादी जी के प्रति सम्मान से उनका सिर झुक गया!

### देह और देह से उपराम साक्षी स्थिति की अभ्यासी

एक बार की बात है, दादी जी को मैं रूम से लेकर मुरली क्लास की ओर जा रही थी। दादी जी बाहर आर्यीं तो दादी जी को थोड़ा चक्कर-सा आया। मैंने पकड़ कर सोफे पर बैठा दिया। तुरंत डॉक्टर को फोन किया, वे आ गए। कुछ बड़े-भाई बहनें भी आये। डॉक्टर ने देखा, कुछ ट्रीटमेंट दिया। आधे घण्टे में सब सामान्य हो गया। दादी जी को कमरे में सुला दिया। मैं दादी जी के पास बैठ गई। दादी जी ने घूम करके मेरे सामने देखा, फिर कहा, निरंजना देखा, दादी का नाटक ! एकदम खुशमिजाज !! दुःख-दर्द या कुछ हुआ भी है उसकी कोई रेखा चेहरे पर नहीं !

### दिल को छू लेने वाला प्यार और सम्भाल

सन् 1973 की बात है। दिल्ली में रामलीला मैदान में मेला लगना था। मेले की तैयारी के लिए गुजरात से हम सेवा में गए थे। रात के करीब 8 बज गए थे। दादी जी वहाँ ग्राउण्ड में चक्कर लगाने आयी थीं। हमें देखा, पूछा, आप लोग कैसे वापस जाएंगे? कोई व्यवस्था हुई नहीं थी। गुलज़ार दादी जी भी साथ में थीं। उन्होंने कहा, दादी, इनकी व्यवस्था कर देंगे, आप चलिए। दादी जी तो वहाँ ही बैठ गई। बोली, नहीं, जब तक इन कुमारियों की व्यवस्था नहीं होती, हम नहीं जाएंगी। हमारी गाड़ी में पहले इनको भेज दो, फिर जाएंगे। मैं तो गद्गद हो उठी। ये था ममतामयी माँ का दिल का प्यार और पालना !

### बेजोड़ सरलता और ज्ञान की स्पष्टता

सन् 1970 की बात है। मैं मधुबन गई थी। दोपहर के समय पर पांडव भवन के आँगन में अकेली बैठ करके कुछ पढ़ रही थी। दादी जी अपने रूम से बाहर निकल आईं। मुझसे पूछा, 'क्यों नींद नहीं करनी है?' मैंने कहा, 'दादी जी, मुझे दोपहर में नींद की आदत नहीं।' दादी जी भी वहाँ ही मेरे साथ बैठ गईं। मुझे लगा, ऐसा मौका कहाँ मिलेगा। मैंने दादी जी से एक प्रश्न पूछा। दादी जी वहाँ ही जैसे की गहराई में चली गईं। मेरे से कहा, देखो, सागर में पनडुब्बी लेकर लोग जाते हैं ना। जैसे ही गहराई में जाएंगे, प्रेशर का अनुभव होगा। उसी प्रकार हम जितना बाबा की याद में गहराई में जाते हैं शांति के शक्तिशाली प्रकम्पनों का हमें अनुभव होता है। उस समय ही मुझे समझ में आया और गहन शांति का अनुभव भी हुआ जो आज भी स्मृति में अंकित है।





# दादी जी का जीवन औरों के लिए समर्पित था

—ब्रह्माकुमारी सुषमा बहन, जामनगर

यह भारत भूमि धन्य है, जिस पर अनेक महान् हस्तियों का जन्म हुआ। महान् हस्तियों ने बड़े होकर सत्य की वा परमात्मा की खोज की और दुनिया में बहुत बड़ा नाम कमाया। लेकिन इस धरती पर एक ऐसी विभूति ने भी जन्म लिया जिसको स्वयं भगवान ने तलाशा वा परखा और उनका नाम रखा – प्रकाशमणि, जो नाम वास्तविक रूप में खरा उतरा। आगे चलकर वे कहलाई 'दादी प्रकाशमणि।'

## वे जितनी महान् थीं उतनी नम्र थीं

दादी जी वास्तव में बहुमुखी प्रतिभाशाली थीं। उनका जीवन औरों के लिए समर्पित था। जितनी महान् उतनी नम्र थीं। उनके व्यक्तित्व में रूहानी आकर्षण था। जो भी उनसे मिलता था, प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। वे सभी के दिलों पर राज्य करने वाली थीं। चाहे छोटा हो, जवान हो या वृद्ध भी क्यों न हो, हरेक दादी जी को चाहता था।

## वे सबसे समानता का व्यवहार करती थीं

जैसे सूर्य का प्रकाश हरेक व्यक्ति के लिए समान होता है वैसे ही दादी भी थीं। दादी जी देश-विदेश की सेवार्थ जहाँ भी गईं, हरेक के दिल से 'मेरी दादी माँ' यही शब्द निकलता था। अलग-अलग धर्म वा जाति वाले लोगों से मिलना होता था, फिर भी अपनी विशेषता के कारण वे सबसे समानता का व्यवहार करती थीं

## दादी जी बहुत ही सरल व साफ़ दिल वाली थीं

वे सबकी परेशानी को सहज तरीके से सुलझा देती थीं, फिर भी कभी किसी के अवगुण को अपने दिल में स्थान नहीं देती थीं अर्थात् यह व्यक्ति ऐसा है वा वैसा है – यह भाव दादी जी के दिल में नहीं था। इतने बड़े यज्ञ का कारोबार सम्भालने के निमित्त थीं लेकिन कभी यह नहीं सोचा कि मैं सम्भालती हूँ। दादी जी के मुख से कभी मैं शब्द नहीं निकला। सदैव कहते रहे – बाबा कहते हैं, बाबा करा रहे हैं। बाबा को ही समर्पित करके चलते रहे।

## ज़िम्मेवारी सम्भालते हुए भी अपनी पढ़ाई कम नहीं होने देती थीं

दादी जी की शिक्षा में क्षमा भाव भी समाया रहता था, जिससे ग़लती करने वाला, ग़लती को सहज ही स्वीकार कर लेता था। जितना प्यार दादी जी को बाबा से था, उतना ही प्यार मुरलीधर की मुरली से भी था। इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी सम्भालते हुए भी अपनी पढ़ाई कम नहीं होने देती थीं।

## वे ब्रह्मा बाप समान ही थीं

दादी जी बहुत रमणीक भी थीं। बड़प्पन होते भी दादी सबके लिए दादी थीं। हर छोटे-बड़ों की बात को सम्मान देती थीं। दादी जी ब्रह्मा बाप समान ही थीं। दादी जी बाप के कदम पर कदम रखकर चलती थीं, इसलिए पूरे यज्ञ को, इतने बड़े संगठन को भी साथ लेकर चलीं।

## सबको खुशी मिले, सब आगे बढ़ें, बस दादी जी यही चाहती थीं

दादी जी सभी की बातों को स्वीकार करती थी। ऐसे ही एक बार द्वारका म्यूज़ियम के लिए दादी जी ने हाँ कर दी। लेकिन, मई 1996 में दादी जी की अचानक तबीयत खराब होने के कारण दादी जी ओपनिंग में नहीं आ सकीं और उसी वक्त दादी चंद्रमणि जी को ओपनिंग के लिए बुलाया। एक महीने के बाद दादी जी के स्वास्थ्य में सुधार हुआ, तब दादी जी द्वारका ओपनिंग के लिए आ गईं। इस तरह से दादी जी किसी की बात को हाँ करके छोड़ती नहीं थीं। सबको खुशी मिले, सब आगे बढ़ें, बस दादी जी यही चाहती थीं।



## दादी जी के बोल, हस्त और दृष्टि वरदानी थे

—ब्रह्माकुमारी रानी बहन, मुजफ्फरपुर

एक बार मैं पांडव भवन में अकेली ही रिफ्रेश होने आई थीं। सर्दी का मौसम था। प्रातः क्लास के बाद हिस्ट्री हॉल के बाहर मैं बैठ गई थी। धूप भी थी, सभी से मिलना भी हो रहा था। दादी जी अपने मीटिंग रूम में पार्टियों से मिलती और बीच में बाहर भी आती। दादी जी दो बार बाहर आईं और हर बार मुझे बैठा हुआ देखा, तो दादी जी ने मुझे बुलाया और कहा, रानी, मैं जब बाहर आईं तुम्हें बैठा देखा। मैंने कहा, दादी जी, मैं अकेली आई हूँ इसलिए यहाँ बैठकर सभी से मिल रही हूँ। दादी जी ने कहा, नहीं-नहीं, तुम्हें किसी बात की चिंता हो गई है। मैंने कहा, दादी...। दादी ने कहा, तुम्हारे पास मकान बन रहा है ना, तुम्हें चिंता हो गई है और दादी जी ने ऐसा वरदानी हाथ सिर पर रखा और कहा, जाओ, कोई चिंता नहीं करो, बाबा का कार्य है, सब हो जाएगा। सो, मैंने देखा कि दादी जी दिल का हाल जानने वाली थीं। वास्तव में दादी जी के वरदानी हस्तों ने, दृष्टि ने कमाल कर दिया। फिर सेवाकेंद्र पर ऐसे सहयोगी रत्न आते गए। दादी जी ने कहा, हिम्मत रखी है ना, तो मदद बाबा की मिलती रहेगी। दादी जी के वरदान प्रैक्टिकल में, हर पल नज़ारा दिखा रहे हैं।

### निरंतर याद में रहने वाली दादी

मीठी दादी के साथ एक वर्ष मुंबई में रहने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। मैंने देखा कि दादी जी बहुत निरहंकारी और लाइट होकर रहती। एक दिन की बात है। दादी जी के सिर में दर्द हो रहा था। मैं सिर पर बाम लगा रही थी, अचानक दादी जी ने कहा, देखो रानी, बाबा मेरे सामने खड़ा है। फिर थोड़ी देर बाद रुककर दादी जी ने कहा, सारे दिन में कोई समय ऐसा नहीं होता जो बाबा मेरे सामने ना हो। दादी जी के वो महावाक्य ऐसे मेरे अंदर समा गए, जो मैं भी सारा दिन बाबा को अपने सामने देखने के पुरुषार्थ में लग गई। ऐसी मीठी दादी जी और बापदादा हर घड़ी मेरे साथ रहते हैं।

### क्रोधमुक्त, प्रसन्नचित्त दादी

जब मैं मुंबई में दादी के पास रहती थीं, मैंने देखा, दादी जी बहुत शांत और प्रेम की मूर्ति हैं। एक दिन रात्रि को मैंने दादी जी से पूछा, दादी जी, क्रोध नहीं आए, इसकी कोई युक्ति बताइये? दादी जी ने कहा, राजा की तरह रहो, राजा अपने ही ख्यालों में मस्त रहता है, इधर-उधर नहीं देखता। अपने ही लक्ष्य को लेकर चलो, बस क्रोध मिट जाएगा। दूसरा, उन्होंने कहा कि आगे बढ़ने के लिए सहनशक्ति हो, क्यूँ मैं आप पीछे से आगे निकल जाओ तो आगे वाले आपको बोलेंगे ही, अगर आप सहन कर लेगी तो आगे ही रहोगी। यह शक्ति धारण करने से मीठे बन जाएंगे। मैं समझती हूँ दादी जी 10-12 प्वाइंट मुझे समझाती गई कि कैसे चलो जो शीतलता का अवतार बन जाओ।

मधुरता की खान आदरणीया दादी जी क्रोधमुक्त रहकर सदा प्रसन्नचित्त रहीं। हर परिस्थिति में इसकी वे प्रत्यक्ष मिसाल रहीं।



# ज्वेल इन द क्राउन ऑफ ब्रह्माकुमारीज़

—ब्रह्माकुमारी मनोरमा बहन, इलाहाबाद



वो रहनुमा दादी जी, अद्भुत प्रेरक शक्ति थीं। सच कहूँ तो दादी जी के बारे में लिखना मुश्किल कार्य है। मन में स्मृतियों के मेघ घुमड़ने लगते हैं, अनेक प्रसंगों की विद्युत चमकने लगती है।

## ईश्वर की दिव्य प्रतिकृति थीं दादी जी

उन्होंने अपने जीवन में निर्मानता को व्यवहारिक जामा पहनाया, किसी भी कृत्य को 'मैं' शब्द नहीं दिया। मगरूरियत का मुजाहिरा नहीं हुआ। वे विनम्रता का साकार रूप थीं। हमेशा कहती थीं, बाबा करन-करावनहार है।

## प्रीति निर्झरा दादी माँ स्नेह का अजस्र स्रोत थीं

स्नेह उनके हर आचरण में झलकता था। कभी पल भर विस्मृति नहीं हुई – न बाबा के प्रति और ना कभी यज्ञ के प्रति। दादी जी अनेकों बार कॉटेज के दरवाज़े पर आकर खड़ी हो जातीं। आते-जाते लोग तुरंत चुम्बकीय आकर्षण में बंधकर जहाँ के तहाँ रुक जाते। तपस्या धाम किस तपस्वी की यादगार है, स्वयं साकार होता गया।

## विश्व वंदनीया दादी जी

दादी जी का कुशल प्रबन्धन देख लगता था, समय उनकी आज्ञानुसार बंधा है, वो नहीं। घड़ियों की सूई यथास्थान तब पहुँचती जब वह आसन पर वाणी सुनाने बैठ जाती थीं। हर सेवाकेंद्र की बहन से नाम सहित परिचित होना, एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। बहनों के चेहरे खिल जाते थे, हर भाई-बहन की दादी जी अपनी थी। वो स्वयं को विशेष कृपापात्र और समीप मानकर चलता। श्रद्धा-विश्वास दो सूत्र थे जो पंगू को चला देते। विशाल यज्ञ में एक नहीं, अनेक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुए। उन्हें सदैव जागरूक और अथक देखा। उनके स्नेह की अंजली से सुधा पान करते अनेकों बार संतों, विद्वानों,

वैज्ञानिकों को देखा। वे दादी जी के सम्मुख शिशुवत् हो जाते थे। विश्व वंदनीया दादी जी सदैव दोनों कर कमलों से जी भर स्नेह व सम्मान लुटातीं।

### संकट विमोचक दादी जी

दया, करुणा, क्षमा ऐसी कि सदैव संकट मोचक बन समाधान स्वरूप बन जातीं, तपते मन को शीतल कर जातीं। जब कभी प्रकृति विद्रुप बनकर कष्ट देने लगती, राजस्थान की मरुभूमि के मूक जानवर तड़प रहे होते तो ऐसे समय पर दादी जी टूक भरवा-भरवाकर चारा पहुँचातीं। कच्छ-भुज के भूकम्प में मेडिकल रिलीफ़ टूकों में भरकर अन्न, जल व अन्य आवश्यक सुविधाएँ ब्रह्मावत्सों द्वारा भिजवाईं। गुजरात ही नहीं वरन् हर स्थान पर सक्रिय सहयोग किया, बाढ़ पीड़ितों को भी पार लगाया।

### ईश्वरीय सेवाओं के नित नए साधनों के द्वार खोलतीं

अरावली की पर्वत शृंखलाओं पर ही ज्ञान सरोवर बना हो ऐसा नहीं, दिल्ली में विशालकाय 'पद्म सरोवर' (ओ.आर.सी.), हैदराबाद में 'शांति सरोवर', और भी देश के विभिन्न स्थानों पर आपने रिट्रीट सेंटर खुलवाये। लाखों के जनसमुदाय में ईश्वरीय ज्ञान की बरसात सहजता से करतीं, श्रेय-प्रेय सर्व अन्य आत्माओं को देतीं। उनकी इन्हीं क्रिया-कलापों के आधार पर उदयपुर के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

अगर व्यक्तिगत बात करूँ तो जैसे भगवान को कहते हैं, 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देव'। मेरे लिए दादी जी सर्वस्व थीं। मैंने बहुत अंतरंग स्नेह पाया, जीवन के विभिन्न चित्र सामने आते हैं।

### पप्पू पास हो गया

महामहिम ज्ञानी जैलसिंह जी का अभिनंदन पत्र बनाना था। यह जिम्मेवारी मुझे दी गई। मैंने लिखा, मन बार-बार पीछे हटता। आशा बहन जी प्रोत्साहित करतीं, लिखो मनोरमा, बाबा करवा रहा है। हमारे वरिष्ठ राजयोगी निर्वैर भाई जी कहते – घबराना नहीं, ये लेटर पैड ले जाओ, ऑपरेशन होगा, अनेक बार लिखना पड़ेगा, सफलता मिलेगी। मैं श्रद्धा-विश्वास का दामन थामकर लिखकर दादी जी के सम्मुख ले गई। दादी पढ़ती गई, मुस्कराती गई और कहा, मनोरमा। बड़ी पक्की हिन्दी है, ज़रा और छोटा करो। मैं अंदर से गद्गद। आज दादी जी स्वयं करेक्शन दे रही हैं। मैं धन्य हो गई, जब दादी जी ने पास कर दिया तो निश्चय हो गया कि हो गई। वरिष्ठ लेखक राजयोगी जगदीश भाई जी की नज़रों से गुजरा, अन्य वरिष्ठजनों की मुहर लगी। मुझे इतनी खुशी मिली – 'पप्पू पास हो गया।'

### मेरे लिए यह बहुत बड़ा अवार्ड था

एक बार मैं युवा प्रभाग की कांफ्रेंस का मंचन करके दादी जी के साथ पांडव भवन आई। दादी जी ने पांडव भवन के आँगन में खड़े होकर कहा, मनोरमा हमारी बेस्ट कन्डेक्ट करती है। शायद मैं कोई अन्य अवार्ड पाकर प्रसन्न नहीं होती, मेरे लिए यह बहुत बड़ा अवार्ड था।

## दादी की नहीं, बाबा की नज़रें मुझ पर पड़ रही हैं

मुझे याद आता है, मैं यू.पी. के इटावा जनपथ से बी.ए. कर रही थी। दादी जी कलकत्ते से वापिस आबू जा रही थीं। स्टेशन पर हम सब मिलने गए। मेरे कल्चरल एक्टीविटी, मोनो प्ले, मिमीक्रीज़ के कार्यक्रमों में ग्राम्य भाषा अवधी, भोजपुरी का पुट होता तो कहतीं – ‘बिहारी बाबू, तुम्हें मॉरीशियस भेज दूँ, जाओगी?’ मुझे लगा, दादी की नहीं, बाबा की नज़रें मुझ पर पड़ रही हैं।

## अद्भुत थी उनकी पारखी दृष्टि

उनके दो बोल भी अमृत समान जीवन दान दे जाते। युवा प्रभाग में मैं सक्रिय कार्यकर्ता रही। मीडिया प्रभाग ने चाहा कि मनोरमा बहन हमें दे दी जाए। दादी जी बड़े प्रेम से कहतीं, हाँ-हाँ, मनोरमा को ले लो, लेख व कविताएँ लिखती है ना। दोनों विंग का कार्य करे। लेकिन फिर मुझे धार्मिक प्रभाग की सेवा में व्यवस्थित कर दिया गया, अद्भुत थी उनकी पारखी दृष्टि। मुझे लगता था हमारी दादी जी, हमसे कुछ भी कहे, हम उसे पूरा कर उनकी आशाओं पर खरे उतरें।

## दादी जी का महान् प्रज्ञा शक्ति सम्पन्न व्यक्तित्व था

कानपुर में मैंने सन् 1964 में मम्मा की गोद ली थी। उस समय मेरी आयु 10 वर्ष की थी। बाबा को भी दिल्ली में देखा लेकिन दादी जी की पालना को तो मैं कभी भी भूल नहीं सकती। जब मैं दादी जी के साथ मंच पर होती तो ऐसा लगता कि मैं बाबा के साथ हूँ, महान् प्रज्ञा शक्ति सम्पन्न व्यक्तित्व।

## मुझे ऐसे लगता था कि मेरे ईष्ट ने बुलाया है

एक बात और कहना चाहूँगी। एक बार दादी जी कायिक रूप से अस्वस्थ थीं। मधुबन में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन था। पहले मुझे निमंत्रण दादी जी के नाम से ही जाते थे और मैं दौड़ी चली आती थी। लोग कहा करते थे, इलाहाबाद और आबू एक कर दिया है। मुझे ऐसे लगता था कि मेरे ईष्ट ने बुलाया है।

उस कांफ्रेंस के तहत जब मैं स्टेशन पर पहुँची तो समाचार मिला कि दादी जी अस्वस्थ हैं। पांडव भवन पहुँचने पर व्यवस्था देख रहे वरिष्ठ भाई जी ने कहा, आप आ गईं, आपका नाम कई स्थानों पर रखा गया है। मैंने वाक्य पूरा किया – अब कहीं नहीं। वो मुस्कराये। मैंने कहा, मैं योग करने आयी हूँ, दादी जी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें।

मुझे दादी जी ने कहा, मनोरमा, कवि सम्मेलन तुम ही मंचन करो, मैं सुनने आऊँगी। उन दिनों एक डॉक्टर पीछे खड़ा रहता था, फिर भी दादी जी व्हील चेयर पर काव्य गोष्ठी में पधारी थीं। मैंने सरस्वती के वरद पुत्रों से पुनः दादी जी के सम्मुख उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ पढ़वायी।



# दादी जी तो सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली थीं

—ब्रह्माकुमारी राज बहन, जालंधर

अति मीठी प्यारी दादी जी बाबा की अनन्य बच्चा तो थी हीं परन्तु पुरुषार्थ करते-करते हमारे देखते-देखते वे बापसमान सम्पूर्ण बनकर एडवांस पार्टी में जाकर हम सबको तीव्र पुरुषार्थी बनकर सम्पूर्ण बनाने के निमित्त बन गईं। सारा जीवन दादी जी अथक बनकर ज्ञान रत्नों से सबकी झोली भरती रहीं। अंत में भी हम सबने दादी जी के प्रश्न-उत्तर पढ़े। दादी जी का फ्राक दिल और विशाल बुद्धि थी। उनके प्यार को तो हम सबने बरसते हुए देखा है। उनको देखते ही हरेक को यही फील होता था कि दादी मेरी है। हमने देखा, दादी जी के हर कर्म से आध्यात्मिक शक्ति झलकती थी, जिसके कारण कठिन से कठिन कार्य को दादी जी ने सहज करके दिखाया।

## दादी जी ऐसी चमत्कारी आत्मा थीं, ऐसे लगता था उनके साथ कोई विशेष शक्ति है

हमने मम्मा-बाबा की भी खूब पालना ली परन्तु कभी नहीं सोचा था कि साकार में इनसे अलग होंगे। बाबा के अव्यक्त होने के बाद दादी और दीदी दोनों ने एक मत होकर सारे यज्ञ का कारोबार सुचारु रूप से संभाला। साकार में बाबा से ली हुई प्यार और पालना का प्रत्यक्ष सबूत दिखाया। वंडर तो यह देखा कि जो प्यार बाबा ने साकार में हमको दिया, दीदी और दादी ने भी प्यार और पालना देने में कभी कमी नहीं महसूस होने दी। दीदी के अव्यक्त होने के बाद तो दादी जी ने सूक्ष्म में उनका सहयोग लेकर डायरेक्ट सर्व शक्तिवान बाप को कम्बाईड रखकर कुशल प्रशासिका बनकर विश्व की सेवाओं को बढ़ाते हुए बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए तीव्र पुरुषार्थ की उड़ान में चार चांद लगा दिए। दादी जी की इस ऊँची स्थिति को बनते हुए हमने अपनी आँखों से देखा है। सन् 1975-76 की बात है, दादी जी का जालंधर में एक विशेष प्रोग्राम पर आना हुआ, जिसमें पी.ए.पी. का बैण्ड बजाकर दादी जी का भव्य स्वागत किया गया था। दादी जी ऐसी चमत्कारी आत्मा थीं, उनके आने पर न जाने कहाँ-कहाँ से गाड़ियाँ भर-भरकर आ रही थीं। कैसे दादी जी का प्यार चुम्बक की तरह सबको अपनी तरफ खींचता था। दादी जी के आने पर कोई न कोई ऐसा नवीन कार्य ज़रूर होता था, जो हमने सपने में भी नहीं सोचा हो और सेवाएँ सहज ही हो जाती थीं। ऐसे लगता था, उनके साथ कोई विशेष शक्ति है जो प्रोग्राम में विशेष मदद करती है। हम तो खुशी और नशे में ऐसे मस्त होते थे, सेवाओं में न जाने कैसे अच्छी सफलता प्राप्त होती थी।

## दादी जी ने हमें अविनाशी अमानत दी है

दादी जी के लिए एक विशेष प्रकार का बैज बनवाया था जिसका डिजाईन आर्मी बैज की तरह था। अंदर में शिवबाबा का डिजाईन था। दादी जी मुझे राज नहीं कहती थीं, राजि कहकर बुलाती थीं। दादी जी जब बाम्बे-कलकत्ता टूर पर गईं, तो वहाँ सब दादी जी से पूछने लगे कि दादी, ये नए प्रकार का बैज कहाँ बनवाया? तो दादी कहतीं, राजि, तूने कैसा नए डिजाईन का बैज बनवाया, सब मुझे पूछने लगे, दादी बैज कहाँ से बनवाया? खैर, मुख से तो क्या कहना था, दिल और दिमाग तो आज दिन तक कह रहा है कि दादी जी ने अविनाशी अमानत दी है शिक्षाओं और प्रेरणाओं की, अमिट छाप लगाई है जिसका वर्णन भी नहीं कर सकते, बाकी हम तो क्या आपको दे सकते हैं, जो पहले ही सागर के समान भरपूर है। हमारी झोली तो आपने अनन्य अमूल्य रत्नों से भरी है।

## आज भी ऐसे महसूस होता है कि उनकी दिव्य शक्ति हमको पल-पल हिम्मत और प्रेरणाएं दे रही है

जीवन में अनेक कड़ी परीक्षाएँ आईं जिनको पार करने में असमर्थ समझते थे लेकिन मीठी-प्यारी दादी जी ने ममतामयी माँ बनकर पर्सनली बैठकर ऐसी गहरी शिक्षाओं और अलौकिक शक्तियों से भरपूर किया और हल्का करके हर पेपर में पास करवा दिया। दादी माँ के उस अलौकिक प्यार को, अलौकिक शिक्षाओं को कदापि नहीं भूल सकते। आज भी ऐसे महसूस

होता है कि उनकी दिव्य शक्ति हमको पल-पल हिम्मत और प्रेरणाएं दे रही है, तो आखिर कैसे भूल सकते हैं ऐसी मीठी माँ को।

### दादी ऐसे-ऐसे हँसाती, बहलाती भी थीं

एक बार मैं दादी जी के साथ सैर करने जा रही थी, तो दादी जी ने पूछा, तुमको किसकी राजधानी में जाना है राधे की या कृष्ण की? मैंने कहा, दादी जी, मुझे तो मालूम नहीं, किसकी राजधानी में आऊँगी। दादी ने पूछा, तुम मम्मा से ज़्यादा प्यार करती हो या बाबा से? मैंने कहा, दोनों से। तो दादी ने कहा, दिल का सच्चा प्यार तो एक से होता है। अब बताओ, किससे दिल का नज़दीकी प्यार है? मैंने कहा, बाबा से ज़्यादा प्यार है। तो दादी ने कहा, तुम फिर कृष्ण की राजधानी में आओगी। दादी ऐसे-ऐसे हँसाती, बहलाती भी थीं।

### दादी जी एक्टिव भी थीं और रमणीक भी

जब मम्मा कहीं टूअर पर जातीं तो दादी, मम्मा के साथ होती थीं। जब पहली बार दादी और मम्मा जालंधर में आए थे तब प्लेन से फूल गिराकर दादी और मम्मा का स्वागत किया गया था। दादी बहुत एक्टिव थीं। एक बार मम्मा और दादी अमृतसर आए थे। जब मम्मा को वापस जाना था तो लोगों ने बहुत हंगामा किया, जाने का रास्ता ही रोक दिया। दादी जी को न जाने कहाँ से टचिंग आई। पुलिस स्टेशन का रास्ता तक नहीं देखा था, फिर भी अकेले पुलिस स्टेशन जाकर, अचानक पुलिस की चार गाड़ियों के साथ वहाँ मौके पर पहुँच गईं।

सब लोग रास्ते से इधर-उधर हट गए। कहाँ लोग विघ्न डाल रहे थे, कहाँ दादी जी की कमाल ने शिव शक्तियों की जय-जयकार करवाई। दादी जी की उस कमाल को देखकर सब हैरान हो गए। जाते समय मम्मा मुझे और शुक्ला बहन को साथ मधुबन ले जा रही थीं। मम्मा की विदाई के कारण सब बच्चे प्यार के आँसू बहा रहे थे, तो दादी गाड़ी में बैठकर मम्मा को हँसी में कहतीं, 'मम्मा, आप बड़े निर्मोही हो, सब आपके लिए आँसू बहा रहे हैं, आपको तो एक भी आँसू नहीं आया। ऐसे-ऐसे मम्मा और दादी भी आपस में हँसी-मजाक करते थे, रमणीकता से आपस में रहते थे।

जब बाबा के पास मधुबन पहुँचे। बाबा ने दादी और मम्मा से पूछा, क्या ले आई हो पंजाब से? मम्मा ने जवाब दिया, बाबा, दो फूल लाए हैं सौगात में (राज बहन और शुक्ला बहन)। दादी साथ में मुस्करा रही थीं क्योंकि दादी जी ने ही हमको प्रेरणा दी थीं साथ में चलने की।

### अन्त तक दादी जी की स्मरण शक्ति पॉवरफुल रहीं

कुछ समय पहले आखिरी समय पर जब दादी जी से मिलने गए, तो दादी जी की तबियत ठीक नहीं थी। लेकिन दादी जी की स्मरण शक्ति पॉवरफुल थी। हम 8-10 बहनें बैठी थीं। मुन्नी बहन ने कहा, दादी ये कौन हैं? दादी जी कहतीं, जालंधर की राजि है। यह सुनकर दिल कितना गद्गद् हुआ होगा। दादी जी की यादों की गहरी छाप लगी है जो दिल से मिट नहीं सकती।

हमें तो गर्व है कि ऐसे-ऐसे महारथियों की छत्रछाया में पलने का सुनहरा मौका मिला, जो कल्प-कल्प के लिए नूँध हो गई है। आज भी उन दिनों को याद करके खुशी और नशा उतरता नहीं। दादी जी ने क्या नहीं किया, वह तो सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली थी। उनका रिटर्न हम चुका नहीं सकते। इनकी कुर्बानियों को भूल कैसे सकते हैं? हम सबके लिए जो फल वाला वृक्ष तैयार कर दिया है, इसको सींचने में कितने विघ्नों का सामना किया होगा? इसमें दादी हर पल सफल रही हैं इसलिए कर्मातीत बनकर हम सबको सम्पूर्ण बनने का पाठ पढ़ाकर गई हैं।



# दादी जी सरल तथा निरंतर तपस्वीमूर्त थीं

—ब्रह्माकुमारी चंद्रिका बहन, हिम्मत नगर



मैं, बाबा के अव्यक्त होने के बाद सन् 1971 में मुंबई-कांदीवली से ज्ञान में आई। साकार बाबा, मम्मा की पालना नहीं मिली लेकिन प्यारी कुमारका दादी (दादी प्रकाशमणि जी) की पालना जो शुरू से अंत तक मिली, उसमें प्यारे बाबा, मम्मा की पालना का अनुभव किया। दादी जी बहुत पवित्र, सच्ची दिल, फ्राक दिल वाली थीं। उनका कन्याओं से बहुत प्यार था।

## दादी जी को देख, उन जैसे बनने की प्रबल प्रेरणा मिली

जब मैं पहली बार बाबा से मिलने मधुवन गई तो बाबा हिस्ट्री हॉल में ही मुरली सुनाने आते थे और इसी हॉल में हमें दादी जी सवेरे मुरली क्लास के बाद मिलीं, तो दादी जी से टोली, दृष्टि लेते समय ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे यही मेरी सच्ची माँ है और अब मुझे यहाँ ही

रहना है, लौकिक घर वापिस जाना ही नहीं है। फिर तो मेरे नयनों से प्यार के आँसू बहने लगे, जो मैं रोक न सकी। दादी जी ने मुझे गले लगाया और इतना प्यार दिया जो मैंने कभी पाया नहीं था लेकिन मेरे प्यार के आँसू बहते ही रहे। दादी जी ने मुझे बहुत पूछा कि जो भी बात है, बताओ लेकिन मैं कुछ बोल न सकी। दादी जी ने दादी शीलेन्द्रा जी से कहा कि बच्ची का दिल लेना। शीलेन्द्रा दादी जी ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और प्यार से पूछा, क्या दिल है? जो बात है वो बताओ। मैंने कहा, मुझे यहाँ समर्पण होना है। मेरी कॉलेज की पढ़ाई चल रही थी। लौकिक पिता का बहुत बंधन था। समर्पण का स्वीकृति-पत्र मिलने वाला नहीं था। इसलिए मुझे कहा गया कि अभी कॉलेज की पढ़ाई पूरी करके समर्पण होना। मैं घर में रहते पढ़ाई करते कांदीवली सेंटर पर दिन में सेवा करने लगी। जैसे ही बी.काम. की परीक्षा पूरी हुई, मैं 15 दिन के लिए अहमदाबाद घूमने के बहाने डायरेक्ट हिम्मतनगर सेवाकेन्द्र, (जो कांदीवली-मुंबई द्वारा खोला गया था), आ गई।

## दादी जी को देख लौकिक पिता जी भी पिघल गए

हमने आकर हिम्मत नगर में सेवा की शुरूआत की और वापस मुंबई नहीं गई। लौकिक बहन ज्योति भी आ गई (जो अभी खेडब्रह्मा सेवाकेंद्र सम्भाल रही हैं)। हिम्मतनगर में बहुत सेवा हुई, बहुत वी.आई.पी. ज्ञान में चलने लगे। पिताजी हमें ढूँढ़ते हुए माउण्ट आबू पहुँचे, तो म्यूज़ियम में प्रतिभा बहन (मुंबई-कांदीवली) से मिले। उनसे पिता जी ने पूछा, हमारी बच्ची कहाँ है? बहुत गुस्से में थे। प्रतिभा बहन ने बहुत प्यार से समझाकर खातिरी की। प्यारी



दादी जी से मिलाने का वायदा किया। सभी बातें दादी जी को फोन से बताकर पिताजी को पांडव भवन में दादी जी के पास भेजा। दादी जी ने प्यार से पिता जी की बातें सुनी, समझाया और बहुत आदर-सम्मान किया। अपने साथ भोजन कराया, इतना प्यार दिया जो पिता जी पिघल गए। दादी जी ने कहा कि 6 मास में हिम्मतनगर की सेवा करके आपकी बच्ची मुंबई आ जाएगी, पिता जी मान गए। फिर हिम्मतनगर का पता दिया और पिता जी हिम्मतनगर हमें मिलने आए और क्लास के भाइयों से मिलकर आश्चर्यचकित हो गए कि इतने बड़े-बड़े वी.आई.पी. आ रहे हैं और मेरी बच्ची समझा रही है। क्लास के भाई-बहनों ने पिता जी को समझाया कि बहनों को यहाँ कुछ मास और रहने दीजिए, हमारी बहुत ऊँची जीवन बनाई है। हम पक्के हो जाएं, 6 मास के बाद भले मुंबई ले जाना। पिताजी मुंबई चले गए।

### दादी जी दयालु, कृपालु व रहमदिल थीं

मैं सच बताऊँ, आज मैं जो कुछ हूँ, वह दादी जी के कारण हूँ। दादी जी ने मेरी दिल की बात सुनकर हिम्मत-उल्लास भर, सही मार्गदर्शन देकर मेरा जीवन इतना ऊँचा बनाया है। ईश्वरीय जीवन भी मेरा निर्विघ्न रहा है। बाबा का तो आशीर्वाद रूपी हस्त मेरे सिर पर है ही, लेकिन प्यारी दादी जी का भी वरदानी हस्त सदा मेरे सिर पर रहा है। आज भी मैं यही महसूस करती हूँ कि दादी जी मेरे साथ हैं ही हैं।

दादी जी पवित्रता की मूर्त थीं, दयालु, कृपालु व रहमदिल थीं। ब्रह्माकुमारी बहनों के आँसू देख नहीं सकती थीं। जल्द ही सच्चा मार्गदर्शन देकर समस्या का समाधान कर देती थीं। कभी किसी की कमज़ोरी वा ग़लती को चित्त पर नहीं रखती थीं इसलिए सरल तथा निरंतर तपस्वीमूर्त थीं। टीचर्स बहनों की भट्टी के क्लास में पवित्रता और कर्मातीत अवस्था पर क्लास कराते समय दादी जी पवित्रता की मूर्त, कर्मातीत अव्यक्त फ़रिश्ता दिखाई देती थीं। निमित्त भाव, निर्माण भाव और निर्मल वाणी थी उनकी। मैंने कभी भी दादी जी की वाणी में मैं और मेरापन नहीं देखा, सदा करन-करावनहार बाप की स्मृति में निमित्त, निर्माण बनकर अथक सेवा करती रहीं।

हमें गौरव और ईश्वरीय नशा है कि हिम्मतनगर का छोटा या बड़ा कोई भी प्रोग्राम दादी जी की उपस्थिति में ही हुआ है। नये भवन के भूमिपूजन के वक्त तो दादी जी, अन्य सर्व दादियों और मधुबन निवासियों सहित पधारीं। दादी जी ने कभी भी कोई भी निमंत्रण अस्वीकार नहीं किया।



# नज़र से निहाल करने वाली दादी माँ

—ब्रह्माकुमारी दमयंती बहन, जूनागढ़

आज से 42 वर्ष पूर्व बाम्बे में वाटरलू मेशान सेन्टर पर दादी जी के साथ एक मास रहने का परम सौभाग्य मुझे आत्मा को प्राप्त हुआ था। उस थोड़े ही समय में मुझे दादी जी के अंग-संग रहने से अलौकिक जीवन को सफल करने की बहुत सारी प्रेरणाएँ मिलीं।

## दादी जी ने मुझमें बेहद की भावना जागृत की

दादी जी के जीवन से मैंने स्नेह और शक्ति का अनुभव किया। दिल की हर बात निःसंकोच दादी जी से करती थी, जिससे बहुत ही हल्केपन का अनुभव होता था। मन के हर संकल्प को दादी जी के साथ शेयर करती थी। दादी जी ने मुझमें बेहद की भावना जागृत की। ऐसी थीं हम सबकी ममतामयी माँ दादी जी।

## यह थी प्यारी दादी जी के दृष्टि की शक्ति की कमाल

जीवन में कई अनुभव ऐसे होते हैं जिनको भुलाना चाहो तो भी नहीं भूल सकते हैं। ऐसे कई अनुभवों में से एक अनुभव आज से छह साल पहले का है। मैं और 5 बहनें, (जूनागढ़ और उसके कनेक्शन की), साथ में एक भाई, टोटल 7 भाई-बहनें, एकाउण्ट ऑडिट पूरा करके मधुवन से दोपहर 2 बजे शांतिवन (जूनागढ़ वापिस जाने के लिए) पहुँचे। वहाँ पर दादी जी से छुट्टी लेने के लिए दादी काँटेज में पहुँचे, तो तुरंत ही मुन्नी बहन ने कहा, आओ, दादी जी की दृष्टि ले लो। जैसे ही हम 6 टीचर्स बहनें दादी जी के सामने बैठे, बहुत ही शक्तिशाली दृष्टि देते हुए सभी को फल दिया। फिर अचानक ही दादी जी ने कहा, अच्छा, जाने से पहले सभी 'मेरे बाबा के कमरे में' (दादी काँटेज में जो बाबा का कमरा है) बाबा से दृष्टि लेकर जाओ। उस घड़ी कुछ अजीब-सा अनुभव मैं और अन्य बहनें कर रही थीं। हम सभी बाबा के कमरे में बैठे। कमरे से बाहर निकले तो दादी जी, काँटेज में ही खड़ी थीं, जैसे कि हमारे ही इंतज़ार में थीं। हमने कहा, दादी जी, हम अभी निकलते हैं। फिर दादी जी ने हम सभी को खड़े-खड़े दृष्टि दी, उसी समय कोई वी.आई.पी. मिलने के लिए आये थे। तब दादी जी ने कहा, उनको बैठाओ। फिर अचानक ही दादी जी ने हाथ पकड़ा और पूछा, आप बहनें किस गाड़ी में जा रही हो? दादी जी काँटेज से बाहर आईं। हमने कहा, दादी जी बाहर बहुत ही धूप है, आप नहीं आओ। तो भी दादी जी धूप में बाहर आईं और टोयोटो क्वालिस गाड़ी थी, उसके पास जाकर खड़े होकर दृष्टि देने लगीं और कहा, जूनागढ़ पहुँचते ही मुझे फोन करना कि हम पहुँच गए। हमने कहा कि हम तो रात को 2 बजे पहुँचेंगे। फिर भी दादी जी ने कहा, पहुँचते ही फोन ज़रूर कर देना। जैसे माँ अपने बच्चों को विदा करती है, उसी तरह का अनुभव हो रहा था। हमारी यात्रा शुरू हुई। लगभग 2 से 2:30 बजे (रात्रि को) के बीच में जब हम जूनागढ़ से 9 किलोमीटर की दूरी पर थे, हमारी गाड़ी गड्ढे में गिर गई। झाड़ के साथ भी टकराई। उस समय जैसे बाबा, मम्मा वा दादी जी हमारे साथ ही हैं, ऐसा अनुभव हो रहा था। ना किसी के मन में डर और ना चिंता थी। अंदर से धक्का लगाकर दरवाज़ा खोला और हम एक-एक करके बाहर निकले, फिर तो बाबा की मदद से सब तरफ से मदद भी मिल गई। जूनागढ़ से सभी भाई भी पहुँच गए। हम सभी का यह चमत्कारी बचाव था। किसी को कुछ भी नहीं हुआ। कार को जब कम्पनी में ले गए तब कार की हालत देखकर कम्पनी वालों ने कहा कि कितने लोग मर गए, कोई भी ज़िंदा नहीं बचा होगा? तब कहा गया कि किसी को भी, ज़रा-सी चोट भी नहीं आई। यह थी हमारी प्यारी दादी जी की दृष्टि की शक्ति, जो सर्वशक्तिवान बाप को साथ रखकर हम सभी का बचाव किया और हम सभी बाबा की सेवा में लग गए। ऐसी थी हमारी प्यारी दादी जी की कमाल। अंदर ही अंदर गूँजता रहता है – वाह बाबा वाह, वाह दादी जी वाह, तब गर्व के आँसू आ जाते हैं।



# सभी प्रश्नों का उत्तर - दादी माँ

—ब्रह्माकुमारी राज बहन, मंगलवाडी, बड़ौदा

सभी प्रश्नों का उत्तर, सभी समस्याओं का समाधान और हर दर्द का इलाज होती है ममतामयी माँ। कहते हैं, भगवान ने जन-जन तक जाने का माध्यम माँ को ही बनाया। ऐसी ही एक माँ का नाम है – दादी प्रकाशमणि जी।

मैंने अपने 37 वर्षों के समर्पित जीवन में दादी जी द्वारा भिन्न-भिन्न रूप की पालना का अनुभव किया। कभी माँ के रूप में दुलार, कभी शिक्षक के रूप में समझ तो कभी वरदान के रूप में वरदान लुटाते हुए देखा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान ने दादी जी को बड़ी ही रुचि से रचा और उनको हर गुण व कला के रंग से सजाया।

## दादी जी के संकल्प व वाणी में शक्ति थी जो अपना पूर्ण प्रभाव दिखाती

बात सन् 1975 की है, मैं अपने जीवन का फैसला कर समर्पित जीवन व्यतीत करने के लक्ष्य से मधुबन में पहुँची। दादी जी से मिलने पर उन्होंने मुझे मुंबई गामदेवी सेवाकेंद्र पर यह वरदान देकर भेजा कि राज, मैं तुम्हें अपनी कर्मभूमि पर भेज रही हूँ। यदि तुम यहाँ पास हो गई तो सदा हर सेवास्थान पर पास होती रहोगी। वहाँ मुझे हर तरह की सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। दो वर्ष पश्चात् मार्च 1977 में बड़ौदा गुजरात में विशाल मेले के आयोजन में दादी जी ने मुझे बड़ौदा सेवाकेंद्र पर भेजा और कहा कि राज, मैंने यहाँ भी सेवा का बीज डाला हुआ है। तुम जाओ और उसे फलीभूत करो। आज उनके वे वरदानी बोल साकार होते देख रही हूँ। मैं निरंतर 36 वर्षों से बड़ौदा शहर में अपनी सेवाएँ दे रही हूँ। केवल बड़ौदा शहर में ही 10 से अधिक सेवाकेंद्र जन-जन की सेवा कर रहे हैं। दादी जी के वरदान का वरदहस्त आज भी मैं अनुभव करती हूँ, जो मुझे निरंतर आगे बढ़ने का अहसास कराता है। उनके संकल्प व वाणी में शक्ति थी जो अपना पूर्ण प्रभाव दिखाती। वर्तमान समय दादी जी का शक्तिशाली संकल्प साकार ही नहीं वरन् फलीभूत भी हो रहा है।

## करुणा, ममता और सरलता की देवी

मैं भुला नहीं सकती उस दिन के उन चन्द लम्हों को, जब मैं मधुबन में वार्षिक मीटिंग के लिए गई थी। अचानक बी.पी. बढ़ जाने से मेरी तबीयत बहुत बिगड़ गई। हजारों की संख्या में सम्पूर्ण भारत से पधारे मुख्य भाई-बहनों की उपस्थिति में संस्था की मुख्य प्रशासिका होने के नाते अत्यंत व्यस्तता के बावजूद जैसे ही दादी जी को मेरी तबीयत का पता चला, वे समस्त व्यस्तताओं को छोड़ मोहिनी बहन जी के साथ मेरे कमरे में हालचाल पूछने आ गईं। एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की मुख्य प्रशासिका का इस तरह मेरे कमरे में आकर मेरा हालचाल पूछना, मेरे सिर पर हाथ फेरना और अपने हाथ में मेरा हाथ लेते हुए दवा आदि के बारे में पूछना, उनके करुणामय व्यवहार को प्रगट करता है। दादी जी के इस करुणामय व्यवहार ने मेरे दिल को जीत लिया और मेरी पीड़ा को सच में दूर कर दिया। मेरे लिए इससे धन्य कौन-सी घड़ी होगी? जिनसे मिलने को लाखों लोग आतुर रहते हैं, वे स्वयं मेरे कक्ष में चलकर मेरा हाल पूछने आईं। भला कैसे भुलाया जा सकता है ऐसी करुणामयी ममतामयी दादी जी को? यही नहीं, ऐसे अनेकों छोटे-बड़े अवसर आए जिनमें दादी जी ने ही हमें मार्गदर्शन दिया। उनके सरल, सहज व्यक्तित्व में असामान्य एवं अद्भुत विशेषताओं का अहसास होता। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता जो मैंने बार-बार अनुभव की, वह थी सरलता जो सहज ही दूसरे को अपना बना लेती थी।



# दादी जी ने बाबा के सर्व गुण और कलाओं को अपने में समा लिया

—दादी रतनमोहिनी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका



हम तो दादी जी को शुरू से देखती आई हैं। जब से यज्ञ शुरू हुआ है तब से हम भी हैं और दादी जी भी हैं। थोड़ा-सा ही फरक रहा। यह हैदराबाद की बात है। दादी ओम् निवास में शुरू से ही आई हुई थीं।

## शुरू से ही दादी जी का लीडर का पार्ट रहा

ओम् निवास में जो भी छोटी-छोटी कुमारियाँ थीं, जैसे लच्छू बहन, ईशू बहन तथा गुलज़ार दादी भी थीं उनकी संभाल करने की ज़िम्मेदारी बाबा ने दादी जी को ही दी थी। गुलज़ार दादी उस समय 9 साल की थी, बाकी सब बहुत छोटी-छोटी थीं। दादी जी का पार्ट शुरू से ही बाबा के साथ-साथ यज्ञसेवा में सहयोगी बनने का रहा है। बाबा अपनी ज़िम्मेदारियाँ दादी जी को दिया करता था, साथ-साथ उनको सिखाता जाता था। आप समझ सकते हैं कि जब बाबा के साथ-साथ पार्ट बजाया है तो स्वाभाविक ही उनके अन्दर बाप जैसा ही कार्य करने की शक्ति आ गई। कारोबार कैसे

चलाना है, किस प्रकार बातचीत करनी है, किस प्रकार संभालना है वो सब कला दादी में आ गई। जैसे बाबा के अन्दर फीलिंग थी कि यह मेरा ही परिवार है, ये मेरे ही बच्चे हैं, ऐसे दादी के अन्दर भी, देखा जाये तो वही भावना रही। जब भी किसी से मिलती तो उनकी यही भावना होती थी कि यह मेरा ही परिवार है। बाबा का परिवार अर्थात् मेरा परिवार। दादी जी में सबके प्रति अपनापन होने के कारण सभी को भी दादी के प्रति अपनापन आता था, सब समझते थे कि दादी हमारी है।

## दादी जी ने बाप समान सबकी पालना की

शुरू से ही कोई भी सेवा हो, बाबा दादी को ही भेजते थे। कहीं से भी निमंत्रण आये, दादी को ही भेजा जाता था। आप सबको पता है कि पहले-पहले जापान से निमंत्रण आया। उसमें भी पहला पार्ट दादी जी का रहा। बाबा समान सबको पालना देना, सबकी बातें समाना, सबके ऊपर ध्यान देना, ये सब दादी जी करती थीं। मधुबन आने वालों के लिए ठीक प्रबन्ध करना, प्रबन्ध को देखना, यह सब दादी खुद करती थीं जैसेकि साकार बाबा स्वयं करते थे। रात को जब सब पार्टी वाले विश्राम करते थे तब बाबा दादी जी को और हमको भेजते थे कि जाओ बच्चे, जाकर देखो, सब ठीक-ठाक आराम से सोये हैं, उनके लिए सब सुविधाएँ हैं? फिर बाबा हमसे पूछता था, क्या समाचार है? उसी प्रकार, दादी जी ने भी बाबा जैसी पालना सबको दी और बाप के गुणों को भी अपने में धारण किया।

## दादी जी बाबा समान बड़ी दिल वाली थीं

जैसे बाबा की दिल बड़ी थी, सबको खुलकर देना, खिलाना, पिलाना, खुश करना आदि करते थे ऐसे ही दादी जी की भी सबके प्रति बड़ी दिल थी। किसी को कुछ चाहिए होता तो वो माँगने से पहले ही दे देती थीं। समझती थीं कि यह बाबा का बच्चा है, बाबा के घर सो अपने घर में आया है, उसको हर सुविधा मिलनी चाहिए। समझो, आज

की दुनिया के हिसाब से कोई साहूकार बाबा के घर में आया, वो अपने घर में कैसे रहता होगा, वो सोचकर ज़्यादा से ज़्यादा सुविधा देने का प्रयत्न करती थीं। बाबा कहा करते थे कि अगर आये हुए बच्चों को हम ठीक प्रबन्ध नहीं देंगे तो उनको यहाँ आकर अपना लौकिक घर याद आएगा। इसलिए बच्चों को ऐसा प्रबन्ध देना चाहिए कि उनको लौकिक घर, माँ-बाप, मित्र-संबंधी आदि याद न आयें। जो जैसा होता था, उसके अनुसार प्रबन्ध खुद बाबा जाकर करवाता था। उसी प्रकार, दादी जी भी ऐसे किसी मेहमान के आने से पहले ही सारे प्रबन्ध देखती थीं और कराती थीं।

शुरू से ही बाबा के साथ रहने का, बाबा के साथ यज्ञसेवा करने का पार्ट दादी का रहा है। दादी को देखने का, उनके साथ रहने का, उनके साथ सेवा में सहयोगी बनने का पार्ट हमारा भी रहा। बाबा के साथ मम्मा भी रहती थीं लेकिन बाबा के साथ सेवा में कम जाती थीं। मम्मा का यज्ञ में अपना रोल था, वे यज्ञमाता थीं, पूरे यज्ञ को संभालने की ज़िम्मेदारी मम्मा की थी लेकिन बाबा के साथ सेवा में बाहर जाना ज़्यादा दादी जी का ही होता था।

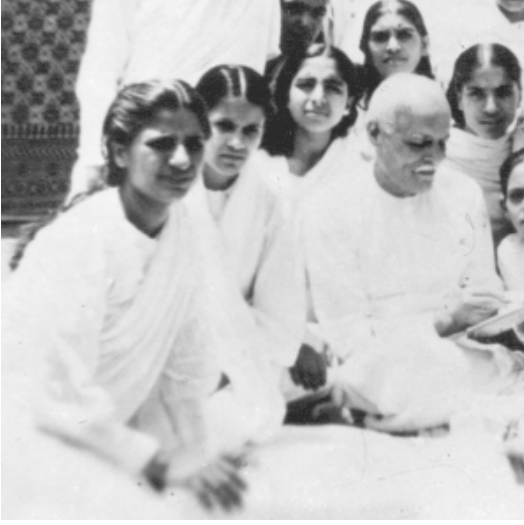
### दादी जी की प्युरिटी महान् थी

शुरू से ही हम देखते आये हैं कि दादी जी की प्युरिटी महान् थीं। हर प्रकार की प्युरिटी दादी जी में देखने में आती थी। किसी वस्तु, व्यक्ति, वैभव में दादी जी की आँख कभी डूबी नहीं। जहाँ प्युरिटी होती है, वहाँ हर प्रकार की सिद्धि आटोमेटिक होती है। प्युरिटी हर गुण का बीज है। जहाँ प्युरिटी होती है वहाँ सर्व गुण अपने आप आते हैं। उस हिसाब से दादी जी में हर गुण और शक्तियाँ अपने आप समाये हुए थे। साथ-साथ बाबा में जो कार्य करने की विधि और कलायें थीं वो भी आ गई थीं। हम उन क्वालिटीज को देखते भी रहते थे और सीखते भी रहते थे।



# प्रकाश का पुँज दादी प्रकाशमणि जी

—दादी कुँज जी, पटना



दादी प्रकाशमणि जी का इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में सन् 1936 में, ओम् मण्डली के सत्संग में आना शुरू हुआ। वे आते ही शिव पिता की ज्ञान-मुरली की दीवानी-मस्तानी बन गईं। वे बड़ी मननशील थीं और सदा ॐ की ध्वनि में मगन रहती थीं।

## शुरू से ही दादी जी जिम्मेदार व्यक्ति थीं

सन् 1937 में शिव बाबा ने, बच्चों के कल्याण के लिए दीवाली के शुभ अवसर पर ओम् निवास बोर्डिंग की स्थापना की जिसकी जिम्मेवारी दादी प्रकाशमणि जी को दी गई। बाबा ने सत्संग में आने वाली माताओं-बहनों से कहा, अपने लौकिक पिता या किसी भी अभिभावक से स्वीकृति का पत्र ले आओ कि हम अपनी बच्ची को ओम् मण्डली में पढ़ने-

पढ़ाने की खुशी से छुट्टी दे रहे हैं। दादी जी ने ऐसा पत्र लाकर दिया और इस प्रकार ईश्वरीय-यज्ञ में समर्पण होने का प्रथम पार्ट बजाया। तब से लेकर वे निरन्तर इस ईश्वरीय यज्ञ की सेवा में जिम्मेवारी का ताज पहन कर मनसा-वाचा-कर्मणा सेवा पर तत्पर रहीं और हम सभी बहनों को अमृतवेले से लेकर रात्रि तक कैसे रहना है, उसका पाठ अपने आदर्श जीवन द्वारा पढ़ाती रहीं।

## विदेश सेवा के लिए भी सबसे पहले दादी जी ही निमित्त बनीं

भारत में यज्ञ के स्थानान्तरण के बाद दादी जी ने दिल्ली, कानपुर, पटना, कोलकाता, मुम्बई में विशेष सेवा का पार्ट बजाया। विदेश में भी ईश्वरीय सेवार्थ पहले-पहले जापान में शान्ति का संदेश देने के लिए प्यारे बाबा ने इनको ही निमित्त बनाया। इसके बाद ड्रामानुसार, हम सबके अति प्यारे पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा 18 जनवरी, 1969 को व्यक्त देह त्याग, अव्यक्त वतनवासी बने तो प्यारे शिव बाबा ने इन्हें ही चुनकर मुख्य प्रशासिका की जिम्मेवारी का ताज पहनाया। तब से लेकर 38 वर्ष तक देश-विदेश में ईश्वरीय सेवा में मुख्य भूमिका निभाती रहीं। समय, संकल्प, श्वास तथा अपनी हड्डी-हड्डी इस रुद्र ज्ञान-यज्ञ में स्वाहा की।

## मुख्यालय में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन दादी जी ने ही किया

पिताश्री के अव्यक्त होने के बाद प्रथम विशाल कार्य, ओम् शान्ति भवन का निर्माण करके, उसमें युनिवर्सल पीस कांफ्रेंस का आयोजन किया, जिसमें देश-विदेश के हज़ारों गणमान्य जन के साथ यू.एन. के डॉ. रॉबर्ट मूलर भी पधारे। लगभग 250 मीडिया के व्यक्ति और मालिक भी पहुँचे। एक मुख्य सम्पादक ने दादी प्रकाशमणि जी को कहा, आपने क्या जादू की छड़ी चलाई है जो इस कार्य में सम्पादक, मुख्य सम्पादक, अखबार के मालिक पहुँच गए। सम्मेलन में तो सदा पत्रकार ही जाते हैं। दादी ने कहा, हमने कुछ नहीं किया, आप सबको आपके पिता परमात्मा ने अपने घर बुलाया है। यह बाप का द्वार सो आपका द्वार है। रॉबर्ट मूलर भी इस वार्तालाप में उपस्थित थे।

## दादी जी की मधुर मुस्कान गॉडली गिफ्ट थी

दूसरे महासम्मेलन में यू.एन. से सिस्टर शैली आई थीं, जो सोचती थीं कि दादी प्रकाशमणि जी तो अन्तर्राष्ट्रीय मुखिया हैं, उनसे मुलाकात तो बड़ी मुश्किल से होगी। दादी जी निर्मानता की मूर्ति थीं। सम्मेलन के सत्र के बाद रोज़ सबको हाथ हिलाकर मिलती थीं। बहन शैली ने दादी को कहा, दादी, आपके पास तीन हजार भाई-बहनें मेहमान के रूप में हैं, उनमें भी एक हजार तो विशेष (वी.आई.पी.) हैं, आपको कोई तनाव नहीं होता? दादी बोलीं, ये सब मेहमान अपने पिता के घर आए हैं, करनकरावनहार पिता परमात्मा है, इसलिए हमें कोई तनाव नहीं। दादी ने पूछा, सिस्टर शैली, आपको क्या सौगात दूँ? शैली बोली, दादी जी, एक सौगात माँगूँ, आप देंगी? अपनी शाश्वत हँसी सौगात में दे दो। दादी ने कहा, यह गॉडली गिफ्ट है, ले लो।

## दादी जी के पास सब गुणों का बैलेंस था

दादी जी के चेहरे पर सदा रूहानियत और मधुर मुस्कान की झलक बनी रहती थी। दादी जी सर्व के प्रति सदा शुभचिन्तक होने के कारण छोटे-बड़े सबको सम्मान देती थीं। दादी जी के पास सब गुणों का बैलेंस था। जितना नॉलेजफुल थीं, उतना पॉवरफुल थीं। जितना लवफुल, उतना लॉफुल थीं। उन्होंने ही हम सबको सदा मर्यादा की लकीर के अन्दर रहना सिखा दिया। दादी, अटूट निश्चयबुद्धि थीं जिस कारण श्रीमत को ज्यों-का-त्यों पालन कर बाबा के कदम-पर-कदम रखा। दादी जी जितनी महान् थीं उतनी ही निर्मान थीं। जितनी गम्भीर, उतनी रमणीक थीं। जितनी व्यस्त थीं, उतनी मस्त थीं। सर्वगुणों का बैलेंस होने के कारण सदा ब्लिसफुल रहती थीं। ये सब गुण उन्होंने अपनी नेचुरल नेचर में ढाल लिये थे जिस कारण हरेक हल्का हो दादी को अपना दिल दे देता था। उन्होंने हरेक के दिल को जीत लिया जो आज भी बापदादा के साथ दादी सबके दिल में समाई हुई हैं।

## दादी जी ने आबू को विश्व-विख्यात बनाया

दादी के अन्दर समाने की शक्ति सागर के समान थी। सहनशीलता की तो मूर्ति थीं। सच पूछो तो हम सबके लिए संतोषी माँ थीं। उनकी दृष्टि बहुत पॉवरफुल थी। सदा विशेषता देखकर सम्मान देती थीं। वे सत्यता की मूर्ति थीं, अन्दर-बाहर साफ़ होने के कारण सबके दिलों को जीत लेती थीं। सबकी प्रिय थीं। हरेक ने उस दिव्य विभूति को दिल में समा लिया। श्रेष्ठ सैम्पल और सिम्पल थीं। देह-अभिमान ने तो कभी उनको स्पर्श तक नहीं किया। किसी भी परिस्थिति में कभी झूठ नहीं बोला। उन्होंने ज्ञान सरोवर तथा शान्तिवन के निर्माण जैसे अनेक बेहद के कार्य करके ईश्वरीय सेवा में चौदह चाँद लगा दिये। आबू को विश्व का तीर्थ बनाकर सर्व आत्माओं की सेवा का द्वार खोल दिया। कुछ वर्षों से दादी बहुत उपराम हो गई थीं। गहन तपस्या कर विकर्माजीत, प्रकृतिजीत, कर्मातीत और बाप समान अव्यक्त फ़रिश्ता बन, वे अव्यक्त वतनवासी हो गईं।

# दादी जी एक ऐसा उदाहरण हैं जिनको हम कभी भूल नहीं सकते

—ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन, आबू पर्वत

यह मेरा परम सौभाग्य और पुण्य कर्मों का फल था जो प्यारे बाबा ने मुझे दिव्य दृष्टि का वरदान देकर अपने अव्यक्त स्वरूप का साक्षात्कार कराया और सूक्ष्म रूप में इशारा दिया कि बच्ची, मैं तुझे लेने के लिए आया हूँ। बार-बार यह साज भरी आवाज़ मेरे कानों में गूँजती थी परन्तु मुझे समझ में नहीं आता था कि यह कौन है, क्यों मुझे लेने आया है। ऐसे समय में, प्यारे बाबा की आज्ञानुसार जापान में होने वाले सम्मेलन में भाग लेने जाते समय, चन्द्र घंटों के लिए प्यारी दादी जी का लखनऊ आना हुआ और मैंने उनसे उस आवाज़ का रहस्य पूछ लिया। दादी जी ने कहा, डरना मत, यह परमात्मा पिता का अलौकिक इशारा है, वह आपको अपना बनाना चाहता है, आप बहुत भाग्यवान हो जो आपको इतनी छोटी आयु (12 वर्ष) में भगवान ने पसंद किया। दादी जी जापान चली गई परन्तु मेरे दिल पर अमिट छाप छोड़ गई। चन्द्र घंटों की मुलाकात में उनके वात्सल्य, अपनत्व भरी आवाज़, झील-सी गहरी आँखें जिनमें ममता का सागर लहरा रहा था – इन सबने मेरे दिल में सदा के लिए स्थान बना लिया। उनके ऐसे दिव्य व्यक्तित्व को मैं जीवन में कभी नहीं भूल सकी।



## दादी जी ने मुझे छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी सेवा करनी सिखाई

एक वर्ष के बाद जब दादी जी जापान से लौटने वाली थी तो मैं मधुबन में ही थी। मैंने देखा कि प्यारे बाबा बहुत उमंग और प्यार से दादी जी के स्वागत की तैयारियाँ कर रहे थे। हर ब्रह्मा-वत्स के अन्दर दादी जी के प्रति अथाह प्यार देखकर मैं बहुत खुश हो रही थी। उनके आगमन की घड़ियाँ नज़दीक आती जा रही थीं। बहुत ही हर्षितमुख, बेपरवाह बादशाह, सेवा की सफलता से सम्पन्न, प्यारे बाबा से मधुर मिलन मनाती हुई दादी ने हम सबको भी रूहानी नजर से निहाल किया। मुझे देखकर बोला, आप भी आई हो? मुझे बहुत खुशी हुई कि प्यारी दादी ने मुझे पहचान लिया। तब से उनसे मिलने और पालना लेने का सिलसिला जारी है। तीन वर्ष के बाद जब मैं पुनः यज्ञ में आई तो प्यारे बाबा ने मुझे दादी जी के साथ देहली की अलौकिक सेवार्थ भेजा। दादी जी ने मुझे अपने साथ रखकर छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी सेवा करनी सिखाई। उनके संग के रंग में मैं आलराउण्डर और हर सेवा में दक्ष बनती गई। मैंने देखा, दादी जी का मम्मा-बाबा के साथ निश्छल प्यार, अटूट भावना, सेवा में समर्पण, हाँ जी का पक्का पाठ और एक बाप दूसरा न कोई की दृढ़ धारणा से सदा एकव्रता स्थिति। सत्यता और दिव्यता की प्रतिमूर्ति दादी सदा बापदादा के दिलतख्त पर विराजमान रह, निश्चिन्त भाव से परोपकार में तत्पर रहतीं और अन्य आत्माओं को सेवा में साथी बनाकर, एकता के सूत्र में बाँधकर, व्यस्त भी रखतीं और आगे भी बढ़ातीं।

## दादी जी प्यार से मुझे मोहनलाल कहकर बुलाती थीं

जब हम दिल्ली में सेवारत थे तो कई बार दादी जी आवश्यक कार्य से, मुझे सेन्टर पर छोड़कर, दूसरे स्थान पर चली जाती थीं और वहीं से सन्देश देती थीं कि आज आप क्लास करा लेना। मैं कहती थी, दादी इतने बड़े-बड़े भाई,



मैं कैसे क्लास कराऊँ? पर दादी जी कहती थीं, बाबा मदद करेंगे। इस प्रकार क्लास कराने का उमंग और बल प्रदान करते-करते उन्होंने हमारा संकोच निकाल दिया। कई बार भाई-बहनें प्रश्न पूछते थे तो मैं कहती थी, सारी बातें एक ही दिन में थोड़े ही जान लेनी होती हैं। फिर मैं दादी से पूछकर अगले दिन, उन प्रश्नों के उत्तर दे देती थी। इस प्रकार दादी ने मुझे ज्ञान-योग में प्रवीण बना दिया। दादी जी मुझे बहुत प्यार करती थीं। बच्चों की तरह प्यार करती थीं। प्यार से मुझे मोहनलाल कहकर बुलाती थीं।

प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद जब दादी जी पर संपूर्ण यज्ञ की ज़िम्मेवारी आई तो बड़ी दीदी ने मुझे दादी जी का सेवा-साथी बनाया। दादी जी ने सारा प्रशासन सिखाया और सदा साथ में ले जाती थी। तब से दादी जी के अंग-संग रहना, उनके अव्यक्त होने तक बना रहा। अंत में भी इन नयनों ने, सब तरफ से उपराम हुई दादी को बाबा की गोद में समाते देखा। दादी जी के साथ रहते, उनके अनगिनत गुणों, विशेषताओं की साक्षी रही हूँ। प्रस्तुत लेख में मैं उनके मुरली (ईश्वरीय महावाक्यों) के प्रति प्रेम का वर्णन कर रही हूँ।

### दादी जी मुरली की बड़ी दीवानी थीं

मातेश्वरी जगदम्बा, बाबा की मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) को बहुत अच्छी तरह से पढ़ती थी, नोट करती थीं, उस पर मनन करती थीं, फिर मुरली को अपना बनाकर हम सबको सुनाती थीं। मम्मा कई बार मुरली पढ़ती थीं। वही बात मैंने दादी प्रकाशमणि जी में भी देखी। वे सुबह क्लास में जाने से पहले मुरली को बहुत अच्छी तरह पढ़ती थीं। फिर शाम को चाय पीने के बाद मुरली पढ़ती थीं। रात्रि को, कितनी भी देर से वे कमरे में आएँ पर मुरली पढ़े बिना सोती नहीं थीं। बाबा की मुरली से इतना जिगरी प्रेम था। कभी-कभी हम उनको कहते थे, दादी, आप मन-मन में पढ़ रही हैं, हमें भी सुनाइए, हम भी सुनेंगे। तब दादी जी बहुत प्यार से पढ़कर सुनाती थीं, चाहे रात्रि के ग्यारह, साढ़े ग्यारह क्यों न बज जाएँ। दादी जी, क्लास में मुरली सुनाते समय अपनी कोई बात नहीं कहती थीं। जो बाबा ने कहा, जैसे भी कहा, चाहे धारणा, चाहे सेवा के बारे में जैसे का तैसा सुनाती थीं इसलिए मुरली हम सबके अन्दर छप जाती थी। जब दादी हॉस्पिटल में थीं, हम कहते थे, दादी जी, समाचार सुनोगे? तो कहती थीं, नहीं। पर जब हम कहते थे, मुरली सुनोगे? तो कहती थीं, हाँ। जब तक हम सुनाते थे, जागृत होकर सावधानीपूर्वक सुनती रहती थीं। मुरली सुनते समय दादी जी नींद नहीं करती थीं।

अव्यक्त होने के सप्ताह भर पहले भी दादी जी काफी ठीक थी। मुरली में जैसे गीत की लाइन आती थी, रात के राही..। हम पूछते थे, दादी, आगे क्या है, तो कहती थीं, थक मत जाना। जब कोई सिंधी अक्षर मुरली में आता था तो हम कहते थे, दादी, इसका अर्थ क्या है, तो बड़े प्यार से अच्छी तरह समझाती थीं। जितनी मुरली सुनती थीं दादी, बड़े ध्यानपूर्वक सुनती थीं, जब थक गई होती थीं तो स्वयं कह देती थीं, बाकी शाम को सुनेंगे। मैंने देखा, अन्त तक दादी को मुरली से इतना प्यार, जो उसके बिना रह नहीं सकती थीं। मुरली पढ़ने के लिए पूछते थे तो तुरन्त कहती थीं, चश्मा लाओ, दादी मुरली पढ़ेगी।

भ्राता निर्वैर जी, सुबह-दोपहर-शाम को आकर दादी जी को मुरली सुनाते थे। कभी नहीं आते थे तो हम सुनाते थे। मानो मैं सुना रही हूँ, भ्राता निर्वैर जी भी आ गए, तो मैं पूछती थी, दादी, निर्वैर भाई सुनाये? तो दादी कहती थीं, नहीं, आप सुना रही हो ना, आप ही सुनाओ। इस प्रकार, दादी की समदृष्टि और बाबा से प्यार अतुलनीय था।

### दादी जी के अन्दर त्याग और वैराग्य की पराकाष्ठा थी

कमरे में दादी के दोनों तरफ बाबा के चित्र लगे हुए थे। उनका सारा ध्यान बाबा में ही रहा। बाबा के सिवाय कहीं भी, न किसी चीज़ में, न व्यक्ति में, न वैभव में लगाव-झुकाव था। उनके अन्दर त्याग और वैराग्य की पराकाष्ठा थी। दादी जी हमेशा कहती थीं, सिम्पल रह, सैम्पल बनो। दादी कभी भी न तड़क-भड़क स्वयं पसंद करती थीं, न हम लोगों को करने देती थीं। कभी ऐसा कुछ देखती थीं तो तुरन्त कहती थी, जाओ, बदल कर आओ। मर्यादा पुरुषोत्तम बाबा की बच्ची होने के नाते दादी, स्वयं मर्यादा में रहती थीं और सबको यही सिखाती थीं। वे कहती थीं, न बहुत

ऊपर, न बहुत नीचे, साधारण रहो।

कई बार हम कहते थे, दादी, इतने वर्ष हो गये हैं, आपका बाथरूम इतना पुराना हो गया है। दादी कहती थीं, जैसा है, वैसा ही ठीक है। दादी का हमेशा लक्ष्य रहा कि जैसा कर्म मैं करूँगी, मुझे देखकर दूसरे भी करेंगे। इसलिए दादी ने आज तक ऐसा कोई कर्म नहीं किया जो दूसरों के लिए ठीक न हो। दादी ने वो कर्तव्य किए जिनका सब सहज अनुकरण कर सकें। दादी जैसी परम पवित्र आत्मा, दुनिया में आज तक कोई दिखाई नहीं दी। दादी के संकल्प तक में नकारात्मक भाव नहीं था। पर ऐसा भी नहीं था कि किसी की गलती देखकर दादी बताती नहीं थीं, इशारा देती थीं कि इस पर ध्यान दो। पर ध्यान खिंचवाकर चली जाती थीं और भूल जाती थीं। लौटकर आने पर बहुत प्यार से कहती थीं, चलो यह करें, वह करें, अंगुली पकड़कर उसे घर, रसोई घुमाने लगती थीं। अन्दर से आता था कि अभी तो दादी इशारा देकर गईं, अभी ऐसे प्यार कर रही हैं। फिर हम दादी को पूछते थे तो कहती थीं, ऐसा? मुझे तो याद ही नहीं है। पहले-पहले मैं सोचती थी, दादी तो कह देती हैं कि मुझे याद नहीं पर मेरे अन्दर तो यादें चलती थीं। तो दो-तीन बार के अनुभव के बाद मैंने समझा कि दादी के दिल में कुछ रहता ही नहीं था। संकल्प-मात्र भी किसी के लिए कोई ऐसी भावना न हो, यह बहुत ऊँची बात है, बहुत कमाल की बात है।

### दादी जी केवल आदेश नहीं देती थीं बल्कि खुद साथ रहकर सहयोग देती थीं

कभी दादी ने किसी को उलाहना नहीं दिया, हमेशा प्यार की भासना दी। कभी यह नहीं कहा कि मेरे पास समय नहीं है। जब क्लास करा रही होती थीं, भोजन बनाने के निमित्त भाई आता और पूछता था, दादी, कढ़ी बनाई है, आप चखकर देखेंगी? तो क्लास में भी चखकर, उसे सन्तुष्ट करके भेजती थीं। कहती थीं, इसको बनाना है ना, मैं अभी नहीं देखूँगी तो भोजन में देर हो जायेगी। दादी को सदा होता था कि कोई मेरे लिए इंतज़ार न करे। बाबा के नियम, धारणाओं पर पक्की होकर चलती थीं। सारा दिन दादी योगयुक्त अवस्था में रहकर कारोबार में व्यस्त रहती थीं। दादी आदेश देकर चली जाए, ऐसा कभी नहीं हुआ। हम कहते थे, दादी, आप जाओ, हम कर लेंगे, पर दादी कहती थीं, आप सेवा कर रहे हो, मुझे नींद ही नहीं आती है। बाबा मुझे सोने नहीं देता है। कहता है, जाओ, बच्चे सेवा कर रहे हैं। बैठेंगी, उमंग-उत्साह दिलायेंगी, टोली खिलायेंगी, पर ऐसे ही छोड़कर नहीं जायेंगी। जब ओम् शान्ति भवन बन रहा था तो सामने जंगल था, छोटी-छोटी पहाड़ियाँ थीं। जब पत्थर तोड़े जाते थे तो रात में सभी भाई-बहनों को लेकर दादी स्वयं जाती थीं और पत्थर उठाती थीं। दादी स्वयं भी उठाती थीं। हम कहते थे, दादी, बैठ जाओ, पर वो बैठती नहीं थीं, दो-चार पत्थर ज़रूर उठाती थीं। सारी रात हमारे साथ बैठी रहती थीं। करती भी थीं और कराती भी थीं। ओम् शान्ति भवन की एक-एक ईंट में दादी की भावनाएँ समाई हुई हैं।

दादी, अन्त तक भी सेवा करती रहीं। दूर से भी उनकी दृष्टि निहाल कर देती थी। एक-एक अंग दादी का सेवा करता रहा। आज दादी साकार में हमारे बीच नहीं है, पर दादी का जीवन एक ऐसा उदाहरण है जो हम कभी भी दादी को भूल नहीं सकते हैं। जो दादी ने सिखाया, उसे करके दिखाएँ, यही दादी के प्रति सच्चा स्नेह है।

# दादी जी सम्पूर्णता की देवी थीं

—ब्रह्माकुमारी मुन्नी बहन, आबू पर्वत



सन् 1967 में जब साकार बाबा से मिलन का पुनीत अवसर मुझे मिला तो उन्होंने वरदान दिया कि इस बच्ची को बाबा मधुवन में ही रखेगा और यह बाबा का भण्डारा (स्टॉक) संभालेगी। मई, 1969 में जब कन्याओं का प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम चला तो उसमें मैं शामिल हुई और इस कार्यक्रम के बाद प्यारे बाबा के वरदान को साकार करते हुए, मीठी दादी जी ने मुझे यज्ञ का स्टॉक संभालने की ज़िम्मेवारी सौंप दी।

## दादी जी मुझे 'लवली बेबी' कहकर सम्बोधित करती थीं

दादी जी प्यार की मूरत थीं। मैंने जब उनको पहली बार देखा था तभी से दिल का स्नेह बड़ी गहराई तक उनसे जुट गया था। दादी जी मुझे 'लवली बेबी' कहकर सम्बोधित करती थीं, उनका यह लाड़-प्यार भरा संबोधन मेरे दिल को छूता था। मैं उनके करीब आना चाहती थी। इसलिए रोज रात्रि को गुडनाइट करने जाती थी। वे मुझे बाँहों में समा कर मुरली पढ़ती रहती थी और फिर कहती थीं, लवली बेबी, गुडनाइट। दादी जी का सान्निध्य पाने के लिए मैं उनसे कहा करती थी, दादी जी, मुझे सेवा बताइए। मुझे पहली-पहली सेवा उनके हिन्दी पत्र लिखने की मिली। वे स्वयं बोलती जाती थीं और मैं वैसा-वैसा लिखती जाती थी। इस प्रकार मुझे उनके नज़दीक रहने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ और मैं धीरे-धीरे उनकी व्यक्तिगत सेवा भी करने लगी। कहा जाता है, सेवा ही मेवा है। उनकी सेवा के बल ने मुझमें बहुत योग्यताएँ भर दीं। दादी जी ने मुझे ये श्रेष्ठ बातें सिखाईं – आज्ञाकारी, वफ़ादार, फ़रमाँबरदार, ईमानदार, फेथफुल, एक बाप दूसरा न कोई, सदा एक्क्यूरेट, एवररेडी और दिल की सच्चाई-सफ़ाई। इन श्रेष्ठ धारणाओं को मैंने दिल की तिज़ोरी में संभाल कर रख लिया जिससे मुझमें विशेष सामर्थ्य आता गया।

## दादी जी के नयनों से प्यार बरसता था

एक बार दादी जी ने मुझसे कहा, जाओ, म्यूज़ियम सजा कर आओ। मैंने मन में सोचा, मैं तो स्वयं भी ठीक से कपड़े नहीं पहन पाती हूँ, तो म्यूज़ियम में रखे मॉडल्स को कैसे श्रृंगारूँगी। मैंने दिल की यह शंका दादी के समक्ष प्रकट की तो उन्होंने कहा, तुम जाओ, दादी कहती है, तुम सजा सकती हो। दादी का ऐसा विश्वास पाकर मेरी बुद्धि विचार चलाने लगी। एक दर्जी भाई का सहयोग लेकर मैंने म्यूज़ियम सजाने की सेवा पूरी की और दादी जी को दिखाई। दादी जी ने मुझे बहुत प्यार दिया। इस प्रकार दादी जी आज्ञा भी देती थीं और कार्य करने की शक्ति भी प्रदान करती थीं। जैसे छोटे बच्चे को कहा जाता है, उसी प्रकार दादी जी कहती थीं, मुन्नी, अभी यह काम करके आओ। वे बहुत ही प्यार से कहती थीं और उनकी इसी प्यार की शक्ति ने यज्ञ-सेवा का छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा कार्य भी हमको करना सिखा दिया। उनके नयनों से प्यार बरसता था, जब वे प्यार से 'मुनड़ी' कहकर बुलाती थीं तो मेरा रोम-रोम खिल उठता था।

## दादी जी के सामीप्य में थकान की अविद्या होती थी

दादी जी के अंग-संग रहने के कारण कोई भी योग्यता पैदा करने में मुझे कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे पारस के संग रहकर लोहा भी पारस बन जाता है, ऐसे दादी जी के संग रहकर मैं भी योग्य बन गई। सुबह से सायंकाल तक की व्यस्त दिनचर्या में सैकड़ों बार उनके सम्मुख जाना होता, उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ती और मेरे अंदर उमंग-उत्साह लहरें मारने लगता। उनके सामीप्य में थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना। मुझे महसूस होता रहा कि ये नज़रें दादी जी की नहीं, स्वयं भगवान की हैं, जो मुझे निहाल कर रही हैं। उनके स्पर्श मात्र से दिव्य शक्ति का मुझमें संचार होता था।

ओम् शान्ति भवन, ज्ञान सरोवर, शान्तिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबन्धन दादी जी ने मुझे सिखाया। दादी जी खरीदारी की चीज़ें खुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी जी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी।

## दादी जी बहुत ही रहमदिल और ममता की मूरत थीं

दादी जी कभी कोई बात चित्त पर नहीं रखती थीं। मैं छोटी थी, तब कोई गलती कर देती थी तो बहुत प्रेम से समझाती थीं। क्षमा की सागर थीं, हर गलती को भुला कर प्रेम से आगे बढ़ाती थीं। दादी जी स्वयं सदा सन्तुष्ट रहती थीं और उनके बोल थे, 'सभी यज्ञ-वत्स सदा खुश और सन्तुष्ट रहने चाहिए।' किसी को कुछ भी चाहिए तो बाबा के भण्डारे से उसे अवश्य मिलना चाहिए, यह उनकी भावना होती थी।

## दादी जी निद्राजीत और अथक थीं

दादी जी को सारे ब्राह्मण परिवार से बेहद प्यार था। जो सामने आता था, उसका मुस्कराकर स्वागत करती थीं। कहती थीं, आओ, आओ। वे निद्राजीत और अथक सेवाधारी थीं। जब कभी हम कहते थे, दादी, अमुक व्यक्ति आपसे मिलने आया है तो बिस्तर से उठकर भी मिलने को तैयार रहती थीं। वे तपस्वीमूर्त थीं। रात्रि को दो बजे उठकर तपस्या करती थीं। अमृतवेले का योग नियमित करती थीं। उस समय उन्हें बाबा से बहुत प्रेरणाएँ मिलती थीं जिन्हें वे सुनाती भी थीं।

## दादी जी त्याग और सादगी की मूरत थीं

यज्ञ में हज़ारों ब्राह्मण भाई-बहनें तथा अनेक वी.आई.पीज आते थे। वे हरेक से मिलती थीं। चाहे 30 हज़ार भाई-बहनें भी आ जाते थे, फिर भी लाइन में सभी उनकी दृष्टि का अतीन्द्रिय आनन्द प्राप्त करते थे। हर कार्य करने में उनका उमंग-उत्साह सदा बना रहता था। वे त्याग और सादगी की भी मूरत थीं। प्यारे बाबा के स्लोगन – जो खिलाओ, जो पहनाओ, जहाँ बिठाओ, इसकी पूर्ण धारणा उनके जीवन में देखी। वे मास्टर पालनहार थीं। एक हज़ार यज्ञ-वत्सों और दस हज़ार निमित्त शिक्षिकाओं सहित सभी को बाप समान पालना देती थीं। मुरली से उनका जिगरी प्यार था। दिन में तीन बार स्वयं मुरली पढ़ती थीं ही, क्लास में सुनाती थीं वो अलग। जब तक स्वस्थ रहीं, हमेशा स्वयं ही क्लास में मुरली सुनाती थीं। जब तबीयत नरम-गरम रहती थी तब भी वे देह में रहते भी, देह से न्यारी फ़रिश्ता स्थिति में रहती थीं। कितनी भी तकलीफ़ हो, पूछने पर यही कहती थीं, मैं बहुत ठीक हूँ। एक दिन तो कहा, मैं बहुत सुखी हूँ। वे इस दुनिया में थीं ही नहीं, वो सम्पूर्णता की देवी बन चुकी थीं। सेवा करते महसूस होता था कि वतनवासी फ़रिश्ते की सेवा कर रही हूँ। उनके अन्तिम दिनों में भाई-बहनें कॉटेज की खिड़की के शीशे में से उनके दर्शन करते थे। तब भी कहती थीं, सभी लाइन में आएँ, टोली लेकर जाएँ। हर बच्चे से उनका जिगरी प्यार था। दादी जी का मुस्कराता हुआ चेहरा और प्यार भरे नयन कभी भूलते नहीं हैं।

# दादी जी, आपके वो दस कदम...

—ब्रह्माकुमारी गोदावरी बहन, मुलुन्द, मुम्बई



प्यारी प्रकाशमणि दादी जी, आपको याद करते ही भगवान का स्वरूप सामने आ जाता है। आपके जीवन का एक-एक कदम ब्राह्मण परिवार के अन्दर नये उमंग-उत्साह, खुशी एवं ईश्वरीय नशे का अहसास कराता है। प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा और आपके सम्मुख की पालना में कभी भी अन्तर नहीं दिखाई दिया। आपकी दिव्य शक्ति, अलौकिक विशेषतायें, अनमोल गुण तथा अद्वितीय प्यार भरी शिक्षायें एक प्रकाश स्तम्भ की तरह आगे बढ़ने की प्रेरणायें दे रही हैं। आपकी ईश्वरीय शिक्षाओं के हज़ारों कदम विशाल ब्राह्मण समुदाय के आधारमूर्त, उद्धारमूर्त थे और अभी भी हैं। उनमें से कुछ शिक्षायें दस कदम के रूप में, यादगार के रूप में लिख रही हूँ।

**1. पहला कदम नम्रता :** मीठी दादी जी, आप तो नम्रता की सजीव मूरत थीं। आपका व्यक्तित्व इतना निराला था जो कोटों में कोऊ था। जैसे ब्रह्मा बाबा कोटों में कोई थे वैसे आप भी एक अलौकिक विभूति लगती थीं। सर्व गुण, सर्व कलाओं से सदा ही निखरी रहती थीं। आपकी चाल-चलन एवं चेहरा शिव बाबा की शक्ति को प्रत्यक्ष करता था। आपके आत्मीय स्वरूप के दीदार से यही अनुभव होता था कि आप निमित्तमात्र थीं। ईश्वरीय यज्ञ के विशाल कारोबार को सम्भालने में देहभान व अभिमान का अंशमात्र भी आप में नहीं था, बल्कि फ़रिश्ता स्वरूप बनकर औरों को भी उमंग-उत्साह के पंख देकर अनोखे आनंद में लहराती थीं। आपकी नम्रता मस्तक को नहीं परन्तु दिल को झुकाती थी।

**2. दूसरा कदम निर्मानता :** जिस दिन से मीठे ब्रह्मा बाबा ने आपके हाथ में हाथ देकर यज्ञ रक्षा की ज़िम्मेवारी सौंपी, आपने अन्तिम श्वास तक यज्ञ रक्षक बनकर सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वालों को बापदादा के स्नेह की कमी महसूस नहीं होने दी। जिस प्रकार सभी के मुख से निकलता है – बाबा मेरा, वैसे ही सभी के दिल से अभी भी निकलता है – दादी मेरी। आपने सभी बच्चों का दिल जीत लिया। परमात्म-महावाक्यों की दृढ़तापूर्वक धारणा करके सभी को एकता के सूत्र में बाँध दिया। निर्मानता के गुण द्वारा नई सृष्टि के निर्माण कार्य में मन, वचन, कर्म से सभी को सहयोगी बनाया। सच मीठी दादी जी, आप सभी की जान थीं और अभी भी हैं।

**3. तीसरा कदम निर्भयता :** आपने मम्मा-बाबा दोनों के स्वरूप की पालना का अहसास करवाया। सदा ही माया-रावण पर जीत प्राप्त करने अर्थ शक्तिस्वरूप बनाया और ईश्वरीय मर्यादाओं एवं नियमों पर चलने की एक अद्भुत शक्ति प्रदान की जो आज भी अनेकानेक बाबा के बच्चे दृढ़तापूर्वक अपने मनुष्य जीवन को, देवताई जीवन बनाने के लिए अग्रसर हो चुके हैं। प्रैक्टिकल जीवन में बाबा के हाथ और साथ का अनुभव कराकर निर्भय बना दिया। सच दादी जी, आपका क्या कहना !

**4. चौथा कदम निश्चय :** सहजयोग एवं सहज ज्ञान के साथ ड्रामा की ढाल को भी साथ में रखना सिखाया। सदा यही कहा कि साक्षी रह बाबा को साथी समझ कर चलो। क्यों, क्या, कैसे में न जाकर, सदा निश्चय बुद्धि होकर रहो। विजय माला में पिरोंने का पुरुषार्थ करो। मान-अपमान को छोड़ स्वमानधारी बनो तो सम्मान स्वतः ही मिलेगा। निश्चय जीवन में सफलता दिलायेगा ही। आपकी इन अनमोल शिक्षाओं ने जीवन जीने के लिए एक नई ढाल दे दी। दादी जी, निश्चयबुद्धि बन गये हैं हम।

**5. पाँचवाँ कदम निश्चिन्तता :** यह कदम भी जीवन को आगे बढ़ाने में बहुत मदद करता है। मानव-आत्माओं के पास अनेकानेक बातें आती हैं परन्तु उन्हें सहन करने की प्रेरणा दादी जी के इस कदम द्वारा मिलती है जो छोटे-मोटे विकारों के अंश जैसे कि जोश, क्रोध परचिन्तन, परदोष के ऊपर विजय प्राप्त करा कर परोपकारी बना देती है। हर कर्म में, कदम में निश्चिन्तता ही चिन्तामुक्त बनाती है। आपकी ऐसी प्रभु पालना आज भी याद आते ही पुराने स्वभाव-संस्कार बदल जाते हैं

**6. छटवाँ कदम निर्मोही :** दादी जी आपके त्याग, तपस्या और सेवा ने जीते जी मरजीवा बनाकर संसार सागर से उपराम बना दिया। पुरानी दुनिया का लगाव, किसी व्यक्ति के प्रति झुकाव और वस्तुओं का प्रभाव जैसे अन्दर से ही खत्म कर दिया। सरलता, धैर्य, गंभीरता जैसे गुणों का दान प्रदान कर निर्मोही बना दिया। आपके सच्चाई-सफ़ाई के संग के रंग ने जीवन में जादूई छड़ी का काम किया जो स्वतः ही मन प्रभुप्रेम की डोर में बँध गया। आपका रूहानी प्यार-दुलार, अपनत्व भरी पालना प्यारे परम पिता की ही भासना कराती थी। यह एक चमत्कारी कला थी जो दादी जी, आपकी आकृति से प्रत्यक्ष होती थी और दूसरों को भी निर्मोही देवी-देवता बना देती थी।

**7. सातवाँ कदम निरहंकारी :** दादी जी, आपके जीवन की यह बड़ी भारी विशेषता थी जो आप कभी मुख से “मैं” शब्द न कहकर, कहतीं थीं – “दादी” कहती है, दादी का ऐसा विचार है। कहने का भाव यह है कि दादी जी, आप इतने महान् पद पर होते हुए भी, पूरे विश्व की महान् आत्माओं से सम्मानित होते हुए भी, अनेकानेक पुरस्कार प्राप्त करते हुए भी अहम् भाव के नामोनिशान से भी परे थीं। दादी जी, सभी के प्रति समभाव, रहमभाव, शुभभावनायें आपके जीवन से ऐसे निकलती थीं जैसे गरमी में शीतल जल का फव्वारा हो। दादी जी की दिव्य दृष्टि प्रभु के प्यार में ऐसा भिगो देती थी जो सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्मायें भी रूहानियत का अनुभव करने लगती थीं।

**8. आठवाँ कदम निर्विघ्न :** संसार में या समाज में कोई भी व्यक्ति, चाहे छोटा से बड़ा, ऐसा नहीं होगा जिसके पास कोई समस्या नहीं हो। कोई न कोई समस्या होती है परन्तु दादी जी, आप परमात्म-शक्तियों एवं वरदानों से ऐसे शक्तिशाली बना देतीं थीं जो थोड़े समय में ही बाबा के बच्चे अपने आपको विघ्न रहित समझने लगते थे। दादी जी, आप कहा करती थीं, तीन बातें ध्यान पर रखो: (1) ईश्वरीय पढ़ाई (2) वर्तमान की प्राप्ति (3) भविष्य का पद। यही बातें आपको नम्बरवन में ले जायेंगी। दृढ़ता में ही सफलता है। जितना बाबा की याद की लगन में मगन रहोगे उतना ही निर्विघ्न जल्दी बनोगे। दादी जी की प्यार भरी दृष्टि, बाबा के बच्चों के जीवन रूपी सृष्टि में उमंग-उत्साह का एक नया फूल खिला देती थी जो जीवन को बोझ से रूहानी मौज में ले आता था, तब सर्व समस्याओं का समाधान नेचुरल अनुभव होता था। चाहे तन की बीमारी हो या मन-वचन-कर्मों की परन्तु मनसा के पवित्र वायुमण्डल से जीवन को कोई भी विघ्न न सताता था, न हराता था। यह भी एक अनमोल कदम है।

**9. नौवाँ कदम निर्मल वाणी :** दादी जी, आपकी वाणी में एक ऐसी ईश्वरीय शक्ति की मिठास थी जैसे कहें कि सूर्य एक होता है, किरणें अनेक, पुष्प एक, पंखुड़ियाँ अनेक होती हैं, वैसे ही दादी जी की मधुर वाणी का ओजस विश्व के चारों कोनों को प्रकाशित करता था, प्रभुप्रेम की डोरी में पिरोकर सत्यता, पवित्रता, नैतिकता के पथ पर चलने को प्रेरित करता था।

**10. दसवाँ कदम निस्वार्थ भाव एवं भावना :** मनसा योग शक्ति के द्वारा मानव आत्माओं को जागृत करना, ईश्वरीय संदेश की अनुभूति कराना, आने वाली सतयुगी दुनिया के काबिल बनाना, शुभ भाव एवं भावनाओं का स्रोत बहाकर सबका तन, मन, धन, श्वास, संकल्प, शक्ति ईश्वरीय सेवा में समर्पित कराना, ओम् शान्ति का महामंत्र सुनाकर ईश्वरीय मत का राही बनाना, मैं आत्मा हूँ, शिव बाबा की संतान हूँ, शान्तिधाम मेरा निजी घर है – इस स्मृति का बार-बार स्मरण कराना – ऐसी निःस्वार्थ सेवा करने वाली थीं अव्यक्तमूर्त, साक्षात्कारमूर्त हमारी दादी प्रकाशमणि जी।

## दादी जी के पांचवे पुण्य स्मृति दिवस पर विशेष भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश

-दादी गुल्जार

(सभी भाई बहिनों के आवाहन पर दादी जी वतन से मिलने के लिए साकार में आई और नयन मुलाकात करते हुए मधुर महावाक्य उच्चारण किये)

सभी का प्यार मिल रहा है, चाहे लास्ट में भी बैठे हो आप सबका प्यार पहुंच रहा है। अभी बापदादा यही चाहते हैं कि दुःखियों का सहारा बनो। इसके लिए ज्वालामुखी योग के ऊपर अटेंशन ज्यादा दो। चाहे लौकिक कोई भी कारोबार करो लेकिन यह ज्वालामुखी योग सदा ध्यान पर रहे क्योंकि आप ही हो जो परिवर्तन करने वाले हो। आप ही ज्वालामुखी द्वारा परिवर्तन करेंगे, सुख का संसार लायेंगे इसलिए जो एडवांसपार्टी में हैं, सभी आप सबके प्रति याद और प्यार देते हुए यही कहते हैं कि अब जल्दी करो। हम भी इन्तजार कब तक करेंगे! अभी समाप्ति के समय को समीप लाओ। आज से लेके यह धुन लगाओ अपने राज्य को लाना ही है। सुना। क्या करना है।

(8000 यूथ आये हैं) अच्छा है लेकिन यूथ ऐसे ही निर्विघ्न यूथ रहना। यूथ को देखकर हम सब भी खुश हैं, बापदादा भी खुश हैं। लेकिन यूथ यूथ ही रहें, जरा भी संकल्प में भी फर्क नहीं आये। ऐसे अविनाशी तीव्र पुरुषार्थी रहना। कभी तीव्र कभी कम नहीं, अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। अच्छा, बापदादा खुश है। आप लोगों की सेवा से खुश है। खुश आप भी हैं, बाप भी है और हम सब भी हैं। चलेंगे तो साथ ही।

(विदेश वाले भी याद कर रहे हैं) विदेश वालों की एक विशेषता बाप को भी अच्छी लगती है, हम सब भी देखते रहते हैं, वह जो सोचते हैं वह प्रैक्टिकल में करके ही दिखाते हैं। अभी विदेश में लहर है तीव्र पुरुषार्थ की और सेवा को तीव्र करने की। ऐसे भारत में भी सेवा का उमंग अच्छा है। लेकिन ज्वालामुखी योग उस तरफ थोड़ा और अटेंशन चाहिए। सेवा में जाते हैं ना तो थोड़ा सा बातें होने से थोड़ा इफेक्ट आ जाता है। अभी सबका एक ही संकल्प हो कि हमको मिलके अपना राज्य लाना है। लाना है, लाना है, लाना है।

(प्लैटिनम जुबली के समापन का फोल्डर दादी को दिया गया) इस प्रोग्राम में सभी ने रूचि अच्छी ली है। अच्छा। (ओमव्यास ने गीत गाया - न ये चांद होगा, न तारे रहेंगे...)

### वतन का दिव्य सन्देश:-

आज तो विशेष सभी के मन में दादी का आह्वान था। तो हम तो पहले बाबा के पास गई। बाबा के पास आदि की जो शुरू से लेके हमारी दादियां बोर्डिंग से लेके निमित्त बनी, वह सब पुरानी-पुरानी दादियां बाबा के साथ बैठी थी और वहाँ रूहरिहान चल रही थी, बाबा भी उनसे रूहरिहान कर रहा था कि अभी आपको क्या करना है? सेवा तो सभी कर ही रहे हैं लेकिन सेवा के साथ अभी आप लक्ष्य रखो कि हमें अभी अपना राज्य लाना है। इस संसार के दुःख को बदलके सुख में लाना है क्योंकि बाबा ने कहा तो आप लोग तो यहाँ मजे में बैठे हो लेकिन दुनिया के लोग अन्दर से कितने दुःखी हैं, वह आपको अभी इतना महसूस नहीं हो रहा है कि इन्हों को दुःख से छुड़ाना है। तो अभी अन्दर से लाओ कि हमारे ही भाई बहन जो दुःखी हो रहे हैं, उन्हों को सुख की

दुनिया में ले जाना है या मुक्ति में ले जाना है। तो अभी सबको यह ध्यान रहना चाहिए - यही बाबा उन सभी को कह रहे थे और वह भी कह रहे थे कि हम तो बाबा अभी भले साकार में है लेकिन कनेक्शन तो बदल गया है, तो हम क्या करें? तो बाबा ने कहा आप भी यही धुन लगाओ कि हमको इन सबको मुक्तिधाम में ले जाना है और जो बाबा के बच्चे हैं उनको अपने राज्य में ले जाना है। तो बाबा बार-बार उनको यही कह रहा था कि अभी इस संकल्प को तीव्र करो। सेवा कर रहे हो उससे बाबा खुश है कि सेवा का उमंग अच्छा है लेकिन सेवा में भी एम यही हो कि इन्हों को दुःख से छुड़ायें। आपके पास दुःखियों के आवाज आने चाहिए। तो अभी यह थोड़ा रहमदिल का रूप आवश्यक है।

बाकी जो सभी मुख्य हैं वह सब बाबा के पास थे। भाई थोड़े थे, बहिनें ज्यादा थी। भाई भी मुस्करा रहे थे और बाबा को हाँ हाँ कर रहे थे और कह रहे थे कि बाबा आपने जो कहा है वह हम अवश्य करेंगे। तो उन्होंने कहा कि हम एडवांस में हैं तो इसमें भी एडवांस जायेंगे। सभी उमंग में थे। फिर बाबा ने सबको प्यार से भोग खिलाया। फिर बाबा ने कहा कि सभी ने दादी को जितना प्यार से याद किया है, तो दादी को उतना ही प्यार से कहता हूँ कि जाओ और इन्हों से मिलकर आओ। फिर दादी यहाँ आई। आप सबके साथ दादी ने क्या किया, वह तो आप जानो। फिर दादी जब वापस वतन में आई तो बाबा से कहा कि बाबा सभी बहुत खुश हुए और आपने मुझे भेजा उसके लिए थैंक्स, सभी की इच्छा पूरी हुई। फिर बाबा ने मुझे भी साकार वतन में भेज दिया।

अभी आप सभी क्या करेंगे? ज्वालामुखी योग। उसके ऊपर विशेष अटेन्शन देके हमको संसार को जल्दी से जल्दी परिवर्तन करना है, यह है आजकल का काम। अच्छा। ओम् शान्ति।

ओम् शान्ति

24-8-12

मधुबन

**“निमित्त भाव रख, सच्चाई प्रेम, हिम्मत और विश्वास को धारण करो”**

– दादी जानकी

आज सभी दादी जी को विशेष याद कर रहे हैं। सभी के दिलों में दादी है। दादी ने अपना यादगार ऐसा बनाया है जो बाबा को प्रत्यक्ष करने का, चाहे स्थापना के कार्य में वृद्धि के निमित्त बनी है। मैं तो 1974 से लेकर विदेश में रही हूँ, पर सूक्ष्म कनेक्शन बेहद में रहने का दादी जी से ऐसा रहा है, जो समानता में रहे हैं। यह एक वण्डर है। दादी ने अव्यक्त बाबा का पार्ट भी बड़े अच्छे ढंग से चलाया है, जो आज अव्यक्त पार्ट भी कितनी सेवा कर रहा है।

बाबा ने कहा था कि मुरली रिवाइज होगी। आज उसी रिवाइज मुरली से सारी रचना को पालना मिल रही है। इतने सब कार्य को दादी जी ने निमित्त बनके किया है। तो मैं पूछती हूँ कि मैं क्या कर रही हूँ? दादी ने किया, दादी ने किया, मम्मा ने किया पर मैंने क्या किया? मुझ आत्मा को परमात्मा बाप ने शरीर में अभी तक क्यों बिठाया हुआ है! बाबा को साथी बनाके, निमित्त भाव से बाबा ने चलाया, सच्चाई और प्रेम, हिम्मत और विश्वास से अभी तक सफलता हुई है। अभी सम्पूर्णता हमारे सामने खड़ी है।



साइलेन्स में रह याद के गहरे अनुभव करो। एक तरफ कर्मातीत स्थिति, दूसरी तरफ फरिश्ता स्थिति। पीछे देवता बनेंगे। पर कर्मातीत बनने के लिए नींव इतनी अच्छी मजबूत हो जो कोई हिसाब-किताब पीछे खींचें नहीं, न ही मुझे खींच हो। इस स्थिति में प्रैक्टिकल रहने का अनुभव होगा तो फरिश्ता रूप की सेवा जो बाबा चाहता है वो होगी। बाबा के साथ ग्लोब को, सारे विश्व को, हर आत्मा को कैसे बाबा सकाश दिला रहा है, वो कर सकेंगे।

हमारे मधुबन में भी कितनी सेवायें हैं, हरेक आत्मा को अपना पार्ट मिला हुआ है। हरेक जितना पुरुषार्थ करे, उसके लिए स्वतन्त्र है। बाबा हरेक बच्चे को साथ देता है। परन्तु कई कम्पैरिज़न, भेंट करके आगे जाना चाहते हैं। यह देह-अभिमान छोड़ता नहीं है, देह-अभिमान जहाँ यूज़ होता है वहाँ ईश्वरीय आकर्षण नहीं रहती है।

बाबा ने जो श्रीमत् दी या डायरेक्शन दिये हैं उसमें मनमत कभी भी नहीं चलाई है। जो मनमत चलाते हैं वो अपनी एनर्जी खर्च करते हैं। इसमें अपना खर्चा नहीं होता है, तो शक्ति खत्म नहीं होती है। मेरा अनुभव है, मेरा विचार है... मैं यह भी कहने से बचती हूँ, इसमें सेफ्टी बहुत है।

बाबा ने कहा मैंने यह शरीर शिवबाबा को लोन पर दिया है। लेकिन इस आधार से मैं राज्य पद थोड़े ही पाऊंगा। मुझे अपना पुरुषार्थ तो करना ही है ना। शरीर एक होते दोनों साथ हैं। हमको भी ऐसे ही सेवा करनी चाहिए। बाबा ने तो लोन पर दिया, लेकिन हम तो समर्पित ही हो गये। बच्चे ही बन गये तो बाप समान हो गये ना। तो मेरा न तन, न मन। मुख्य बात अच्छी यह हुई है कि तन-मन सब सफल हो गया है।

पालना, पढ़ाई, प्राप्ति तीनों की वैल्यू बहुत है। सारा दिन देखो, हमारी पालना अभी तक भी कौन कर रहा है, पढ़ाने वाला कौन है? उससे जो प्राप्ति है उससे ही तो नाच रहे हैं, यह नशा हमेशा रहे। अच्छा।

25-8-12

## ज्ञान योग के बल से दादी समान सच्चा बेदाग हीरा बनना है

– दादी जानकी

सभी दादी के प्यार में बैठे हो ना। जितना दादी ने प्यार दिया है, कितना दिया है! रिटर्न में क्या करेंगे? दादी की सच्चाई सफाई सादगी तीनों से कितनी यज्ञ सेवा वृद्धि को पाई है। यह है बाबा के हाथ में हाथ देने का प्रैक्टिकल प्रमाण। जब बाबा अव्यक्त हुआ तो दादी ने जी मुरली से पालना दी है। पूरे परिवार को अपना बनाया है।

हमारी मीठी प्यारी दादी लास्ट में लण्डन में आई थी, मैं कहूँ दादी आप कितनी मीठी हो। दादी कहे बाबा मीठा है। मैं दादी बाबा बोलूँ, या बाबा-दादी बोलूँ। मुझे कहा मुझे लण्डन इतना अच्छा लगता है मैं यहाँ बैठ जाती हूँ तुम मधुबन चली जाओ। इतना अच्छा सबको प्यार दिया। जब मैंने कहा मैं मधुबन जाती हूँ आप यहाँ बैठो, तो शाम को बदल गई। यह लाडकोड, प्यार रहा है। यही अच्छी विधि है, पुराने देह संबंध से न्यारा रहने की। कोई पुराना स्वभाव संस्कार भी न रहे। यह प्यार सच्चा सोना बनाता है। हीरे मिसल जीवन, सच्चा हीरा ..बेदागी

हीरा बन जाते हैं। कोई भी छिपा हुआ दाग न हो। ऐसा हर एक आज संकल्प करे। सच्चा सोना बनना है तो अब बनना है, मुझे बनना है। सूक्ष्म ज्ञान योग के बल से अलाए निकलती जाती है।

आजकल बाबा की प्रेरणा अनुसार प्रैक्टिकल संकल्प और समय सफल करने से हीरे मिसल लाइफ बन जाती है। हीरो एक्टर कहा जाता है फिर हीरे जैसी जीवन गाई हुई है। यह गीत भी अच्छा लगता है – गुण और अवगुण में कितना अन्तर है। वह हीरा है, वह पत्थर है। हीरे मिसल जीवन बनानी है तो सर्वगुण सम्पन्न बनना है। कोई भी अवगुण हमारे में न रहे, मैं किसका अवगुण नहीं देखूँ। किसका अवगुण देखना भी अवगुण है, यह बड़ी भूल हो जायेगी।

शक्तियां वैल्युज को धारण करने में साथ देती हैं। कोई भी शक्ति की कमी है तो अवगुण अन्दर छिपके अपने पास भी बैठ जाता है और दूसरों का भी अवगुण देख लेता है।

दादी को मैं याद करती हूँ, तो दादी को देखा सर्वगुणों में सम्पन्न थी। कभी हमने आपस में किसका अवगुण वर्णन नहीं किया। दादी ने मुझे लण्डन सेवा के लिए भेजा, एक दो को रिगार्ड देना, एक दो की विशेषता को वैल्यु देना, यह हम दादी से सीखी हूँ। हर एक में विशेषता है, यही बाबा ने हम सब बच्चों को सिखाया है। यह पढ़ाई इतनी अच्छी है, पढ़ाई का इतना कदर है जो दिखाई पड़ता है, कि भविष्य की प्रालब्ध पढ़ाई से बन रही है, वह मैं महसूस कर रही हूँ। पढ़ाई एक है, पढ़ाने वाला एक है। सबका बाप, शिक्षक और सतगुरु है। पढ़ाई को पढ़ाने में बहुत साथ दिया है। शिक्षक भी फिर सखा भी है। सतगुरु भी है, श्रीमत देता है। प्यार से पढ़ाई माना श्रीमत। बाप का फरमान है मामेकम्, मनमनाभव। एक एक अक्षर में इतना रहस्य भरा हुआ है। जो गीता के शब्द हैं हे अर्जुन, अर्जुन कहता है भगवन आपका जो ज्ञान है वह गुह्य गोपनीय रहस्ययुक्त है। बड़ा प्यार पैदा होता है। रहस्ययुक्त है। ज्ञान को अच्छी तरह से मनन चिंतन करते हैं तो स्थिति सत चिंत आनंद स्वरूप बन जाती है। सेवा भले कितनी भी अच्छी चल रही है, चलती रहेगी। मेरी भावना है आज दादी के दिन पर हर एक अपना संकल्प करे स्थिति ऐसी बनाओ जैसे दादी को याद करके सभी प्यार से यहाँ पहुंच गये हो। दादी के प्यार में क्या रिटर्न दें। मिठरा मीठी वाणी बोल... मीठी वाणी कैसे निकलेगी। दिव्य दृष्टि दाता, दिव्य बुद्धि दाता, बाबा ने हमको त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बनाया है। सदा चक्र घूमता रहे। इतनी अच्छी चक्र की नॉलेज बाबा ने दी है। सारा दिन चक्र की नॉलेज बुद्धि में है और कुछ नहीं है। थे हैं और होंगे। कितना नशा चढ़ता है। खुशी, नशा, मस्ती तीनों में अन्तर है ना। जब मस्ती चढ़ती है तो सब सुध-बुध भूल जाती है। नशा चढ़ता है जब प्रैक्टिकल करते हैं फिर डायरेक्ट खुशी होती है बाबा मिला है। प्रैक्टिकल लाइफ में नशा चढ़ता है फिर मस्ती अनेक कार्य सहज करा देती है। अच्छा - ओम् शान्ति।

# My remarkable, unique and unforgettable experience on 18<sup>th</sup> January

— DADI PRAKASHMAN

Sweet Baba was always sending Dadi on unlimited service, sometimes to one place and sometimes to another. He made Dadi an instrument to open several centres: some in Delhi, in Mumbai, in Kolkata and in Bihar. He even suddenly sent me to Japan. Baba's blessings were always with me: "Child, be ever-ready every time." There used to be one signal: Child, you have to go there from here, and I would say 'Ji Baba'. Baba also used to give some or another inspiration for service on a daily basis, and would follow this by a direction.

Before 18<sup>th</sup> January, I was staying at the Gamdevi Centre in Mumbai. I had just returned a few days before with a group, and was collecting another group from Mumbai to return to Madhuban for two more days. Didi (Manmohini) had been sent to Allahabad for the half *kumbhmela*, which was taking place on 14<sup>th</sup> January for the festival of *Sankaranti*. When I arrived in Madhuban, Baba said, "Child, you have just come. Stay for four days, and then you can go." In those days, Baba did not usually allow me to stay for more than two days. I had suggested once or twice that I could stay for an extra couple of days, but Baba would say: "Why do you want to stay? Do you not have any service to do? Why should you stay here? No, go on service; fill the cloud and go and shower." So, when this time Baba personally asked me to stay, I said, 'Ji Baba'. I came on 14<sup>th</sup> January and was supposed to go back on 16<sup>th</sup>, but Baba said, "Daughter, let the group go. Didi isn't here, so stay for a few more days." Didi used to look after the entire activities of Madhuban. Baba made us children experienced in every aspect.

For the first time in *yagya* history, in all Baba's *tapasvi* life, Baba did not speak *murli* on the morning of 18<sup>th</sup> January. Baba's health had not been good since the morning, even though he was stabilized in the most elevated stage.

## Child, what will the doctor do; I am talking to the Supreme Surgeon

When I suggested to call the doctor, Baba said, in great intoxication, "Child, what will the doctor do? I'm talking to the Supreme Surgeon!" Later, he said, "Come, let me write a letter to the children." Baba took out his red pen. Baba's beautiful letters, and replies to our letters, used to pull our hearts. Baba wrote: "Children, always move along in unity, stay in the remembrance of One and always keep the *shaktis* (sisters) at the fore. Only then will there be success in service..."

The several children who received this last letter concealed it in their hearts. So powerful were those souls who received a letter from Brahma, the creator of the world, personally written with his own hand! After that, Baba held my hand and took me around the Madhuban courtyard. The training centre was under construction. Baba held my finger as he showed it to me. Then, Baba had lunch, took rest in the afternoon, met a group in the evening then had an early dinner at 7.30 pm. Normally, Baba used to have dinner daily at 8.30 pm, following which he would come to class. That night, Baba gave a *murli* filled with sweet lessons and teachings.

### **All right, children, farewell**

That night Baba came to class at 8.00 pm, and those last *sakar* versions merged in the heart forever. Baba said: “Children, experience happiness as you continue to remember over and over again. Let all the sorrows of the body be removed. Attain liberation-in-life. Children, those who defame us are our friends. You should not defame anyone, and never have any enmity or opposition toward anyone.”

After emphasizing the importance of the pilgrimage of remembrance, Baba, the father of the *yagya*, stood up and walked to the gate, where he stopped and said: “Children, become incorporeal, viceless and egoless. Just as the unlimited Father is always viceless, always incorporeal and always egoless, you children have to become like Him.”

The last words from Baba’s mouth were: “Okay, Children, farewell.” It was the only time that Baba had used such words, otherwise, usually Baba would say, “Good night.” My attention was drawn to them as Baba turned to go to his room in deep silence. Baba was so much in silence that he didn’t speak to anyone. Normally, he would sit on the *gaddi*, but that night Baba went straight to sit on his bed.

### **As his hand became slack; I continued to say, “Baba, Baba”**

I would usually not go to Baba’s room at night, yet that day, I don’t know why, I thought I should go and wish Baba good night. I saw Baba sitting on his bed. Seeing me, Baba said, “Come, daughter, come.” I hesitated to go inside because Baba was already on his bed; perhaps he wanted to sleep soon. Baba summoned me again, and I saw Baba was in deep silence. He said nothing and I also continued to look at Baba without saying anything. After some time, he turned his body around to face me, putting his feet down on the floor. I was standing before him, and Baba reached out for my hand. As Baba was seated, I standing, he holding my hand, he gave such powerful *drishti* that I cannot describe. He continued to give *drishti* for 2-3 minutes, all the while holding my hand. Baba was giving such *drishti* that a current of power was flowing into me. Baba appeared to me as only light, the light of an angel. Through his *drishti* and from his hand, Baba gave all the powers and responsibility to me.

Avyakt Baba later confirmed this: “I willed all the powers.” At the time I had not understood this, but as he continued to give *drishti*, his eyes changed and his hand became light; then it became slack in my hand. In one second, there was such a silence, an absolute dead silence. I couldn’t understand what had happened, but later I came to know that Baba had become *avyakt*. I felt that Almighty Baba was before me, and Sakar Baba was concealed within.

I made Baba lie down. In the meantime, the doctor arrived and said that Baba was no more... but I never felt that Baba had left. I continued to say, “Baba is here; everyone’s beloved Baba is still with us, and will continue to be with us!”

Baba had filled limitless power in me. I was calling everyone on the telephone, saying “It was fixed in drama. Do you remember drama? Baba has become *avyakt*. Whoever wants to come is welcome. No one should shed tears; Baba is still with us.”

### **Children, don’t worry. Baba went to the subtle region to prepare for you children**

By placing his hand in mine, Baba had increased my courage. I was unshakable. Not one question came as to ‘what has happened?’ or ‘what will happen now?’ Neither did my eyes become wet with tears nor did my heart become heavy. I had complete faith that our

study would continue until the end. On 21<sup>st</sup> January, the final rites were performed for our beloved Baba's body: for he who had given us so much more love, affection and sustenance than any *lokik* father, in whose lap we played as we grew up from small to big, through whom we found God, received blessings and who filled us with several specialities.

That evening, Avyakt BapDada came for the first time in the body of the messenger. Baba gave the entire responsibility of *yagya* to Didi and Dadi, putting the urn on both our heads. Baba gave the message: "Children, don't worry. Baba went to the subtle region to prepare for you children. My beloved Child is with me. Baba has played this part to reveal you *shaktis*, and to keep himself incognito." These words continue to ring in my ears until today.

In this way, making several children sit in the boat of the *yagya* for 33 years, the boatman had guided it safely through obstacles and storms with the limitless courage that enabled it to continue with great stability. Now, he had put the responsibility of that boat in our hands, and flew to the subtle region to become our complete helper.

**Baba is the father of the *yagya* even today;  
it is he who is running the *yagya***

I feel that Baba is always with me. It is He who is getting everything done. I have His canopy over me; He is on my shoulders, He is in my eyes. I receive divine inspiration from Baba. We are all His shoulders, and He takes care of His shoulders. When any big task occurs in the *yagya*, I consider myself to be an instrument. I never experience any burden. When anyone comes to take advice, I immediately become *yogyukt* and ask Baba. Only then will I offer advice. I never have the consciousness that I am giving advice. I always have this concern that Baba's select children should come to the *yagya* to take their right and inheritance.

★ ★ ★

## *Dadiji was very positive & was always open to new ideas*

**Dr BK Nirmala, Australia**

*I came to know Dadiji in 1964 when she was appointed as co-ordinator of Mumbai branch. She was a kumari but had many motherly qualities; she was very loving, caring and sacrificing. She was also very humble and had great interest in all yagya activities. Dadiji used to visit different centers, countries and of course, Madhuban, the headquarters.*

*In the Brahma Kumaris, a leader does not just take responsibility for spiritual aspects but is also involved in administration and managing household activities such as buying grains, fruits and vegetables, and general stock, the maintenance of buildings and gardens, Dadiji always knew what was in stock. She also knew a lot about construction. She kept tabs on the price of a square feet of land, how much it cost to make different types of tolis. Following in Brahma Baba's footsteps, she used to visit the kitchen and construction sites every day.*

*Brahma Baba was a unique teacher and trainer. He trained many senior teachers and trainers such as Jagdish Bhaiji, Ramesh Bhaiji, Nirwair Bhaiji and Brij Mohan Bhaiji. All the dadis had in-house training for 14 years on the subjects of knowledge, yoga and dharna. It was Brahma Baba who established the administration model and Dadiji who followed it.*

*She had numerous administration specialities. Perhaps, the most prominent of these were:*

- a) She was readily available to listen to suggestions and complaints.*
- b) She would create plans with the other 2 administrative heads and senior brothers. She would then present those ideas in front of the full gathering of staff before implementing them.*
- c) She regularly visited each department and held meetings with them.*
- d) She was action orientated and plans were implemented immediately.*
- e) Like a mother, she would take the staff for picnics, to play games and on tours of nearby cities.*
- f) Because of her friendly and loving nature, whenever she would make a request or ask for something to be done, everyone would do it immediately, even if they had to sacrifice rest, food or comfort.*

*Dadiji shared the responsibility of looking after various departments with individuals. She personally trained those individuals, trusted them and gave them the authority to co-ordinate departments.*

*Dadiji was very positive in every aspect. She was always open to new ideas. She would suggest experimenting with new ideas on a small scale to see how they worked before implementing them. In this way, all BKs felt listened to and inspired. Her sanskara of inclusiveness gave everyone a sense of belonging.*

*She was not only a good administrator, she gave good lectures and had a charismatic personality. Her inspirational tours to various cities and overseas helped local teachers promote the teachings of the BKs and VIPs came closer to the BKs.*

*In India, one senior sister was appointed in each zone as zone-in-charge to oversee activities in the various zones. Dadis with over 30 years of experience were sent to Calcutta, Delhi, Kanpur, Bangalore, Chennai, Indore, Bhopal, Amritsar, Mumbai, etc. Through exhibitions lectures and seminars service expanded a great deal during the 60's and 70's.*

*Dadiji loved to meet people. She would sit in the courtyard every day and answer even the smallest questions. Many sought her guidance in all aspects of life.*

*After Brahma Baba became avyakt in January 1969, Didi Manmohini and Dadiji started training of kumaris to empower and inspire them. At that time many kumaris surrendered which, in turn, helped service expand.*

*One of Dadiji's specialities was her balance of love and law. Once two brothers had a conflict and one hit the other in the meditation room. The way Dadiji dealt with the situation was to call senior Madhuban Niwasis and ask them if the brother who hit the other should be sent to his home. Only when everyone agreed, was he sent home. Dadiji would sometimes correct someone but afterwards would not carry on thinking about it but would maintain pure vision.*

*When I first traveled overseas, Dadiji gave a grand farewell. On my return, they gave a grand welcome. When I first went to New Zealand, I stayed in the homes of various contact souls. Living in such an environment was challenging. When I wrote my experience to Dadiji, she replied saying, "You are like a lioness who moves around alone whereas elephants move in herds." This letter of praise and encouragement helped me to stay overseas and establish new centers despite the challenges of unfamiliar environment and culture.*

☐

## *Her Message was Her Life*

**BK Charlie, Australia**

*It was very early on the morning of the 22 August 2007 that we heard that Dadiji was in a coma and unlikely to survive. I was in Sydney, a 14 hour flight and a 4 hour car ride away from Mt Abu but immediately I had the pull to go but it was not until I sat in meditation at 4am the next morning I finally decided to go. I packed, booked my ticket at 9am and flew at 11.30am the same morning.*

*I arrived in Shantivan the next morning 24th August and as soon as the car stopped we went to see Dadiji in her cottage. There was a very sweet silence in the atmosphere and Dadiji was so still, breathing slowly like the sleeping beauty. Dadi Gulzar and others were sitting quietly in the room. In Diamond Hall there was continuous yoga going on and it felt like the whole of Shantivan was immersed in this sweet silence.*

*The next morning it was the 25th August. Class had just finished and I saw Nirwair bhai who told me to visit Dadiji. She was breathing lightly and just seemed beyond but I noticed the machines beside her bed registering her blood pressure and other medical functions were fluctuating quite significantly. I went for breakfast and then returned to Dadiji's cottage where now thousands of brothers and sisters had congregated outside. All the senior brothers and sisters suddenly began to arrive and rush inside. We all know what was happening inside.*

*Eventually I also went inside into Dadiji's room. It was a scene that I will never forget. It is etched on my memory track. Around Dadiji's bed were her companions and friends of seventy years, Dadi Janki, Dadi Gulzar, Dadi Ratan Mohini, Dadi Manohar Indra, Mohiniben, Muniben, the senior brothers and more. I notice all the machines were now registering zero. Dadiji had flown. Everyone stood so quietly. The silence was stronger than ever. The feeling was one of such great reverence, of profound respect, and a purity of love that only Dadiji drew from all.*

*Over the next few days the tributes flowed from all corners of the world. From the BK family; from the Leaders of India; from Religious leaders; from the residents of Abu Rd and Mt Abu; from the workers and the ordinary village folk; from everyone. What was in Dadiji that drew such profound love and total respect from everyone? Each one had a personal story to share of how Dadiji made them feel special, how she included them, how she valued them, how she helped them, how she always showed respect. She touched hearts everywhere and won universal love and respect. At every moment her drishti of love and her radiant smile transformed the atmosphere and uplifted everyone. I remember Dadiji once shared how much she valued the blessings of the divine family and how she was careful not to lose the blessings of even one. She said the blessings of the hearts of others was like a power that helped her move forward. Once Baba said if you want to become full of all virtues become a Bestower of respect. This was Dadiji's life. She gave everyone unshakeable respect and received it from all.*

*In the early 1990's I was part of a small team making a film about the Dadis called Women of Spirit. In New York we interviewed Dr James Jonah who was Under Secretary General of the United Nations for Political affairs at the time. This meant that he interacted on behalf of the Secretary General, with many*



of the World's leaders during the Reagan and Gorbachov era. I asked him of all the leaders he had met who was the most impressive. Immediately he answered "Dadi Prakashmani". He said that Dadiji's leadership was not by cleverness and force but by the example of her own life. He said that this leadership wins the trust of all around and today we have lost trust in our leaders because what they say and what they do are different. He went on to say that Dadiji's words were reflected in her actions and how this was the leadership that inspired people and what was needed in our world. Once Albert Sweitzer was asked about effective leadership and he said "Example is not the best form of leadership it is the only form of leadership". By observing Dadiji we could see what was the result of Baba's teachings and where our study was leading us.

After Dadiji's passing there were many bhog messages. In many of these messages Dadiji gave us two special gifts in the form of self respect and respect. When Brahma Baba passed away he summarised his efforts with the words incorporeal, viceless and egoless but it seemed these two gifts were Dadiji's message of what took her to the highest stage of a living angel. Her natural purity created such an easy self respect that was so attractive. A good leader creates self respect in himself or herself but a great leader creates self respect in others. Once a group of us were sitting and chatting with Dadiji asking her experience of managing such a huge yagya with so many different personalities. She told us first I listen then I teach. When others feel listened to they will listen to you. She then went on to say I give freedom to everyone I don't try and control anyone. She explained when you give freedom, others will come close naturally and they will want to listen to your ideas and opinions. If you try to control others you push them away and they will never listen to your ideas and opinions from the heart. She also said that I trust everyone. She consciously invested trust in everyone as that brought them close. Finally she said I give good wishes and pure feelings to all. The power of this pure attitude of Dadiji created unity in the entire Brahmin family. This attitude of respect for all brought everyone together and showed us an example of how to have divine and soul conscious relationships.

Dadiji's unshakeable self respect was the foundation of her humility. On her first visit to Sydney in 1977 we had a big public event at Sydney University. It was the first such event we had in Australia and so afterwards we returned to the centre a little tired. Dadiji noticed and proceeded to the kitchen to cook and serve us all soup with so much love. How many who are heads of big international institutions would serve in such a way. A sister from Mumbai was telling us her experience of Dadiji's humility. She came into gyan as a girl and attended the centre where Dadiji lived in Mumbai. Only a few years before Baba became avyakt a group from the centre took a train to Madhuban to meet Baba.

When they arrived at the station there was one less ticket to the number travelling, so it meant that one of them had to sit on a bag of grain between the seats. As she was the youngest she sat on the bag. In the middle of the night Dadiji woke up and saw this 17 year old girl sitting on the bag of grain. Seeing this Dadiji gave her bed to the young sister and sat up all night on the bag of grain remembering Baba. This was only a few years before Baba appointed her to be the head of the Institution.

Dadiji was so great yet so humble. Dadiji never felt she was the head of the institution. She had such a deep feeling that she was just an instrument and Baba is doing everything. Once I asked her if she would visit Australia and she answered "If Baba gives Dadiji permission she will come but if Baba does not give

*permission, Dadiji cannot come". She talked about herself in the third person like it was just a role, a part she was playing. She had no sense of position or importance that made her feel superior but she always had the feeling I am an instrument, I am a server. I think this egolessness was why Baba trusted her so much. She did not use the position to create her self respect like most leaders do today but her self respect made her a natural leader.*

*Dadiji was a living bouquet of virtues but I always loved her sense of humour. On my first visit to Madhuban in 1975 we were meeting Baba in the History Hall. All the personal meetings had finished and the Seniors were chatting with Baba. Dadiji then told me to speak to Baba in Hindi.*

*As I don't know Hindi she would speak a phrase and I would repeat it to Baba. She said in Hindi "Baba I love you" and I would repeat. Then "Baba, I looked for you for so long and now I have found you" and I would repeat. Then Dadiji said something which I again blindly repeated and everyone laughed and laughed including Baba. Dadiji said in Hindi "Baba, I am a monkey" and I looked in Baba's eyes and repeated it with so much love. It was all in good fun. Dadiji carried herself with so much dignity as a leader but in a second could become a playful child. Dadiji has moved on but her example lives so strongly in my heart.*

*Her life was her message.*

## *Dadiji was truly a great spiritual leader*

**BK Brijmohan, New Delhi**

*I always felt very close to Dadiji, I think everyone felt that way with her. Dadi Prakashmaniji made each person of this divine family feel as if he or she was the most valuable, worthy soul; she could give everyone the feeling that they were very special. Everyone was special in her eyes and that is why she never gave special gifts or toil (prasad) exclusively to anyone.*

*She never found fault with anyone but always encouraged and appreciated the specialities of others. Whenever people visited Madhuban (Mt. Abu) she took great care that they are satisfied and staying comfortably. She personally saw to it that everyone had good physical and spiritual sustenance. She played a perfect role as the head of the spiritual family.*

*Dadiji was completely egoless. As the chief of such a large spiritual organization she exercised her authority with great humility. She always reminded others that it was Baba's (God's) work and He was getting everything done. She crossed all challenges with complete faith and surrender to Baba.*

*She was a charismatic spiritual ambassador. She traveled worldwide and met numerous heads of state and leaders from different walks of life with whom she shared the message of peace. Her spiritual charm gave them all in instant feeling of spiritual bonding and pure love. She was truly a great spiritual leader.*

☐

*Dadiji a woman fearlessly lived the life of Truth*

**BK Mohini, New York**

*One of the most beautiful praises of God is that He is Satyam, Shivam, Sundaram. It means He is Truth, the Benefactor, and the most beautiful.*

*These three qualities and the experience of these qualities keeps coming in my heart when I think of Dadi Prakashmani. Dadiji one time stood up in a very big gathering and said "I can say that I have never spoken a single lie in life". The audience was spell bound but the way it was spoken everyone in the audience acknowledged this truth with grace.*

*During various situation in life there is always the possibility of adulterating the truth with some excuses and reasons. Here this woman fearlessly lived the life of Truth: Truth in thoughts, words, actions and all relationships. It definitely left a big impact on the lives of many of us.*

*Her pure unconditional love always made her the image of one who will always bring benefit in people's lives. She was benevolent leader. Her heart was generous and full of compassion. It was very simple for*

*her to forgive. She always had a very pure vision towards everyone. She always created friendship. She was good friend even to the elements.*

*Beauty was radiant in her personality. Her eyes always were sparkling with love and beauty. She would make everyone feel beautiful. Her natural quality of giving respect to everyone was coming from her own self respect. Dadiji was natural.*

*From these three qualities she served every moment of her life. Life and service were very much integrated. This also made her image of simplicity and solutions. We would often walk in her room with some questions and problems. She will simplify everything and make us find practical solutions.*

*She was very creative, full of pure energy and ever-ready for unlimited action plans. She was able to manage the vastness of a task with great confidence and ease.*

*She was a leader who always reminded us that for creating peace, you need to be peaceful. Different leaders from all walks of life like politicians, religious leaders, etc. were very inspired and bowed in front of her with respect. She was loving but detached. She was firm but also very flexible. A leader who guided through her life as an example.*

*Thinking of Dadiji' creates a flow of beautiful energy in me.*

*My salutations to Dadiji.*

☺

# THE SMILES SHE LEFT BEHIND

By Uncle, Aunty and their family, Trinidad

Dadi Prakashmani was like a diamond with many facets. Every smile left an indelible impact on the lives of those she touched. The radiance of her smile exuded the coolness of her character, and it drew others into the soothing comfort of care and compassion. The brilliance of her smile shone through the magnetic attraction of her eyes, revealing the many sides of love free from selfish attachments and beyond the reach of 'I' and 'mine.'

Dadi was a leader and a mother. She led with an open heart and an open mind. However her greatest genius was her smiles. Her smiles revealed the light of new understanding.

Dadi has been an integral part of our family ever since we first met her in 1976. Over the years, we have had the privilege to share many meaningful experiences with her. Below are some inspired moments and cherished smiles that make her immortal presence a living legend.



*HER HOLINESS DADI PRAKASHMANI*

## HER EVERLASTING SMILE ...

—Uncle Steve Naraine

“I remember Dadi most for her faith in God. During the period when I served as the High Commissioner of Guyana to India Dadi would invite me to the coordinating committee dealing with international affairs meeting in Mt. Abu every year. At this meeting many different ideas were generated regarding world service and the direction that it should take. Dadi’s presence was outstanding and her outlook was pleasant. Whenever a situation arose in the meetings where there was a disagreement and something was said out of the way, Dadi would respond with a wide smile. Without saying anything the smile reflected such love to the people involved that they would take courage and strength from her smile and correct themselves.

After days of discussions and final agreement decided on, and everyone thought that a firm plan was developed, Dadi would say: “let’s hear what Baba has to say.” She would ask Dadi Gulzar to go to Baba and get a response as to whether this is the path to pursue. Every time this happened I saw her as a true instrument of God and how important it was for her to pursue the direction of service according to the plan of God.

The remarkable thing was that the 100 or so people attending the meeting never questioned her and would wholeheartedly support her pursuit of getting the final decision from Baba. This, I feel has been the remarkable success of growth of the organization.

The smile that touched me the deepest, was at the end of her time with us when she was very ill and I visited her in Shantivan in her cottage. She looked deep into my soul and offered me a piece of *toli* (sweet) and then she gave me a wide smile and asked me to break off a piece of the same *toli* and feed her. Our eyes were locked in sweet *drishti*, and our smiles were broad and wide and time stood still. Such remarkable closeness can never be forgotten nor can it be described. It was as if we both realized that it was the last meeting in this present life and what she was leaving behind with me was her everlasting smile.”

### HER LOVING SMILE ...

–Aunty Betty Naraine

“It is difficult to describe how it actually happens. One look into her eyes and our hearts would open to receive the abundance of love that was flowing through her whole being. The love of her soul flowed through her eyes. And her eyes showed us the emergence of a golden dawn full of newness. We felt as if her heart was touching our hearts. It was something so magical – her soul actually smiled!

She took with her smiles, and she gave with her smiles. Her smile took all our mental and emotional burdens and burnt them with the fire of her love leaving us free and light. And her smile relaxed our minds and hearts with the assurance that everything was easy and the impossible would become the possible.

She was called the Chief Administrative Head, but her leadership skills were all from the heart. She led the organization with the power of love.”



*Unlce and Aunty meeting with Avykt BapDada*

### HER RADIANT SMILE ...

–Savi Naraine

“Dadiji’s smile was one of a kind. It started from her eyes and moved slowly down to her cheeks making her face sparkle like a diamond. Her smile was like an energy that pulled you into her heart and gave the comfort of love, strength, and most of all, the experience of divinity. Her smile spoke volumes, and along with that special twinkle in her eyes, she pulled you not to herself but to her combined form of being with BaapDada. Her smile had the pride of a deity and the innocence of a child, a very rare combination indeed.

I cherish the beautiful moments spent with her and whenever I think of her I see her radiant smiling face, and twinkling eyes sneaking me with her into the intimacy of God’s world, a world of peace, beauty, and love.’

### HER ANGELIC SMILE ...

–Sita Naraine

“Her smile exuded the brightness of a million stars shining around an angel and yet you can experience the ‘landscape smiling in the sunlight.’

Her hug was like having the rainbow wrapped around you.

Her laughter had the ring of a child, but as her eyes closed, which was so peculiar in her case, I experienced her shutting out the physical world and enveloping me in the inner world of her heart and seating me on God’s heart throne.”

### HER PLAYFUL SMILE ...

–Gayatri Naraine

“The anticipation was high and it kept rising higher as the ticking of the clock counted down the moments to Dadi’s arrival. It was her first visit to Guyana, and she and her entourage were nearing the center from the airport. The street was lined with people waiting to welcome her. And the steel band

players stood poised to play Indian music on Caribbean pans. I stood at the top of the stairs anxiously observing the excitement down below. My job was simple. I had to pull a string attached to a folded piece of cloth hanging from a canopy holding rose petals. The idea being that before Dadi entered the building of the center she would be showered with rose petals at the threshold.

She began to climb the stairs and with each step she took, my nervousness grew with the persistent thought: “would this string thing work?” I timed her well and as soon as she was standing at the threshold under the cloth, I pulled the string and waited. There were no rose petals. My nervousness took over and I kept pulling harder on the string. Still nothing happened. Dadi stood there quietly looking at me – at the horror and embarrassment on my face.

Then she smiled. And her smile started playing with me. She looked up at the cloth still holding the rose petals and then back at me, a couple of times and each time her smile was more playful with a tinge of amusement. Everyone started laughing and the tension evaporated. Her playfulness made an otherwise awkward moment into a very funny one.

Later that night, when most of the guests had left she took me by the hand and led me back to the spot at the top of the stairs. She took the string and gave it a jerk and out came the rose petals tumbling down on both of us. By this time we were all joyfully laughing.”

Dadi saw life as a seamless whole and the world as a manifestation of God’s family. As a spiritual leader every imprint of her life offered this highest realization as she led from the authority of her experiences and the recognition of the benefit of every scene of the drama. As a world mother her role as a spiritual leader offered the opportunity to love, to serve, and to give.

May this article ignite the precious moments you shared with our beloved Dadi Prakashmani.



## **Dadi Prakashmaniji was concerned about welfare of everyone - BK Shashiji, Madhuban**

Those who had the beautiful fortune of meeting Dadiji know clearly that Dadiji is a treasure-store of specialities. Just like Sakar Baba, one of the most striking qualities of Dadiji is her vast, ocean-like heart and the pure love she has for Baba, the yagya, Brahmin family and all of humanity.

### **DADI'S SUPPORTING FAITH IN ME**

I began residing in Pandav Bhawan in 1974, then on Dadiji became instrument to help me progress in my spiritual life. There were many times when Dadiji entrusted me with responsibility for a new task. As I was fairly new, I would not be sure what to do and so I would openly tell Dadiji, "Dadi, you have given me this task but I don't know how to carry it out". Dadiji would reply, "Baba and Dadi have faith in you and know you will be able to do it". Dadi's faith was the guiding force through which I developed arts and skills on the service field.

### **DADI'S ACCOMMODATING HEART**

Beside other services, I was given duty of arranging accommodation for our foreign students and guests. Dadiji would love to invite souls to Madhuban but there were times when accommodation would get filled up, and there wouldn't be space for foreigners or guests. I once had asked Dadiji, "There isn't suitable space here so why are more guests being invited?" Dadiji's reply was, "This is Baba's home, things are possible, just big-heart is required". With adjustment and re-arranging, everyone used to settle down comfortably. There were several times when Dadiji herself would personally see that the halls were properly set up.

### **DADI'S HUMILITY AND LOVING INTERACTION WITH JUNIORS**

Dadiji had once hosted a gathering for Religious Heads, Mahatmas and Saints in Pandav Bhawan. During their stay, Dadiji met the great souls individually in her Meeting Room. I once took a Mahamandleshwar to Dadiji. Dadiji made me sit next to her during the meeting, which was noticed by the Mahamandleshwar. He was touched by this gesture and later told Dadiji: "In our ashrams, neither a disciple nor any junior is permitted to sit by our side, at our level. Moreover, they need to be seated at a distance of few feet. But I just saw how comfortable you are with the younger sister sitting next to you. This made me realise the greatness of sustenance bestowed by Baba and the Dadis. This genuine love is the key to progress and expansion. Soul-conscious love and equal respect for all are the greatest virtues. I now understand how big-hearted and far-sighted Baba was and how the Dadis are following Him perfectly."

Dadiji never ordered anyone to carry out a task but would always initiate it herself, begin the task and inspire others to cooperate. When Om Shanti Bhawan was being built in 1982-83, the entire rocky mountain area had to be cleared which was a huge and difficult task. Dadiji would often visit the site to build up everyone's enthusiasm and dedication towards the project.

### **DADI'S INTEREST IN SPORTS & RECREATIONAL ACTIVITIES**

Apart from being excellent in spiritual knowledge and yoga, Dadiji was always interested in sports and entertaining activities. Dadi knew the importance of leading a balanced life and paid attention to keeping the body fit as well. Despite her age, Dadi was active and believed that we have to keep both mind and body healthy.

Dadi would play badminton and even cricket at times. Dadi would often make programmes for all of us to go to Peace Park to play games and engage in other recreational activities. Dadi was very spontaneous in planning such outing. Not only would Dadi join us in the games, but she made sure everyone was present and participating as well. Dadi's enthusiasm was always on a high. We once held a Sports Competition of the Niwasis in Peace Park and Dadiji motivated everyone to participate in any game. Dadi spent so many hours with us on that day ensuring that everyone had a good time.

Dadiji also taught us to enjoy the beauty of nature in every season; she would sweetly remind us to become rivers of knowledge, ever-flowing to quench the spiritually-thirsty souls. During monsoon season, Dadiji would call us all of a



sudden and tell us to get ready as we were going on a picnic to see the waterfalls etc. It would be a beautiful feeling of togetherness and family love.

#### DADI'S ADMINISTRATIVE SKILLS PAR EXCELLENCE

Dadiji never saw herself as an 'administrator'. She always considered the yagya to be foremost a family. Before beginning any task or assignment, Dadiji would first invite the main coordinators of the concerned departments for a meeting. She would present the whole task before them and take their opinions and suggestions. Having considered all aspects and hearing everyone's thoughts, Dadiji would go ahead with the best decision.

Despite being senior in age and position, Dadiji remained ever-light with her juniors. Dadiji understood everyone's specialities and distributed the service accordingly. Dadiji felt it was important that everyone was involved and no one was left out.

#### DADIJI'S ACCURATE FLOW OF COMMUNICATION

I am very grateful to Dadiji for having taught me the art of communication. Her system of being clear with service companions was really phenomenal. Dadiji would directly communicate with instruments who were involved in a particular service, give them directions and then follow up to see that everything was going smoothly. This is the reason why every project became successful under Dadiji's guidance. Dadi never said, "Dadi has done this and that" – Dadiji always said, "It's Baba's wonder, and He is doing everything".

Living in Pandav Bhawan for so many decades, I was able to receive perfect training from Dadiji. The faith she had in juniors enabled them to grow and improve. Dadiji never kept anyone's weaknesses in mind, but always merged situations like an ocean and forgave souls if they realized their mistakes.

#### DADI'S GENEROUS AND CARING NATURE

Dadiji respected and looked after everyone – whether elderly or young, senior or junior, cleaners/labourers or VIP guests. Dadi's heart was so clean and clear that it could merge anyone in it. There was a time when I had slight pain in my arm; when Dadi heard about this, she instantly took out the sweater she was wearing and made me wear it! She could really tap into the hearts of juniors. Her loving behavior was so heart-warming and filled my eyes with tears of love.

Dadi was always concerned about welfare of anyone coming or living in Baba's home or centres. She would also ask about the workers, maids and cleaners, see that they were all right.

#### DADI MADE US TO FEEL VERY CLOSE TO BABA & YAGYA

Dadiji appreciated us being honest with her. We would often meet Dadiji during the day and evenings to share whatever had happened in service or amongst companions. In this way, we were able to get Dadi's advice and her faith in us increased. Many times, I would be pulled to go meet Dadiji and she would say, "I was just thinking about you, and you have come. Was it my thoughts that attracted you or your love pulling me?"

Dadiji taught me that when our thoughts and mind are clean and clear we can have powerful yoga with Baba, secondly come closer to the seniors and thirdly, experience Baba's canopy of protection constantly. I never thought or expected I would be doing service so closely with the Dadis or senior instruments, but Dadi's powerful vision and her faith in me helped developed faith in myself and Brahmin life. I remain ever-grateful to Dadiji for nurturing me so lovingly.

Dadiji's far-sightedness and nature of being unlimited in vision, attitude and service was the main reason how service expanded not only in Madhuban, but Bharat and abroad also.

### **Magic touch of a Farishta - BK Vijayaji, Gulbarga**

Even today I remember the first time I met Dadi Prakashmaniji, it was March 1977.

We travelled to Madhuban by train, in those days train journey was not much comfortable. I was much tired due to long journey. We had been called to history hall to meet Dadiji. We all were sitting in the hall for sometime. Dadiji entered the hall, she waved hand with lot of smile on her face. When I saw Dadiji automatically my tiredness went away and I started feeling fresh.

When my turn came, I slowly walked towards Dadiji and suddenly felt that I was walking towards an Angel. When Dadiji touched my head with lot of love I had a feeling that a Farishta had touched me. Dadiji took my hand gave the Toli, drishti and bestowed love on me. Many a time Baba mentioned Farishta swaroop in Murali but I had never imagined I would meet a Farista in real life.

In the year 1980 Dadiji came to Gulbarga Sevakendra. In those days Gulbarga centre was housed in a small building with five rooms. We were rather hesitant to bring Dadiji to a small place like that. There were no sofa, no dining table. But Dadiji never made us to feel that it was too small place for a big personality. She was happy and made us happy. She entered the kitchen and praised us for keeping a well arranged kitchen. Dadiji and Mohini bahenji had took meals by sitting in class room and said that the food was very tasty.

Dadi asked us to organise the Global Cooperation for a Better World Conference in 1988. It was her magic touch that it became an Inter National Conference because the delegates from London, Australia, America, Delhi, Kurukshetra etc., were with us along with Dadi Janki, Jagadish Bhai ji and Jayanti behn. It was a grand success and memorable one.

I had an opportunity to accompany Dadiji to Mahaboob Nagar. All the time she spoke lovingly and treated me as a child. Whenever she called me "Vijay" I had a feeling that I am marching towards victory.

27th January 1996 was the most happiest day for Gulbarga BKS. Dadiji inaugurated "Satya Teerth" our new building. The then Vice-Chancellor of Gulbarga University Prof. N. Rudraiah invited Dadiji to inaugurate "Value Education Conference" at University Campus. Dadiji addressed a big gathering of Professors, students and the cream dignitaries of Gulbarga. Dr. N.Rudraiah had been impressed so much that a hostel building was named as "Gyan Sarovar" as remembrance of her visit. Dadiji stayed for only one day, even then Gulbarga people experienced the Magic touch of the flying FARISHTA.

### **Dadiji was an able administrator, great spiritual leader - b.k. nirwair, mount abu**

As shared by Dadiji herself during her chats over the years, she belonged to a devout family. Her father would always adore her as 'the Meera of their household'. He knew astrology and had written Dadiji's horoscope. According to his convictions, Dadiji joined Om Mandli at the tender age of 15, when she had the visions of Shri Krishna playing the flute and dancing with her.

She started attending satsang at Brahma Baba's house regularly and later surrendered her life in Godly service. She became one of the teachers in the boarding school set up by Brahma Baba for young children whose parents wanted them to receive both physical education, as well as spiritual upbringing. She explored the depths of spirituality by learning and practicing for 14 long years at Karachi and then at Mount Abu, under the supreme guidance of Shiv Baba, Brahma Baba and Mateshwari Saraswati from 1937 to 1951.

DADIJI TAKING OVER RESPONSIBILITY OF THE YAGYA AFTER BRAHMA BABA BECAME AVYAKT

Dadiji had inborn qualities of leadership, and her mere presence would inspire everyone to cooperate in any great task. She had the ability to inspire everyone and receive their whole-hearted cooperation in Godly service. Her

personal example of sterling purity and divinity automatically commanded respect, love and appreciation from all, be it saints or the householders, be it political leaders, administrators, scientists, engineers or social reformers.

Many, many important brothers and sisters, or rather whole families received spiritual benefit and became firm believers of Brahma Kumaris' philosophy. Her drishti and words were like Midas' touch for many young sisters who became involved with the Brahma Kumaris as student members, and later as dedicated Brahma Kumari Teachers. Her personal inspiring qualities became the accepted parameters for the highest standards of a Brahma Kumari Teacher's conduct and lifestyle. Thousands of surrendered sisters and brothers were inspired by her ever-winning smile and heart-touching behavior. She could endear anyone to her from any background within no time with her pure vibrations, loving nature, friendly interactions, and unassuming loving touch.

#### DADIJI'S EFFICIENT ADMINISTRATIVE SKILLS

Dadi Prakashmani had been identified as one of the best administrators by the Founding Father, Brahma Baba. She was considered almost as efficient an administrator as Mateshwari Saraswati, the first Administrative Head of the Brahma Kumaris. Before Brahma Baba left his chariot for the subtle region, he passed on the baton to Dadi Prakashmaniji in a very subtle, divine way. While sitting on his bed in Pandav Bhawan, Mount Abu, with Dadiji standing in front of him, Baba gave his hand in Dadiji's hand and gave her divine drishti, before ascending to the subtle region on 18 January 1969 evening.

Dadiji was a very able administrator, great spiritual leader; very caring mother and sister; very strict teacher who would always bring home the spiritual depths; a very regular, accurate meditator; very friendly sportsperson and very loving spiritual friend. She expressed all these qualities through a variety of activities on local, national and international levels thereby revealing to the world how Brahma Kumaris World Spiritual University was the only spiritual university in the world that offered a unique way of education for divine life onto people of all ages, religious beliefs and national backgrounds.

Dadiji had many winsome ways to inspire the responsible sisters and brothers and so enable smooth running of all Brahma Kumaris Centres. Dadiji always wanted us to think about something new, something great while organizing Godly service every year so that God's message reaches far and wide all over the world, beyond all boundaries.

She would herself lead the organization of national events or global projects where hundreds of thousands of people would take benefit. Those events were in the form of big exhibitions, spiritual fairs, Universal Peace Conferences, Global Initiatives for a better world, and Mega Programmes in the form of big festivals in capital cities where the participants ranged from 100,000 to 300,000 at a time.

Her inspirations during meetings were always focused on the youth and intelligentsia alike, to help create new methods for taking the Godly message to far and distant places, including villages, small towns, hill stations et al. As a result of her guidance and inspirations, there are over 12,000 sisters and 3000 brothers fully dedicated in the service of humanity, who look after 8500 centres in over 137 countries.

Under her patronage a very powerful global team of thinkers, planners, administrators, executives, artists, and workers numbering over one million has been working continuously with a very definite aim to bring about positive transformation in the world for a very peaceful, healthy, clean and caring society. Dadiji proved to be the most successful captain of a great team of spiritual teachers, our beloved Dadis, senior sisters and brothers who have pledged themselves fully in God's work for life.

#### DADIJI'S PERCEPTION OF LOVE AND LAW

Dadiji had a very clear concept of educating all sisters and brothers about the Godly Spiritual Laws and inspired them with the power of Godly love to inculcate spiritual discipline lovingly and sincerely. She created her own example of accepting and living by those concepts, and therefore her word had the power to command love and

respect from all the dedicated Brahma Kumaris and Brahma Kumars, as well as from all the student members whether they were leading family lives or were single.

In her final years of administration, she was once asked what she thought about the balance of love and law. Dadiji answered very sweetly, "For Dadi, love is the law." This was the most valuable secret of her life, and it was this natural approach of hers: "Love is the Law" that had endeared her to the elders, youth and children alike. She had the capacity and ability to become an elder amongst elders, a thinker amongst thinkers, an administrator during administration, the best divine family friend for patients and be able to behave like a child while playing with children. She was so, so loving and yet always detached.

#### DADIJI'S DIRECTION/INSPIRATIONS

Dadiji was an inspiring example of 100% pure and divine life which she would sometimes express very innocently by saying, "Brother/Sister, I have never spoken a lie in my entire life. Nothing else but the truth has always been in my thoughts, words and deeds." This makes for a great statement like, "God is Truth" and "Truth is God". This fact made her like a mirror for others and inspired them to be truthful in their behavior and interactions. Due to her purity, she had the power to inspire others to take the vow of purity, even amongst big gatherings during conferences and festivals.

#### DADIJI'S CONTRIBUTION TO THE UPLIFTMENT OF VARIOUS PROFESSIONS OF SOCIETY

Under her leadership and in consultation with Br Jagdish Chander, Didi Manmohini, Dadi Janki, Dadi Gulzar and other senior sisters and brothers, Dadi Prakashmaniji had very ably organized Godly Service through different wings based on professional backgrounds and social service set-up. As a result, there are now 18 Godly Service Wings that are beautifully organized and busy in spreading a very powerful message of attaining higher consciousness and stress-free management. These Wings hold many, many programmes of rendering service to the poor, rural folk and ailing society. Dadiji even inspired the set up of Global Hospital & Research Centre and created the Medical Service Wing for such services.

#### DADIJI'S ROLE AFTER THE INSTITUTION SHIFTED FROM SINDH TO ABU & HER ROLE IN ENHANCING SERVICE IN BHARAT AND ABROAD

In 1954, she was part of a delegation that represented the Brahma Kumaris at a World Peace Conference in Japan. They gave Godly message in Japan, Singapore, Hong Kong, Philippines, Indonesia for 6 months before returning to India. During her tenure as Administrative Head, she travelled to all parts of India as well as all over the world to initiate Godly service by opening new meditation centres, meet cooperative VIPs and IPs, and of course sustain the growing BK family.

Dadiji was responsible for starting Godly service at Delhi, Patna, Kolkata and later Mumbai (Bombay). From 1969 till 2007, Dadiji was based at the International Headquarters of the Brahma Kumaris in Abu, Rajasthan. Dadiji was a very powerful orator, convincing teacher and highly spiritual yogi whose words of wisdom and presence enabled VIPs and IPs to appreciate the depth and beauty of spiritual wisdom, and easy way of connecting with the Supreme Being.

She played a very leading role right from the beginning. Due to her courage, enthusiasm and wise ways of dealing with different aspects of administrative work, the founding father, Brahma Baba always called upon her to visit different centres or different places for rendering personal guidance. She spent nearly six years continuously in Mumbai, 1964-1969, where she created a very powerful team of senior sisters and brothers and other active instruments which organized seminars, conferences, exhibitions and fairs. Her leadership was looked up to for achieving the highest goals; she had become Brahma Baba's most trust-worthy leader amongst all the senior sisters and brothers in Godly service.

True to her words while answering a question from a journalist, "I don't have any followers; I have very able divine sisters and brothers who are spiritual teachers serving along with me."

Her popularity and greatness brought on all kinds of honours from the Universities, Mayors, and the United Nations: She was conferred the Doctorate Degree by Mohanlal Sukhadia University, Udaipur. During her years of being Administrative Head, the institution expanded by leaps and bounds from 125 centres in 1969 to about 8500 centres in 2007.

It was my personal fortune to have received her divine sisterly, loving care and inspiring guidance from October 1959 until she breathed her last in 2007. She was my inspiring guide, ever-caring elder sister, most confidential and trust-worthy friend and greatest companion in Godly service. Her power of judgement, her faith in the Divine, her discipline in Godly principles, her immaculately clean habits, her inspiring oratory, depth of understanding Godly versions and her power of persuasion are incomparable. Her winsome smile continues to inspire us till date.

### **Her Message was Her Life - BK Charlie, Australia**

It was very early on the morning of the 22 August 2007 that we heard that Dadiji was in a coma and unlikely to survive. I was in Sydney, a 14 hour flight and a 4 hour car ride away from Mt Abu but immediately I had the pull to go but it was not until I sat in meditation at 4am the next morning I finally decided to go. I packed, booked my ticket at 9am and flew at 11.30am the same morning.

I arrived in Shantivan the next morning 24th August and as soon as the car stopped we went to see Dadiji in her cottage. There was a very sweet silence in the atmosphere and Dadiji was so still, breathing slowly like the sleeping beauty. Dadi Gulzar and others were sitting quietly in the room. In Diamond Hall there was continuous yoga going on and it felt like to whole of Shantivan was immersed in this sweet silence.

The next morning it was the 25th August. Class had just finished and I saw Nirwair bhai who told me to visit Dadiji. She was breathing lightly and just seemed beyond but I noticed the machines beside her bed registering her blood pressure and other medical functions were fluctuating quite significantly. I went for breakfast and then returned to Dadiji's cottage where now thousands of brothers and sisters had congregated outside. All the senior brothers and sisters suddenly began to arrive and rush inside. We all know what was happening inside.

Eventually I also went inside into Dadiji's room. It was a scene that I will never forget. It is etched on my memory track. Around Dadiji's bed were her companions and friends of seventy years, Dadi Janki, Dadi Gulzar, Dadi Ratan Mohini, Dadi Manohar Indra, Mohiniben, Muniben, the senior brothers and more. I notice all the machines were now registering zero. Dadiji had flown. Everyone stood so quietly. The silence was stronger than ever. The feeling was one of such great reverence, of profound respect, and a purity of love that only Dadiji drew from all.

Over the next few days the tributes flowed from all corners of the world. From the BK family; from the Leaders of India; from Religious leaders; from the residents of Abu Rd and Mt Abu; from the workers and the ordinary village folk; from everyone. What was in Dadiji that drew such profound love and total respect from everyone? Each one had a personal story to share of how Dadiji made them feel special, how she included them, how she valued them, how she helped them, how she always showed respect. She touched hearts everywhere and won universal love and respect. At every moment her drishti of love and her radiant smile transformed the atmosphere and uplifted everyone. I remember Dadiji once shared how much she valued the blessings of the divine family and how she was careful not to lose the blessings of even one. She said the blessings of the hearts of others was like a power that helped her move forward. Once Baba said if you want to become full of all virtues become a Bestower of respect. This was Dadiji's life. She gave everyone unshakeable respect and received it from all.

In the early 1990's I was part of a small team making a film about the Dadis called Women of Spirit. In New York we interviewed Dr James Jonah who was Under Secretary General of the United Nations for Political affairs at the time. This meant that he interacted on behalf of the Secretary General, with many of the World's leaders during the Reagan and Gorbachov era. I asked him of all the leaders he had met who was the most impressive. Immediately he answered "Dadi Prakashmani". He said that Dadiji's leadership was not by cleverness and force but by the example of her own life. He said that this leadership wins the trust of all around and today we have lost trust in our leaders

because what they say and what they do are different. He went on to say that Dadiji's words were reflected in her actions and how this was the leadership that inspired people and what was needed in our world. Once Albert Sweitzer was asked about effective leadership and he said "Example is not the best form of leadership it is the only form of leadership". By observing Dadiji we could see what was the result of Baba's teachings and where our study was leading us.

After Dadiji's passing there were many bhog messages. In many of these messages Dadiji gave us two special gifts in the form of self respect and respect. When Brahma Baba passed away he summarised his efforts with the words incorporeal, viceless and egoless but it seemed these two gifts were Dadiji's message of what took her to the highest stage of a living angel. Her natural purity created such an easy self respect that was so attractive. A good leader creates self respect in himself or herself but a great leader creates self respect in others. Once a group of us were sitting and chatting with Dadiji asking her experience of managing such a huge yagya with so many different personalities. She told us first I listen then I teach. When others feel listened to they will listen to you. She then went on to say I give freedom to everyone I don't try and control anyone. She explained when you give freedom, others will come close naturally and they will want to listen to your ideas and opinions. If you try to control others you push them away and they will never listen to your ideas and opinions from the heart. She also said that I trust everyone. She consciously invested trust in everyone as that brought them close. Finally she said I give good wishes and pure feelings to all. The power of this pure attitude of Dadiji created unity in the entire Brahmin family. This attitude of respect for all brought everyone together and showed us an example of how to have divine and soul conscious relationships.

Dadiji's unshakeable self respect was the foundation of her humility. On her first visit to Sydney in 1977 we had a big public event at Sydney University. It was the first such event we had in Australia and so afterwards we returned to the centre a little tired. Dadiji noticed and proceeded to the kitchen to cook and serve us all soup with so much love. How many who are heads of big international institutions would serve in such a way. A sister from Mumbai was telling us her experience of Dadiji's humility. She came into gyan as a girl and attended the centre where Dadiji lived in Mumbai. Only a few years before Baba became avyakt a group from the centre took a train to Madhuban to meet Baba.

When they arrived at the station there was one less ticket to the number travelling, so it meant that one of them had to sit on a bag of grain between the seats. As she was the youngest she sat on the bag. In the middle of the night Dadiji woke up and saw this 17 year old girl sitting on the bag of grain. Seeing this Dadiji gave her bed to the young sister and sat up all night on the bag of grain remembering Baba. This was only a few years before Baba appointed her to be the head of the Institution.

Dadiji was so great yet so humble. Dadiji never felt she was the head of the institution. She had such a deep feeling that she was just an instrument and Baba is doing everything. Once I asked her if she would visit Australia and she answered "If Baba gives Dadiji permission she will come but if Baba does not give permission, Dadiji cannot come". She talked about herself in the third person like it was just a role, a part she was playing. She had no sense of position or importance that made her feel superior but she always had the feeling I am an instrument, I am a server. I think this egolessness was why Baba trusted her so much. She did not use the position to create her self respect like most leaders do today but her self respect made her a natural leader.

Dadiji was a living bouquet of virtues but I always loved her sense of humour. On my first visit to Madhuban in 1975 we were meeting Baba in the History Hall. All the personal meetings had finished and the Seniors were chatting with Baba. Dadiji then told me to speak to Baba in Hindi.

As I don't know Hindi she would speak a phrase and I would repeat it to Baba. She said in Hindi "Baba I love you" and I would repeat. Then "Baba, I looked for you for so long and now I have found you" and I would repeat. Then Dadiji said something which I again blindly repeated and everyone laughed and laughed including Baba. Dadiji said in Hindi "Baba, I am a monkey" and I looked in Baba's eyes and repeated it with so much love. It was all in good fun. Dadiji carried herself with so much dignity as a leader but in a second could become a playful child. Dadiji has moved on but her example lives so strongly in my heart.

Her life was her message.

## **The Smiles she left behind - By Uncle, Aunty and their family, Trinidad**

Dadi Prakashmani was like a diamond with many facets. Every smile left an indelible impact on the lives of those she touched. The radiance of her smile exuded the coolness of her character, and it drew others into the soothing comfort of care and compassion. The brilliance of her smile shone through the magnetic attraction of her eyes, revealing the many sides of love free from selfish attachments and beyond the reach of 'I' and 'mine.'

Dadi was a leader and a mother. She led with an open heart and an open mind. However her greatest genius was her smiles. Her smiles revealed the light of new understanding.

Dadi has been an integral part of our family ever since we first met her in 1976. Over the years, we have had the privilege to share many meaningful experiences with her. Below are some inspired moments and cherished smiles that make her immortal presence a living legend.

Her Everlasting Smile ...

**–Uncle Steve Naraine**

"I remember Dadi most for her faith in God. During the period when I served as the High Commissioner of Guyana to India Dadi would invite me to the coordinating committee dealing with international affairs meeting in Mt. Abu every year. At this meeting many different ideas were generated regarding world service and the direction that it should take. Dadi's presence was outstanding and her outlook was pleasant. Whenever a situation arose in the meetings where there was a disagreement and something was said out of the way, Dadi would respond with a wide smile. Without saying anything the smile reflected such love to the people involved that they would take courage and strength from her smile and correct themselves.

After days of discussions and final agreement decided on, and everyone thought that a firm plan was developed, Dadi would say: "let's hear what Baba has to say." She would ask Dadi Gulzar to go to Baba and get a response as to whether this is the path to pursue. Every time this happened I saw her as a true instrument of God and how important it was for her to pursue the direction of service according to the plan of God.

The remarkable thing was that the 100 or so people attending the meeting never questioned her and would wholeheartedly support her pursuit of getting the final decision from Baba. This, I feel has been the remarkable success of growth of the organization.

The smile that touched me the deepest, was at the end of her time with us when she was very ill and I visited her in Shantivan in her cottage. She looked deep into my soul and offered me a piece of toli (sweet) and then she gave me a wide smile and asked me to break off a piece of the same toli and feed her. Our eyes were locked in sweet drishti, and our smiles were broad and wide and time stood still. Such remarkable closeness can never be forgotten nor can it be described. It was as if we both realized that it was the last meeting in this present life and what she was leaving behind with me was her everlasting smile."

Her Loving Smile ...

**–Aunty Betty Naraine**

"It is difficult to describe how it actually happens. One look into her eyes and our hearts would open to receive the abundance of love that was flowing through her whole being. The love of her soul flowed through her eyes. And her eyes showed us the emergence of a golden dawn full of newness. We felt as if her heart was touching our hearts. It was something so magical – her soul actually smiled!

She took with her smiles, and she gave with her smiles. Her smile took all our mental and emotional burdens and burnt them with the fire of her love leaving us free and light. And her smile relaxed our minds and hearts with the assurance that everything was easy and the impossible would become the possible.

She was called the Chief Administrative Head, but her leadership skills were all from the heart. She led the organization with the power of love.”

Her Radiant Smile ...

**–Savi Naraine**

“Dadiji’s smile was one of a kind. It started from her eyes and moved slowly down to her cheeks making her face sparkle like a diamond. Her smile was like an energy that pulled you into her heart and gave the comfort of love, strength, and most of all, the experience of divinity. Her smile spoke volumes, and along with that special twinkle in her eyes, she pulled you not to herself but to her combined form of being with BaapDada. Her smile had the pride of a deity and the innocence of a child, a very rare combination indeed.

I cherish the beautiful moments spent with her and whenever I think of her I see her radiant smiling face, and twinkling eyes sneaking me with her into the intimacy of God’s world, a world of peace, beauty, and love.’

Her Angelic Smile ...

**–Sita Naraine**

“Her smile exuded the brightness of a million stars shining around an angel and yet you can experience the ‘landscape smiling in the sunlight.’

Her hug was like having the rainbow wrapped around you.

Her laughter had the ring of a child, but as her eyes closed, which was so peculiar in her case, I experienced her shutting out the physical world and enveloping me in the inner world of her heart and seating me on God’s heart throne.”

Her Playful Smile ...

**–Gayatri Naraine**

“The anticipation was high and it kept rising higher as the ticking of the clock counted down the moments to Dadi’s arrival. It was her first visit to Guyana, and she and her entourage were nearing the center from the airport. The street was lined with people waiting to welcome her. And the steel band players stood poised to play Indian music on Caribbean pans. I stood at the top of the stairs anxiously observing the excitement down below. My job was simple. I had to pull a string attached to a folded piece of cloth hanging from a canopy holding rose petals. The idea being that before Dadi entered the building of the center she would be showered with rose petals at the threshold.

She began to climb the stairs and with each step she took, my nervousness grew with the persistent thought: “would this string thing work?” I timed her well and as soon as she was standing at the threshold under the cloth, I pulled the string and waited. There were no rose petals. My nervousness took over and I kept pulling harder on the string. Still nothing happened. Dadi stood there quietly looking at me – at the horror and embarrassment on my face.

Then she smiled. And her smile started playing with me. She looked up at the cloth still holding the rose petals and then back at me, a couple of times and each time her smile was more playful with a tinge of amusement. Everyone started laughing and the tension evaporated. Her playfulness made an otherwise awkward moment into a very funny one.



Later that night, when most of the guests had left she took me by the hand and led me back to the spot at the top of the stairs. She took the string and gave it a jerk and out came the rose petals tumbling down on both of us. By this time we were all joyfully laughing.”

Dadi saw life as a seamless whole and the world as a manifestation of God’s family. As a spiritual leader every imprint of her life offered this highest realization as she led from the authority of her experiences and the recognition of the benefit of every scene of the drama. As a world mother her role as a spiritual leader offered the opportunity to love, to serve, and to give.

May this article ignite the precious moments you shared with our beloved Dadi Prakashmani.

### **Dadiji, I will never miss you - BK David Howard, Washington**

When brahmins meet each other for the first time the introductions inevitably get around to how long you have you been in Baba’s knowledge or “in Gyan” as we say. My introduction was so gradual and over such a long period of time that its difficult for me to pinpoint when I actually came into the knowledge. What I can say, though, is when the seed was planted. For me the seed was meeting Dadi Prakashmani.

That was in 1999. Sister Jenna, Baba’s main instrument in Washington DC, had called me up at my office. Dadi Prakashmani was coming to town and Sister wanted to arrange for the Mayor of Washington to meet with Dadiji. I was the Mayor’s scheduler at the time and had never heard of the Brahma Kumaris or Dadi Prakashmani. When we were not able to set up a meeting with the Mayor, Sister asked if I could help arrange a proclamation for Dadi. We were able to arrange the proclamation but then Sister Jenna, always Baba’s determined instrument, asked if I could arrange for someone to come and present it. Unfortunately, the Mayor was not available and neither was the Deputy Mayor, nor the Secretary, nor even the Director of Religious Affairs. Exhausting those possibilities, Sister asked if I would come present the proclamation. I explained to her that I was the scheduler and not an official who would present proclamations. But Sister Jenna must have known something that I didn’t and insisted that I should come and present the proclamation on behalf of the Mayor.

So on June 10th, 1999 at the National Press Club, it was my fortune to present to Dadiji a proclamation from the Mayor proclaiming June 10<sup>th</sup> Dadi Prakashmani Day in Washington DC. Although I did not realize it then, looking back on that day I can see that it was the beginning of a great journey. In the years that followed Sister Jenna would invite me to various programs, especially on Dadi Prakashmani Day. On June 10th, 2000 the “Om Shanti - I Am Peace Tree” was planted in Dadiji’s honor on the grounds of the U.S. Capitol. Another year, embassies were asked to share the values that were most important to their country. These values - like love, humility, freedom and peace - were illustrated on banners with artwork from the International Child Art Foundation and hung along key thoroughfares for “Envision a City of Values”. The following year “Remember Me” banners with the image of Shvababa’s light raised awareness of a higher level of consciousness.

By 2006 I had become a regular Murli student and had been to Madubhan to meet Baba and briefly met Dadiji again. By then Dadi had inspired many service projects in Washington but in 2007 she was not well and Baba’s Washington family wanted to do something truly special. The idea that came was simple but powerful. Blessings of good wishes for the world would be collected from around the globe and hung on the “Om Shanti Peace Tree” as a “Tree of Blessings”. In just a few weeks, hundreds of beautiful blessings were sent in. Many souls, knowing the state of Dadi’s health sent in personal messages of love and good wishes for her which were also hung on the tree.

Earlier that year we had obtained a permit to hold a big event on the National Mall - the large park that stretches between the U.S. Capitol and the Lincoln Memorial in the center of Washington. We had the permit for the event but we had yet to finalize what we were going to do. The Tree of Blessings turned out to be such a special initiative that we decided to continue it. In the following months we collected more blessings and invited souls to come to the event on the Mall later that summer to be video-taped reading their blessings in front of the U.S. Capitol.

The date we were given for the event was not the best time for an outdoor program in Washington. It was at the end of August when the city is very hot and humid and most of the tourists have gone home. But permits for events on the National Mall are very hard to come by so we took the date they gave us. Little did we know at that time how significant the date would turn out to be. On August 25th, 2007 as we were setting up for the event in Washington that Dadiji inspired we learned that she had left the body earlier that morning.

Hundreds of blessings were collected that day. Throughout the day, all of us there on the Mall felt Dadi with us. Collecting blessings, we felt light and joyful as Dadi would have been.

In the years since that day Dadi has continued to inspire service projects in Washington. On subsequent June 10ths there have been "Kites for Peace" and "Dancing for Peace". This year, being the 10th anniversary of service projects on Dadi Prakashmani Day, we brought all the different initiatives together under one big tent for the "Good Vibes Peace Festival". The festival was held outside Baba's new Meditation Museum - very different from the little basement that was Baba's center when Dadi visited in 1999. The festival was a great success as is everything that Dadiji has inspired.

For me, though, the Tree of Blessings is still the project that makes me feel closest to Dadiji. Dadi always did everything that Baba said to do and through this she was an instrument to accomplish amazing things for Baba. But when people speak about Dadiji they don't seem to talk as much about what she accomplished - they talk about how she was. They talk about how loving she was and light. Most of all they talk about how she always had good wishes and pure feelings for everyone. To me that is her greatest legacy. From the seed of good wishes and pure feelings grows a great tree whose seeds will keep giving blessings even when that tree is gone - just like Dadiji.

I know I will never miss you, Dadi, because I know your blessings will always be with us – continuing to give good wishes and pure feelings like they always have and like they always will.

### **Why I Loved Dadi Prakashmani - BK Neville Hodgkinson, Oxford, England**

Millions of people across the globe have benefited from the spiritual energy brought to them from India by the Brahma Kumaris. I am one of thousands of foreigners who have so loved the teachings, the teachers and the lifestyle taught by the organization headed by Dadi Prakashmani for nearly 40 years that I am proud to call myself a BK.

What attracted me, when I became a regular student with the spiritual university in 1981? At the time I was halfway through a 30-year career as a medical and science correspondent with UK national newspapers. I enjoyed my work but there was an ego-driven element in my approach to it which, overtime, led to my feeling quite drained. An addiction to success made it hard for me to set reasonable limits to my efforts, and my relationships were suffering. A materialistic outlook, with lack of appreciation for the spiritual dimension, compounded my plight. There was also distaste for what seemed to me to be the superstitions, empty rituals and divisiveness of mainstream religious practice.

On meeting BK sisters who had come to share the teachings in London, I felt immediately and deeply that here was an energy of truth. The sound came in my head that there could be no greater service to humanity than to be like these people, to acquire for oneself the positive values they radiated. Gradually I learned that the energy came from practicing spiritual wisdom: ideas about the self, God and time that enable one to maintain peace even in difficult circumstances. This peace gives rise to a natural, spiritual love that makes no conditions. It does not ask for anything in return, and does not seek to bind. It just gives.

Dadi Prakashmani was the embodiment of these qualities. She loved freely and openly all who came in front of her, without a trace of attachment. She did not discriminate between us on any superficial grounds such as social status or wealth. If through ego or lack of self-respect you held yourself back, it would be as if she respected that reticence and the love would not flow so freely. If you were open to it, however, the love that came from Dadiji's eyes would fill the soul, healing us and making us whole.

Dadi would not encourage the slightest dependency. Always whole in herself, she needed nothing from us. She would say that what she shared came from Shiva, the incorporeal source of truth.

She showed the same humility with regard to her administrative skill, which saw the organization grow from little more than a sapling in 1969, when she became chief, to a global family with hundreds of thousands of regular students. There are now centers in about 120 countries, partly thanks to an open invitation from Dadiji to the foreigners to visit the Mt.Abu headquarters and the warmth of her welcome for all who came. Even while doing everything, she said she was doing nothing – that it was just Baba, Baba, Baba, who was responsible. She would insist that her only job was to remember God, so that the divine could use her as an instrument for whatever needed to be done.

This humility was deep-seated and not at all for show. Once, sitting on the floor at a retreat in a German forest, my splayed-out leg caused Dadi to trip. Instead of chiding me, her instant response was to ask if I was OK. On another occasion, I was with a group waiting with Dadiji for road transport from an event in southern India. I was fretting about the delay, fearing that we would miss our flight. Dadiji commented: “Neville has attachment for Madhuban!” She made her point, to tell me not to waste time worrying, but in such a sweet way.

Dadiji was light, and humorous. Visitors from abroad would always be invited to receive from her a “Madhuban gift”, which they could choose from a selection brought into one of the halls. She would hold up each one in turn to demonstrate its quality. A friend whispered to me that when she came to the cotton quilt, she would close her eyes with a smile and lay her head on it, as though going to sleep. That was exactly what happened. It was a game, often repeated, to convey love and sweetness.

Another favourite memory is of a time when Dadiji sat for half an hour beside me, as I described scientific developments relevant to cyclical time, a key concept in Brahma Kumaris teaching. She listened attentively, nodding and turning her eyes to mind from time to time. When I had finished, she commented that these were useful ideas and that I should research them more, and write about my findings. I do not know what she really thought of them, through the translation, but her concern was always to be positive and encouraging.

I was lucky enough to reach Mt.Abu the day she left her body. I did not feel my sadness at her departure, just an immense appreciation for her rich life and for all that I had received through her leadership and example. In the weeks that followed her passing, it felt as if she was subtly present all over the world in an angelic form, reminding us of the goal of Raja Yoga – to live in light; and, as much as we are able, to become as she was, a jewel of light.

#### **Dadiji was very positive & was always open to new ideas - Dr BK Nirmala, Australia**

I came to know Dadiji in 1964 when she was appointed as co-ordinator of Mumbai branch. She was a kumari but had many motherly qualities; she was very loving, caring and sacrificing. She was also very humble and had great interest in all yagya activities. Dadiji used to visit different centers, countries and of course, Madhuban, the headquarters.

In the Brahma Kumaris, a leader does not just take responsibility for spiritual aspects but is also involved in administration and managing household activities such as buying grains, fruits and vegetables, and general stock, the maintenance of buildings and gardens, Dadiji always knew what was in stock. She also knew a lot about construction. She kept tabs on the price of a square feet of land, how much it cost to make different types of tolis. Following in Brahma Baba’s footsteps, she used to visit the kitchen and construction sites every day.

Brahma Baba was a unique teacher and trainer. He trained many senior teachers and trainers such as Jagdish Bhaiji, Ramesh Bhaiji, Nirwair Bhaiji and Brij Mohan Bhaiji. All the dadis had in-house training for 14 years on the subjects of knowledge, yoga and dharna. It was Brahma Baba who established the administration model and Dadiji who followed it.

She had numerous administration specialities. Perhaps, the most prominent of these were:

- a) She was readily available to listen to suggestions and complaints.
- b) She would create plans with the other 2 administrative heads and senior brothers. She would then present those ideas in front of the full gathering of staff before implementing them.
- c) She regularly visited each department and held meetings with them.
- d) She was action orientated and plans were implemented immediately.
- e) Like a mother, she would take the staff for picnics, to play games and on tours of nearby cities.
- f) Because of her friendly and loving nature, whenever she would make a request or ask for something to be done, everyone would do it immediately, even if they had to sacrifice rest, food or comfort.

Dadiji shared the responsibility of looking after various departments with individuals. She personally trained those individuals, trusted them and gave them the authority to co-ordinate departments.

Dadiji was very positive in every aspect. She was always open to new ideas. She would suggest experimenting with new ideas on a small scale to see how they worked before implementing them. In this way, all BKs felt listened to and inspired. Her sanskara of inclusiveness gave everyone a sense of belonging.

She was not only a good administrator, she gave good lectures and had a charismatic personality. Her inspirational tours to various cities and overseas helped local teachers promote the teachings of the BKs and VIPs came closer to the BKs.

In India, one senior sister was appointed in each zone as zone-in-charge to oversee activities in the various zones. Dadis with over 30 years of experience were sent to Calcutta, Delhi, Kanpur, Bangalore, Chennai, Indore, Bhopal, Amritsar, Mumbai, etc. Through exhibitions lectures and seminars service expanded a great deal during the 60's and 70's.

Dadiji loved to meet people. She would sit in the courtyard every day and answer even the smallest questions. Many sought her guidance in all aspects of life.

After Brahma Baba became avyakt in January 1969, Didi Manmohini and Dadiji started training of kumaris to empower and inspire them. At that time many kumaris surrendered which, in turn, helped service expand.

One of Dadiji's specialities was her balance of love and law. Once two brothers had a conflict and one hit the other in the meditation room. The way Dadiji dealt with the situation was to call senior Madhuban Niwasis and ask them if the brother who hit the other should be sent to his home. Only when everyone agreed, was he sent home. Dadiji would sometimes correct someone but afterwards would not carry on thinking about it but would maintain pure vision.

When I first traveled overseas, Dadiji gave a grand farewell. On my return, they gave a grand welcome. When I first went to New Zealand, I stayed in the homes of various contact souls. Living in such an environment was challenging. When I wrote my experience to Dadiji, she replied saying, "You are like a lioness who moves around alone whereas elephants move in herds." This letter of praise and encouragement helped me to stay overseas and establish new centers despite the challenges of unfamiliar environment and culture.

### **Dadiji was truly a great spiritual leader - BK Brijmohan, New Delhi**

I always felt very close to Dadiji, I think everyone felt that way with her. Dadi Prakashmaniji made each person of this divine family feel as if he or she was the most valuable, worthy soul; she could give everyone the feeling that they

were very special. Everyone was special in her eyes and that is why she never gave special gifts or toil (prasad) exclusively to anyone.

She never found fault with anyone but always encouraged and appreciated the specialities of others. Whenever people visited Madhuban (Mt. Abu) she took great care that they are satisfied and staying comfortably. She personally saw to it that everyone had good physical and spiritual sustenance. She played a perfect role as the head of the spiritual family.

Dadiji was completely egoless. As the chief of such a large spiritual organization she exercised her authority with great humility. She always reminded others that it was Baba's (God's) work and He was getting everything done. She crossed all challenges with complete faith and surrender to Baba.

She was a charismatic spiritual ambassador. She traveled worldwide and met numerous heads of state and leaders from different walks of life with whom she shared the message of peace. Her spiritual charm gave them all in instant feeling of spiritual bonding and pure love. She was truly a great spiritual leader. ☒

### **Dadiji a woman fearlessly lived the life of Truth - BK Mohini, New York**

One of the most beautiful praises of God is that He is Satyam, Shivam, Sundaram. It means He is Truth, the Benefactor, and the most beautiful.

These three qualities and the experience of these qualities keeps coming in my heart when I think of Dadi Prakashmani. Dadiji one time stood up in a very big gathering and said "I can say that I have never spoken a single lie in life". The audience was spell bound but the way it was spoken everyone in the audience acknowledged this truth with grace.

During various situation in life there is always the possibility of adulterating the truth with some excuses and reasons. Here this woman fearlessly lived the life of Truth: Truth in thoughts, words, actions and all relationships. It definitely left a big impact on the lives of many of us.

Her pure unconditional love always made her the image of one who will always bring benefit in people's lives. She was benevolent leader. Her heart was generous and full of compassion. It was very simple for her to forgive. She always had a very pure vision towards everyone. She always created friendship. She was good friend even to the elements.

Beauty was radiant in her personality. Her eyes always were sparkling with love and beauty. She would make everyone feel beautiful. Her natural quality of giving respect to everyone was coming from her own self respect. Dadiji was natural.

From these three qualities she served every moment of her life. Life and service were very much integrated. This also made her image of simplicity and solutions. We would often walk in her room with some questions and problems. She will simplify everything and make us find practical solutions.

She was very creative, full of pure energy and ever-ready for unlimited action plans. She was able to manage the vastness of a task with great confidence and ease.

She was a leader who always reminded us that for creating peace, you need to be peaceful. Different leaders from all walks of life like politicians, religious leaders, etc. were very inspired and bowed in front of her with respect. She was loving but detached. She was firm but also very flexible. A leader who guided through her life as an example.

Thinking of Dadiji' creates a flow of beautiful energy in me. My salutations to Dadiji.

### **Dadiji was a motherly figure - Shantaram Potdukhe, Chandrapur**

It is more than couple of years that Dadi Prakashmani is no more with us. I remember the day I met Dadiji around 18 years back when she came to Mumbai where she was felicitated for her services internationally in the programme of Priyadarshini Academy. She was invited to address a gathering composed of invitees, Guests from all walks of life. It was my proud privilege to address the same gathering along with Dadiji. I was extremely impressed by her speech and the message of purity she gave.

I had visited Brahmakumaris Head Quarter at Mount Abu many times. The first time I visited Brahmakumaris Ashram in Mount Abu was in the 80s when I became Member of Parliament from Chandrapur during 7<sup>th</sup> Lok Sabha. Out of curiosity I had gone to Mount Abu and visited the Ashram. It was in the form of development. Present outstanding structure was not there. The multi fold activities being carried out at present was just a beginning. I had a chance to meet Dadiji once more in Mount Abu in this decade. I was extremely impressed to see and talk to her and I told here that I had the opportunity to address the gathering along with her in Mumbai. I cherished these moments in my heart.

Dadiji was a motherly figure dedicated to the cause of Brahmakumaris and will be ever remembered by those who are associated with the activities of Brahmakumaris. I still remember that she had given me fruits while departing the Brahmakumaris Head Quarter at Mount Abu. I remembered all these events when her death was condoled at Chandrapur Ashram of Brahmakumaris.

The message she had given to all those who are connected with Brahmakumaris movement will be remembered by everyone. I specially remember the necessity with which everyone and each of the Ashramite pursuing the movement of Purity by the organisation is admired by those who come in their contact. I am greatly impressed by the management when I saw day to day working with a sense of belonging and the zeal with which they work is admirable. The management skill is being admired by those who visit the Brahmakumaris Head Quarter at Mount Abu and it is a big lesson for those who pursue career in Management.

Dadiji had tremendous influence on associates. She is remembered as a person who gave message of peace in human relationship internationally.